Chap - 4

चतुर्थ अध्याय

प्रमुख साहित्य कृतियों का सम्पादन

चतुर्थ अध्याय

प्रमुख साहित्य कृतियों का सम्पादन

कविरत्न गोविन्द गिल्लाभाई ने अपने समय के प्रतिनिधि कवियों की कृतियों का तथा अपने पूर्ववर्ती कवियों की कृतियों का पुनःलेखन, उनकी व्यवस्थित पांडुलिपियाँ बनाकर सम्पादन तथा संकलन किया, वह स्वयं एक स्थापित आचार्य कवि थे तथा अनेक सुन्दर कृतियों की रचनाएं उन्होंने की थीं । उनकी स्वयं की प्राप्त रचनाएं इस प्रकार हैं :

विष्णु विनय पच्चीसी

विवेक विलास

शिख नख चन्द्रिका

परब्रह्म पचीसी

लच्छन बत्तीसी

राधारूप मंजरी

भूषण मंजरी

श्रंगार षोडशी

पयोधर पच्चीसी

नैन मंजरी

छवि सरोजनी

प्रबोध पच्चीसी

वक्रोक्ति विनोद

गोविन्द ज्ञान बावनी

पावस पयोनिधि

श्रंगार सरोजिनी

षट ऋतु वर्णन

प्रारब्ध पचासा

श्लेष चन्द्रिका

रत्नावली रहस्य

बोध बत्तीसी

शब्द विभूषण

भक्ति कल्पद्रुम

अन्योक्ति अरबिन्द

अलंकार अंबुधि

प्रवीण सागर की बारह लहरें

समस्यापूर्ति प्रदीप

साहित्य चिन्तामणि भाग प्रथम किंवा नीतिविनोद संग्रह

गोविन्द हजारा संग्रह

प्रेम प्रभाकर संग्रह

साहित्य रत्नाकर संग्रह

अन्यान्य कवियों की काव्य रचनाओं को एकत्र करके उन्होंने अनेक काव्य संग्रह संपादित किए थे, उन्हीं की सूचना के अनुसार उसके द्वारा सम्पादित काव्य संग्रह इस प्रकार हैं :

1. हिन्दी भाषा के फुटकर कवित्त संग्रह
2. ब्रजभाषा के कवित्त संग्रह
3. गोविन्द हजारा
4. साहित्य चिन्तामणि
5. प्रेम प्रभाकर
6. कवि और कविता (प्रथम भाग)
7. कवि और कविता (द्वितीय भाग)
8. गुनमाला विवरण

9. वज्रशूचिकोपनिषद विवरण

10. जसराज बावनी विवरण

11. भ्रांति भंजनी विवरण

12. छुटक काव्य संग्रह विवरण

13. हर्षजी मेहता कृत काव्य संग्रह विवरण

14. वाकुरंभ विवरण

इन सभी संग्रह काव्य ग्रन्थों में संग्रहकर्ता स्वयं गोविन्दगिल्लाभाई थे ।

उनके द्वारा अनेक संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद भी तैयार किया गया, उनके अनूदित ग्रंथ इस प्रकार हैं :

1. अमर कोश
2. अभियान चिन्तामणि नाममाला कोश
3. हेम शेष कोश
4. काव्यप्रकाश प्रथम उल्लास
5. साहित्य दर्पण (प्रथम तीन परिच्छेद) आदि

इस प्रकार के ग्रंथों की चर्चा अन्यत्र की जा चुकी है, कवि गोविन्द गिल्लाभाई ने हिन्दी के कुछ प्राचीन कवियों की कृतियाँ की टीकाएं की जो निम्नांकित हैं -

प्रबोध पच्चीसी की टीका

वक्रोक्ति विनोद की टीका

श्लेष, चन्द्रिका की टीका

प्रवीण सागर की गोविंद सुबोधिनी टीका

किशन बावली की टीका

शिवराज शतक की टीका

शिवराज भूषण की टीका

रसराज की टीका

गोविन्द गिल्लाभाई ने इनके अतिरिक्त निम्नलिखित कोषग्रन्थ भी तैयार किए थे, यथा -

एकाक्षरी कोश

अनेकार्थ कोश

इस रत्नाकर

अनेकाक्षरी कोश

गोविन्दार्णव कोश

अंक अभियान मंजरी

सम्पादित ग्रंथ

गोविन्द गिल्लाभाई ने अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया था, उन्होंने समय-समय पर अपने प्रकाशित ग्रंथों में अपने सम्पादित ग्रंथों को विज्ञापित किया था - यथा (उन्हीं के शब्दों में) :

प्रथम विज्ञप्ति[1]

जाहिरात

गोविन्द ग्रंथ माला प्रथम भाग

वामें विष्णु विनय पचीसी - 1, परब्रह्म पचीसी - 2, विवेक विलास - 3, लक्षण बत्तीसी - 4, शिखनस चन्द्रिका - 5, राधा रूप मंजरी - 6, भूषण मंजरी - 7, शृंगार षोडशी - 8, राधामुख षोडशी - 9, पयोधर पचीसी - 10, नैन मंजरी - 11, छवि सरोजिनी - 12, प्रेम पचीसी - 13, प्रबोध पचीसी - 14, हिन्दी कोश - 15, यह ग्रंथ हैं।

गोविन्द ग्रंथ माला

वामें शृंगार सरोजिनी नायक भेद - 1, वक्रोक्ति विनोद सटीक - 2, श्लेष चन्द्रिका सटीक - 3, रत्नावली रहस्य सटीक - 4, समस्यापूर्ति प्रदीप - 5, पावस पयोनिधि - 6 षटरितु वर्णन - 7, प्रारब्ध पचासी - 8, गोविन्द ज्ञान बावली - 9, प्रवीण सागर की बारह लहरें - 10, आदिक 10 ग्रन्थ हैं।

ग्रन्थ रत्नमाला प्रथम भाग

वामें नेहनिदान - 1, नेहनिर्वाह - 2, नवलनेह - 3, तिलक शतक - 4, शृंगार तिलक - 5, मान पचीसी - 6, रसिंक पचीसी - 7, गोपी पचीसी - 8, कुब्जा पचीसी - 9, प्रताप पचीसी - 10, घूस बत्तीसी - 11, वंशी बीसा - 12, हस्तामलक भाषा - 13, सुदामा चरित्र - 14, यह आदिक अनेक प्राचीन कवियों के बनाए हुए ग्रन्थों का संग्रह है।

द्वितीय विज्ञप्ति[2]

जाहिरात

नींचे लिखे हुए ग्रंथ हमारे पास मिलेंगे। जिन महाशय को लेना होय वह हम पर पत्र

लिखकें मंगाय सकते हैं -

ग्रन्थनाम

गोविन्द ग्रंथ माला

उनके प्रथम भाग में विष्णु विनय पचीसी - 1, परब्रह्म पचीसी - 2, विवेक विलासइ लक्षन बत्तीसी - 4, शिखनख चन्द्रिका - 5, राधारूप मंजरी - 6, भूषण मंजरी - 7, शृंगार षोडशी - 8, राधामुख षोडशी - 9, पयोधर पचीसी - 10, नैन मंजरी - 11, छवि सरोजिनी - 12, प्रेम पचीसी - 13 और प्रबोध पचीसी - 14 यह चौदह ग्रंथ हैं। इनके साथ निमांकित ग्रंथों को भी विज्ञापित किया गया था :-

गोविन्द ग्रन्थमाला (दूसरा भाग)

साहित्य चिन्तामणि प्रथम प्रकरण नीति विनोद

साहित्य चिन्तामणि दूसरा प्रकरण

अमृतधारा वेदांत भगवानदास निरंजनी कृत

प्रवीण सागर गुजराती टीका सहित

प्रवीण सागर मूल ब्रजभाषा में

शिवराज शतक शिवराज बावनी सहित

रसराज मतिराम कृत

किशन बावनी गुजराती अर्थ सहित

अपनी स्मरण पोथी में[3]

उन्होंने अपने सम्पादन तथा प्रकाशन की एक योजना बनाई थी, किंतु वह क्रियान्वित नहीं कर सके, वे ग्रंथ इस प्रकार हैं -

विश्व दर्पण

कुधारा पर सुधारा की चढ़ाई

व्यभिचार निषेध बावनी

विवेक विलास

अमृत धारा भगवानदास निरंजनी कृत

गोविन्द ग्रन्थ माला प्रथम भाग

प्रवीण सागर - महेरावनसिंह कृत

किशनवबावनी किसन कवि कृत

शिवराज शतक - भूषण कृत

ढोला मारु नी वार्ता

उपर्युक्त ग्रन्थ सूची में अंतिम रचना ढोला मारु नी वार्ता कराची से प्रकाशित 'वाक्य सौन्दर्य' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी, शेष सभी स्वतंत्र रूप से प्रकाशित हैं ।

डॉ. माणिकलाल चतुर्वेदी ने गोविन्द गिल्लाभाई की रचनाओं को तीन श्रेणी में विभाजित किया है ।[4]

1. वे रचनाएं जो उल्लिखित हैं तथा प्राप्त भी हैं ।
2. वे रचनाएं जो उल्लिखित तो हैं तथा प्राप्त नहीं हैं । तथा
3. वे रचनाएं जो प्राप्त तो हैं किन्तु उल्लिखित नहीं हैं ।

वे रचनाएं जो प्रथम श्रेणी में गण्य हैं उनके विषय में तो कोई विवाद ही नहीं है । वे उल्लिखित भी हैं तथा प्राप्त भी हैं । दूसरी कोटि की रचनाएं जिनका उल्लेख तो मिलता है किन्तु जो प्राप्त नहीं है, इस प्रकार है -

1. प्रेम प्रभाकर (संग्रह)
2. साहित्य रत्नाकर (संग्रह)
3. विश्व दर्पण (गुजराती में)
4. कुधारा पर सुधारा नी चढ़ाई (गुजराती में)
5. छिनाल बावनी
6. अभिधान चिन्तामणि नाममाला हेकोश अनुवाद
8. हेम शेष कोश
9. साहित्य दर्पण प्रथम तीन परिच्छेद (अनूदित)
10. रसतरंगिनी (भानुदत्त कृत)-(अनूदित)
11. शृंगार रत्नाकर ताराचरम तर्क रत्न कृत (अनूदित)
12. रस मीमांसा गंगाराम कृत (अनूदित)
13. वक्रोक्ति पंचासिका-कवि रत्नाकर कृत (अनूदित)
14. वज्र शूचिकोपनिषद शंकराचार्य कृत (अनूदित)

15. वात्सायन कामसूत्र की अनुक्रमणिका (अनूदित)
16. किशन बावनी टीका सहित
17. रसराज टीका सहित
18. एकाक्षरी कोश
19. अनेकार्थ कोश
20. रस रत्नाकर
21. अनेकाक्षरी कोश
22. गोविन्दार्णव कोश
23. अंक अभिधान मंजरी
24. अमृत धारा
25. हमीर हठावलोकन
26. साहित्य समालोचना (गोविन्द ग्रन्थ माल भाग-1 की)[5]

तृतीय कोटि के ग्रंथों का उल्लेख स्वयं कवि गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने ग्रंथों में किया है, इसलिए इनकी प्रामाणिकता के विषय में संदेह नहीं किया जा सकता ।

सम्पादित ग्रन्थ

ब्रजभाषा साहित्य में मध्यकालीन काव्य परम्परा में कुछ आचार्य कवियों ने तथा रसिक साहित्य प्रेमियों ने अपनी रुचि के अनुरूप तथा अन्यान्य काव्यप्रेमियों के पठनार्थ कुछ ऐसे संग्रह ग्रन्थ सम्पादित किए जिनमें विषयानुकूल अनेक कवियों के छन्द संग्रहीत किए गए थे । इन्हें संग्रह ग्रंथ के नाम से ही जाना जाता है । इनमें हजारा, ऋतुवर्णन, नायिकाभेद, काव्यांग सुषमा आदि नाम से भी ग्रन्थ सम्पादित किए गए हैं । यह संग्रह करने की परम्परा बहुत प्राचीन है । संस्कृत में सुभाषितानि नाम से अनेक संग्रह देखे जो सकते हैं । भारतीय साहित्य का आदि ग्रंथ ऋगवेद संहिता भी इसी प्रकार का संग्रहीत सम्पादन है । संस्कृत के आचार्यो ने मुक्तक काव्य के विवेचन के प्रसंग में इसी प्रकार के संग्रह ग्रन्थों की चर्चा की है ।[6]

हिन्दी में कालिदास हजारा, हफीजुल्ला खां हजारा आदि संग्रह ग्रंथ प्रसिद्ध हैं । मध्यकालीन काव्य-सुषमा, ऋतु सौन्दर्य जैसे भी संग्रह ग्रंथ देखे जा सकते हैं । गोविंद गिल्लाभाई अपनी पूर्ववर्ती इस वरिष्ठ काव्य संग्रही कृति से परिचित थे । उन्होंने हिन्दी के अनेकानेक संग्रह ग्रंथों की सूची दी है जो उनकी डायरी में दिए गए हैं ।[7]

गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा प्रदत्त सूची इस प्रकार है -

'कवि-चरित्र' के लिए जिन ग्रंथों में अनेक कवियों की कविता है उन संग्रह ग्रंथों के नाम नीचे लिखे हैं -

नंबर	ग्रंथ नाम	कवि संख्या/छपा या लिखा	संग्रहकर्ता का नाम
1	साहित्य सिंधु	91 - लिखा हुआ	बेनी दास
2	शृंगार सिंधु	50 - लिखा हुआ	भगवानदास
3	कवित्त रत्नमालिका	99 - लिखा हुआ	रसरासि रामनारायण
4	गोविन्दानन्द घन	87 - लिखा हुआ	रसिक गोविन्द
5	अलंकार आशय	66 - लिखा हुआ	उत्तमचन्द जोधपुर
6	कविदर्पण	26 - लिखा हुआ	ग्वाल
7	नखशिख	41 - लिखा हुआ	अज्ञात
8	कवि वल्लभ	13 - लिखा हुआ	हरिचरनदास
9	सरस रस	17 - लिखा हुआ	लाल कवि
10	अलंकार रत्नाकर	63 - लिखा हुआ	दलपत वंशीधर
11	अनुमत भूषण	24 - लिखा हुआ	सरदार, बनारस
12	हिन्दी भाषा के फुटकर कवित्त संग्रह	159 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
13	ब्रजभाषा के फुटकर कवित्त संग्रह	120 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
14	गोविन्द हजारा	141 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
15	साहित्य चिन्तामणि	225 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
16	प्रेमप्रभाकर	66 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
17	कवि और कविता प्रथम भाग	415 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
18	कवि और कविता द्वितीय भाग	200 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
19	गुनमाला के पुस्तक में	40 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
20	वज्रश्चकोपनिषद बारे पुस्तक में	65 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
21	जसराज बावनी बारे पुस्तक में	40 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
22	छूटक काव्य संग्रह बारे पुस्तक में	83 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
23	हर्षजीमहेता कृत काव्य संग्रह बारे में	40- लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
24	शुकरंका बारे पुस्तक में	15 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई

नंबर	ग्रंथ नाम	कवि संख्या/छपा या लिखा	संग्रहकर्ता का नाम
25	कविनामावली सिहोर	2317 - लिखा हुआ	गोविन्द गिल्लाभाई
26	कविनामावली जोधपुर	160 - लिखा हुआ	मुंशी देवी प्रसाद
27	सिंगार संग्रह	125 - छपा हुआ	सरदार कवि
28	श्रृंगार सुधाकर कवित्त	187 - छपा हुआ	मन्नालाल द्विज कवि
29	सुन्दरी सर्वस्व सवैया	108 - छपा हुआ	मन्नालाल द्विज कवि
30	श्रंगार सरोज दोहा	108 - छपा हुआ	मन्नालाल द्विज कवि
31	सुधासार वृन्दावन	108 - छपा हुआ	नवीन कवि
32	सुन्दरी तिलक	70 - छपा हुआ	हरिश्चन्द्र द्वारा मन्नालाल
33	रसकुसुमाकर	90 - छपा हुआ	प्रतापसिंह अयोध्या
34	हफीजुल्ला खां हजारा	261 - छपा हुआ	हफीजुल्ला खा.
35	नखशिख हजारा	160 - छपा हुआ	प्रभानन्द सुहाने
36	षट्ऋतु हजारा	222 - छपा हुआ	प्रभानन्द सुहाने
37	राजरसनामृत	160 - छपा हुआ	देवीप्रसाद कलकत्ता
38	कवि रत्नमाला (प्र.भाग)	160 - छपा हुआ	देवीप्रसाद कलकत्ता
39	मनोज मंजरी (प्र. भाग)	51 - छपा हुआ	नकछेदी तिवारी
40	मनोज मंजरी (द्वि.भाग)	98 - छपा हुआ	भारतजीवनप्रेसकाशी (तिवारी)
41	मनोज मंजरी (तृ. भाग)	71 - छपा हुआ	भारतजीवनप्रेसकाशी (तिवारी)
42	मनोज मंजरी (च.भाग)	57 - छपा हुआ	भारतजीवनप्रेसकाशी (तिवारी)
43	विज्ञान मार्तण्ड	34 - छपा हुआ	भारतजीवनप्रेसकाशी (तिवारी)
44	वीरोल्लास	54 - छपा हुआ	भारतजीवनप्रेसकाशी (तिवारी)
45	भडौसा संग्रह (पं. खण्ड)	68 - छपा हुआ	भारतजीवनप्रेसकाशी (तिवारी)
46	भडौसा संग्रह (द्वि. खण्ड)	67 - छपा हुआ	भारतजीवनप्रेसकाशी (तिवारी)
47	भड़ौसा संग्रह (तृ. खण्ड)	24 - छपा हुआ	भारतजीवनप्रेसकाशी (तिवारी)
48	भड़ौसा संग्रह (च. खण्ड)	61 - छपा हुआ	भारतजीवनप्रेसकाशी (तिवारी)
49	श्रृंगार चन्द्रिका	41 - छपा हुआ	भारतजीवनप्रेसकाशी (तिवारी)
50	भक्तमाला टीका	152 - छपा हुआ	नवलकिशोर प्रेस प्रियादास
51	कविवचन सुधा	8 - छपा हुआ	हरिश्चन्द्र

नंबर	ग्रंथ नाम	कवि संख्या/छपा या लिखा	संग्रहकर्ता का नाम
52	पावस भूषण	50 - छपा हुआ	(आगरा) घनश्याम
53	पावस संग्रह	10 - में छपा हुआ	(काशी) हरिश्चन्द्र
54	पावस प्रमोद	50 - मथुरा छपा	जनकचन्द
55	मनोरंजन संग्रह	102 - कानपुर छपा	गौरीशंकर
56	माधव विलास	65 - लखनऊ छपा	माधव प्रसाद
57	काव्य कला हरिश्चन्द्र	51 - पटना छपा	साहब प्रसाद
58	काव्य शिरोमणि	55 - आगरा छपा	कुन्दनलाल
59	रसिक मंजरी	55 - आगरा छपा	कुन्दनलाल
60	काव्य संग्रह पचांग	22 - काशी छपा	गंगा सुत
61	काव्य संग्रह	90 - बम्बई छपा	गोवर्द्धन
62	काव्य रत्नाकर	56 - बम्बई छपा	बनवारी लाल
63	शिशिर सुषमा	12 - मथुरा	बनवारी लाल
64	शिवसिंह सरोज	530 - लखनऊ	शिवसिंह सैंगर
65	कवि कीर्ति कलानिधि	140 - काशी	नकछेदी तिवारी
66	सुजान सरोज	91 - लखनऊ	सुजान कवि
67	गोपी प्रेम पियूष प्रवाह	51 - मथुरा	नवनीत कवि
68	अधौ गोपी शतक	20 - आगरा	घनश्याम
69	काव्य कलाकिर्ति	10 - लखनऊ	सीताराम
70	सभा विलास		
71	मनोरंजन काव्य		
72	प्रेम तरंग		
73	समस्या पूर्ति संग्रह		
74	काशी कवि समाज की समस्यापूर्ति (प्र. भाग)	38-काशी कवि सं.	
75	काशी कवि समाज की समस्यापूर्ति (द्वि. भाग)	38-काशी कवि सं.	
76	काशी कवि समाज की समस्यापूर्ति (तृ. भाग)	38-काशी कवि सं.	
77	काशी कवि समाज की समस्यापूर्ति (च. भाग)	38-काशी कवि सं.	
78	काशी कवि मण्डन की पूर्ति		गो. कन्हैयालाल
79	पटना कवि समाज की पूर्ति		पटना

कवि गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा प्रदत्त इस लम्बी सूची से यह तो सपट हो ही जाता है कि हिन्दी में संग्रह ग्रन्थ सम्पादन करने की एक पुष्ट परम्परा रही है और गोविन्द गिल्लाभाई ने इस विषय का विशद अध्ययन मनन तथा संग्रह किया था। कवि ने स्वयं कहा है कि उसके द्वारा संग्रहीत कविचरित्र के सम्पादन हेतु ही उसने यह सूची तैयार की है।

गोविन्द गिल्लाभाई के समय में अनेक संग्रह ग्रंथ प्रकाशित हुए थे। मुख्य रूप से मथुरा, आगरा, बनारस, इलाहबाद, बम्बई, पटना आदि स्थानों से इस प्रकार के संग्रह प्रकाशित हो रहे थे। गोविन्द गिल्लाभाई सिंहोर जैसे अहिन्दी भाषी क्षेत्र में रह रहे थे जो हिन्दी काव्य जगत की हलचलों से पर्याप्त दूर था, वहाँ रह कर इतने सारे ग्रन्थों का संग्रह कर पाना तथा अपने सम्पादित संग्रह ग्रंथ में उनका समन्वय करना एक बड़ा शोध कार्य था। प्रदत्त संग्रह ग्रंथों की सूची को देखकर स्पष्ट ही अनुमान हो जाता है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने अपने संग्रह ग्रंथों में सर्वाधिक कवियों के काव्य सम्पादित किए थे।

सम्पादित ग्रंथों की महत्ता और परिमाण को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि कवि गोविन्द गिल्लाभाई आचार्य कवि के रूप में तो प्रतिष्ठित थे ही, साथ में उन्होंने अत्यन्त परिश्रम करके उस समय तक के श्रेष्ठ कवियों के कृतित्व को भी संग्रहीत किया था जो उनकी एक विशिष्ट और अतिरिक्त प्रतिभा को ज्ञापित करता है। उन्होंने अत्यन्त कुशलता से शोध करके इन काव्य रचनाओं को सम्पादित किया था जिससे इनके संग्रह इनके पूर्ववर्ती काव्य संग्रहों से विशिष्ट बन सकें।

गोविन्दगिल्ला भाई के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने गुजरात में ब्रजभाषा साहित्य के प्रति पठन पाठन की एक स्वस्थ परम्परा स्थापित की थी तथा अपने वरिष्ठ कृतित्व से ब्रज काव्य के आचार्यो एवं स्थापित साहित्यकारों का ध्यान भी आकर्षित किया था। इनके समय में ही मिश्र बंधु हिन्दी साहित्य की ऐतिह्य सामग्री को संकलित कर रहे थे। जब गोविन्द गिल्लाभाई ने अपने संग्रह में संकलित ब्रजभाषा ग्रन्थों की तथा ब्रजकाव्य के समर्थ कवियों की सूची भेजी तो उसमें लगभग पाँच सौ ऐसे कवि थे जो मिश्र बन्धुओं के द्वारा भी अज्ञात कहे गए थे।[8]

गोविन्द गिल्लाभाई के समय में ब्रजभाषा काव्यभाषा के रूप में समग्र भारतवर्ष में प्रतिष्ठित थी तथा सभी साहित्यप्रेमियों की दृष्टि गुजरात की ओर भी आकर्षित हो रही थी इसलिए दो ही प्रमुख कारण थे, एक तो गुजरात की ब्रजभाषा काव्य पाठशाला तथा दूसरे यहाँ के आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई। उस समय गोविन्द गिल्ला भाई का सम्पर्क व्यावहारिक रूप

में निजी स्तर पर देश के प्रायः सभी प्रसिद्ध रचनाकार साहित्यकारों से था । पत्र सम्पर्क द्वारा आप सभी लोगों से सतत् जुड़े रहते थे।

गोविन्द गिल्लाभाई स्वयं धन खर्च करके दुर्लभ और अप्राप्य साहित्यकृतियों को खरीदकर संग्रह करते थे, यदि मूल कृति उपलब्ध नहीं हो पाती तो उसकी प्रतिलिपि कराके तैयार रखते थे । इस प्रकार उन्होंने बहुत सारे महत्वपूर्ण ब्रजभाषा काव्य ग्रन्थों को व्यवस्थित रूप से सम्पादित करके, उसमें अपेक्षित जानकारियाँ जोड़कर तैयार किए थे । उनके संग्रह में प्राप्त उनके द्वारा सम्पादित ग्रंथों का विवरण इस प्रकार है ।

1. अमर चन्द्रिका - अमर सिंह कृत - बिहारी सतसई की टीका ।
2. अनवर चन्द्रिका - कवि शुभकरण (कमलनयन कृत नवाब अनवर खान के दरबार के कवि) यह प्रति गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा तैयार की गई है, लिपिकाल - भाद्र शुक्ल तथा 14 संवत् 1956 ।

विवरण :

नाम	-	अमर चन्द्रिका काव्यानुवाद
मूल	-	बिहारी सदसई (की टीका)
कृतिकर्ता	-	अमर सिंह (सूरति मिश्रा)
साइज	-	16'' X 12''
कुलपत्रा	-	80पृष्ठ-160
कुल छन्द	-	689
लिपिकाल	-	सं. 1956
सम्पादन	-	गोविन्द गिल्ला भाई

अन्त में कविवर बिहारी सम्बन्धी कुछ विशिष्ट सूचनाएं दर्ज हैं । जैसे बिहारी द्वारा दिया गया स्वयं का परिचय इस प्रकार है -

''बिहारी कवि - धौम्य गोत्र के माथुर चौबे थे, सोती (श्रोतिय) कहलाते थे । ये ऋग्वेदी ब्राह्मण थे । इनके आश्वलायन शाखा तथा कश्यप, अत्रि साररूप - ये तीन प्रवर थी। कुलदेवी श्री महाविद्या । जयपुर महाराजा के यहाँ से इनको बसुआ गोविन्दपुरा ग्राम मिला था, यहीं ये चिरकाल तक रहे । यह ग्राम जयपुर राज्य में है । अभी तक बिहारी के कुटुम्बी चौबे लोग यहाँ रहते हैं । बिहारी कवि ने जो दोहे जयसिंह के दरबार में दिए वे ही सतसई में हैं।

पर सिवाय उनके और भी सैकडों दोहे उनके बनाए हैं । उनके बनाए और भी ग्रंथ हैं । ये कदाचित बसुआ गोविन्दपुरा में किसी चौबे के पास अथवा जयपुर के पुस्तकालय में होय तो होय ।

बिहारी के पिता का नाम 'केशव' और पितामह का नाम 'राय' था ।[9]

उनके घराने का पूर्व निवास मैनपुरी था ।

प्रारम्भ में दोहों की सूची दी गई है । किन्तु यह सूची अपूर्ण है, संख्या तो अवश्य 700 तक डाली है किन्तु कुल 173 दोहों की लिस्ट ही लिखी गई है, आगे का कार्य किसी कारणवश पूर्ण नहीं हुआ । यह दोहा-सूची 12 पृष्ठों पर हैं ।

13वें पृष्ठ से अमर चन्द्रिका के दोहों की सूची प्रारम्भ होती है । यह सूची आकारादि क्रम से हैं । जबकि पहली बिहारी सतसई की सूची बिहारी सतसई के क्रम से हैं । यह सूची 13 पृष्ठ से 25 तक है ।

अमरचन्द्रिका और अनवर चन्द्रिका को बड़े ही संतुलित एवं वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पादित किया गया है ।

अधिकांशतः तो दोहों में अलंकारों को ही स्पष्ट किया गया है .

दोहों की सूची के बाद एक कोष्टक में वर्गीकरण भी प्रस्तुत किया गया है । यथा- अमर चन्द्रिका के दरेक अक्षर के दोहा की कुल संख्या के कोष्टक :-

अ	आ	इ	उ	ए	ए	ओ	औ
27	7	9	8	1	2	2	5
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ
96	10	21	4	27	17	47	5
ट	ठ	ड	ढ	त	थ	द	ध
2	1	6	4	35	2	37	3
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
49	43	10	45	15	46	8	31
ल	व	श	स	ह	कुल दोहा		
36	28	8	45	22	717		

तत्पश्चात् अमर चन्द्रिका में दोहों में व्याप्त अलंकार की सूची भी अमर चन्द्रिका से दी गई है ।

इसमें 113 अलंकारों का उल्लेख हैं तथा कौन से अलंकार के कितने और कौन कौन से दोहे हैं इसका भी संकेत किया गया है ।

अमर चन्द्रिका के अन्त में बिहारी सतसई पर तैयार की गई अनेकानेक टीकाओं की भी सूची दी गई है ।

ग्रन्थारम्भ इस प्रकार है -

श्री कृष्णाय नमः । अथ श्री बिहारी सतसई की टीका । अमर चन्द्रिका प्रारम्भ यथा-

॥ मंगलाचरण दोहा ॥

छत्र चवर प्रहसत वहन, राजतिलक छवि माथ ।
राजत राजसिंघास ने, जयति जानकी नाथ ॥

॥ कवित्त ॥

जोधपुर राजमहराज श्री अभैसिंह,
नवकोटी नाथ गाथ प्रसिद्ध बरवानियैं ।
तिनके सचिव रामराय[1] श्री अमरसिंह,
कोविद सिरोमणि जगत जस गनियै ।
तिन मिश्र सूरत-सुकवि सौं कृपा सनेह,
करिकैं कही यौं एक बार उर अत्मियैं ।
कनिक बिहारी सतसहया जायै टीका कीजै,
जी कौं सुकदाय नीको अर्थ याते जानियें ॥

॥ दोहा ॥

और कही महराज कै, इन्हें ग्रन्थ अति हेत ।
तिनकी रुचि सौ हित रचौ, रचना अर्थनिकेत ॥
यौ सुन श्री अमरेस तैं, बचन रचन अभिराम ।
रच्यौ ग्रंथ तिह तैं धर्‌यौ, अमर चन्द्रिका नाम ॥

इसके पश्चात् अमरसिंह वंश वर्णन के दोहे हैं । (कुल दोहे -11) पृष्ठ -2 से मूल बिहारी सतसई के दोहे प्रारम्भ होते हैं -

'मूल ग्रंन्थ बिहारी सतसई प्रारम्भ यथा भक्ति मार्ग - विलास प्रारम्भ यथा -

॥ मंगलाचरण दोहा ॥

मेरी भव बाधा हरौ ..... ।

॥ टीका दोहा ॥

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागर सोइ ।
कैसी है तिनके सुनो, इमि बखान कवि कोइ ॥1॥
जा तन की झाई परै, नैंक ध्यान में आइ ।
दूरि होई स्यामत्व मम, दुति जु अन्य अधिकाइ ॥2॥

॥ गद्य ॥

इहाँ हू - समर्थता दृढ़ दिखाई - काव्यलिंगालंकार है .

॥ तृतीयार्थ दोहा ॥

वे राधा बाधा हरैं, पीत रंग उद्योत ।
जिनकी तन झांई परै, स्याम हरित रंग होत ॥3॥

गद्य - इहाँ हेत्वालंकार है । ताकौ लच्छन, दोहा :-

हेतु सरिज कारज जहां, कहे हेतु कविराज ।
प्रिया पीत रंग स्याम पिय, हेतु हरित रंग काज ॥4॥

राधा नागर में पाठ होय तो श्री कृष्ण पक्षे अर्थ दोहा :-

वे मेरी बाधा हरौ, राधा नागर सोइ ।
जिनके सुमिरन ने कही, इतौ महाफल होइ ॥5॥
जिन तन की झॉई परै, स्याम ध्यान में आइ ।
हरि की तन-दुति सु होइ वह, सारुपहिं कौं पाई ॥6॥

इहाँ तद्गुणालंकार है ताको लक्षण दोहा -

तद्गुन निजगुन तजि जहाँ, औरै गुन लपटाई ।
हरि झाँई ते हरि भयौ, अपनौ रूप नसाई ॥7॥

दोहा :-

औरहु अर्थ अनेक विधि, कठन मंगलाचर्न ।
कहे न भय-विस्तार सौ, सुनहु सुकवि सुखकर्न ॥8॥

इस प्रकार एक ही दोहे की इतनी विस्तृत टीका सम्पादित की है ।

जैसा कि कहा जा चुका है कि यह ग्रंथ बिहारी सतसई का वैज्ञानिक वर्गीकरण प्रस्तुत करता है तथा प्रमुख अलंकारों को भी पृथक रूप से दर्शाता है ।

इसमें उल्लिखित निम्नलिखित अलंकारों की कुछ प्रयुक्त संख्या (मय दोहा संख्या) के दी गई है यथा अलंकार नाम - कुल - दोहा संख्या क्रम

अन्योक्ति - 7 - 229 - 260 - 491 - 500 - 502 - 521 - 525 इसी प्रकार अन्य अलंकारों के परिमाण दृष्टव्य हैं । अन्योक्ति - 28, असंगति - 19, अनुज्ञा - 3, अनुगुण - 4, अनुभाव - 16, अयुक्तायुक्ति - 1, अतगुण - 2, अभिलिता - 1, अधिका - 1, अर्थान्तरन्यास - 4, अदभुतासं - 1, आधारमालं - 1, तृतीय मरणाक्षेप - 2, उल्लास -7, उत्तरा - 4, उत्प्रेक्षाभेद - प्रथम वस्तूप्रेक्षा - 4, चतुर्थ लुप्तोत्प्रेक्षा - 13 ।

उपमाभेद - 10 :

प्रथम पूर्णोपमा - 39, लुप्तोपमाभेद - 1, वाचकलुप्ता - 3, 2 - उपमान लुप्ता -1, 3 - उपमेयलुप्ता - 4, 4 - धर्मलुप्ता - 2, 5 - उपमानवाचक लुप्ता - 1, 6 - उपमेयवाचकधर्म लुप्ता - 1

दूषनोपमा - 1, काव्यलिंग - 38, काकोक्ति - 11, क्रियाक्रिया विरोध सं - 2, क्रियागुण विरोधा - 1, गुणोत्तरा - 1, छेकानुप्रास - 28, छेकापन्हुत्ति - 1, यमकालंकार - 23, जान्यालंकार - 33, ह्रतालंकार - 27, दीपक - 6, तद्गुण - 6, तुल्योक्ति अलंकार - 1, निषेधाभास - 11, निदर्शना -1, प्रथम - प्रहर्षना - 5, द्वि. प्रहर्षना - 2, प्रतीपालंकार - 4, प्रथम पर्यायोक्ति - 16, द्वि, पर्यायोक्ति - 10, अर्थालंकार प्रतीकरांकुर - 7, परिकर - 1, परिवृता -1, परिशंख्या पुनिरुक्तिवदाभास - 1, प्रेमालंकार -4, वक्रोक्ति - 1, व्याजस्तुति - 2, व्याजोक्ति - 6, व्याघात - 5, विराधाभास अलंकार - 11, विषयालंकार - 11, विपरीतालंकार -1, वृन्यर्य अलंकार - 2, विशेष अलंकार - 3, विशेषाक्ति - 28, वृत्यानुप्रास - 24, विचित्रालंकार - 3, व्यतिरेकालंकार - 13, व्यतिरेक-पर्यायोक्ति - 1, दिमावनां - 5 ।

भेद :-

प्रथम विभावना - विनकारनकाज - 6, द्वितीय विभावना कारण समग्र होय काज होय - 1, तृतीय विभावना - प्रतिबंधक छतै काज होय - 2, चतुर्थ विभावना - अन्य हेतु कार्य - 4, पंचम विभावना - विशुद्धतै कार्य की सिद्धि - 19 ।

वीरसालंकार - 7, भ्रमालंकार - 1, भ्रांति - 10, भ्रान्तापन्हुति - 1, भेदकातिश्योक्ति अलंकार - 13, मिलिता - 5, रसवदा - अदभुत रसवदा - 1, रूपकालंकार - 47, रूपकातिश्योक्ति - 2, लाटानुप्रास - 12, लेषालंकार - 4, लोकोक्ति - 11, समानालंकार - 5, स्मृति - 5, समासोक्ति - 2, सहोक्ति - 2, समुच्च्य - 1, स्वभावो वित्त - 21, स्तुति व्याज निंदा - 1, सुधापन्हुति - 1, सुखमालंकार - 2, संदेह - 2, समयालंकार - 2, संबंधतिश्योक्ति - 4, संभावना - 8, श्लेष - 19, हेतु - 12 ।

परिमाण संख्या के आगे दोहा क्रम भी दिए गए हैं । आलंकारिक अध्ययन के लिए यह वर्गीकरण अत्यन्त उपादेय है ।

जोधपुर के महाराजा श्री अमरसिंह के सचिव रामराया श्री अमरसिंह (जो स्वयं भी एक अच्छे कवि थे) के, उनके ही आदेश से उनके नाम से उस बिहारी सतसई की टीका का निर्माण हुआ ।

प्रस्तावना में प्रारम्भ में ही रचनाकार स्पष्ट कर देता है -

छत्र चवर प्रहसत बदन, राजतिलक छविभाव ।
राजत राजसिंहासने, जयति जानकी नाथ ।
जोधपुर राज-महाराज श्री अमरसिंह, नवकोटी नाथ गाथ प्रसिद्ध बखानिवैं ।
तिनके सचिव रायराया श्री अमरसिंह, कोविद सिरोमनि जगत जस गानियैं ।
तिन मिश्र सूरति सुकवि सौं कृपा सनेह, करिकै कही यौं एक बार डर आनिए ।
कठिन बिहारी सतसइया, जापै टीका कीजै, जी कौ सुखदायनी को अर्थ यातैं जानिए॥

आगे भी अमरसिंह वंश वर्णन के क्रम में एक स्थान पर कहा है -

जिनकौ अतुल प्रताप गावत देश विदेश ॥
तिनके परमप्रवीन अति प्रगट श्री असेस ।
तिन कवि सूरति मिश्र सौं कीने परम सनेहु ॥
सबै भाँति सनमान करि, कह्यौ ग्रंथ कर देहु ।

अंत में बिहारी सतसई में तब तक प्रसिद्ध हुई टीकाओं की सूची भी दी गई है-

संस्कृत टीका - कवि नू नाम नथी ।

आर्यागुन - संस्कृत मां हरिप्रसादे सं. 1837

शृंगार रस सतिका - संस्कृत दोहा तथा टीका - प्रेमानंद कवि

जुल्फकार कृत टीका - (भाषा में) जहॉगीर शाह नां बजीर जुल्फकार हतो

प्रबंध घटना - (भाषा में) अनवर खां नवाब नी सभा ना कवि शुभकरण - कमलनयन आदि बतावी छे ।

साहित्यिक चन्द्रिका - पन्ना नरेश हृदयशाह नी सभा मां करनभट्ट नाम नो भाट हतो

रघुनाथकृत टीका - काशी निवासी रघुनाथ काशीराज वीरचन्द पासे हतो। ते संवत् 1802 मां

रस चन्द्रिका - संवत् 1834 मां हरिशरणदास नो आ टीका रची । ते बिहार मां जिला सारन (छपरा) नी पगणना गोआ मां चैनपुर ग्राम ना निवासी हता । तेना बाप नुं नाम रामधन हतु । ते कृष्णगढ़ वाला, नागरीदास (सामतसिंह पासे)

लाल चन्द्रिका - लल्लूलाल (भालचन्द्र) आगरा वासी । गुजराती औदीच्य ब्राह्मण हता । काशीवासी सरदार काशीराज ईश्वरप्रसाद नारायण सिंह ना कवि ये रची ।

यूसुफ खां कृत टीका - सिरमौर नां राणा नी सभा नो कवि

वैद्यक टीका - छोटू राम नाम ना दिव्दानें वैद्यक मां टीका करी छे ।

देवकीनन्दन कृत टीका - काशीवासी प्रसिद्ध जमीनदार बाबू देवकीनंदन नो, चसनीवासी ठाकुर कविअे ते टीका रची छे । सं.1761 मां तेणो ते सतसई बिहारी नी स्त्री नां रचेली मांनी तेम लख्यु छे ।

प्रभुदयाल पाण्डे कृत टीका -ये संवत 1953 मां कलकत्ता बंगवासी आफिस तरफ थी छपाई छे प्रभुदयाल आगरा जिल्ला ना निवासी छे। ते माथुर चतुर्वेदी छे ।

बिहारी रत्नाकर - अे काशी ना रहीश बापू जगन्नाथ प्रसाद उर्फ रानाकरे रची छे ते अग्रवाल वैश्य छे ।

अमर चन्द्रिका-पद्य टीका - आगरा निवासी सूरत मिश्र कान्यकुब्ज ब्राह्मण करी छे

कृष्ण कवि कृत टीका - ए टीका कवित्त सवैया मां छे, तेना कर्ता मथुरा निवासी माथुर ब्राह्मण अेटले चोबेजी हतो ।

पठान सुलतान वाणी-कुंडलिया में टीका - अे भोपाल जिल्ला नां राजगढ़ ना नवाब सुलतान पठान सं. 1760 मां विद्यमान हता - ते भाषा - कविता नां प्रेमी हता । तेनी पासे चन्द्र कविरत्न ने कुंडलियाँ मां बनाव्या छे।

रूप सतसैया - ग्रंथ मां लख्यु छे के गंगाधर नाम ना कवि अे दरेक दोहा ना कुंडलिया करेल है, रस कौमुदी । अयोध्या ना महंत बरवा जानकीप्रसाद उर्फ रसिक बिहारीअे 396 दोहा ना कवित्त सवैया कर्‌या है ।

सतसई शृंगार - भारतेन्दु बाबु हरिशचन्द्र कृत - कुंडलियाँ थोड़ाक छे। सर्वे-उस्मान अली ।

जोरणूराय कृत टीका-कुंडलियां - सं. 1938 मां अे 45 वर्ष ना हता - बाबू हरिश्चन्द्र ना कहेवाथी थोड़ाक कुंडलिया रची हती ।

बिहारी सुमेरु - नानक पंथी पटना निवासी तेमने थोड़ीक कुंडलियां लखी छे ।

ग्रियार्सन साब का सतसई संस्करण - ते जॉर्ज एब्राहम ग्रियार्सन साहेब ने खुद करी छपावी छे ।

बिहारी बिहार - व्यास अम्बादत्ते कुंडलिया लख्या छे ।

नवीन टीकाएं

जैन मानसिंह की टीका - वित्तकाच्छ के, उदयपुर रस चन्द्रिका - रस बीस्या कृत-नवाब नटवर गढ़ के राजा छत्रसिंह के लिए सं. 1709 में ।

प्रताप चन्द्रिका - ज्वाला प्रसाद मिश्र कृत

बिहारी बोधिनी - लाला भगवानदास कृत

संजीवन भाष्य - पद्मसिंह कृत

कानविन चित्रचन्द्रिका - सरदार कृत

बिहारी टीका - जोधपुर मोरारीदान जी कृत

बिहारी टीका - जूनागढ़ के दीवान - रनछोर जी कृत

बिहारी टीका - डाकोर के साधू - कल्यानदास जी कृत आदि

अंत में बिहारी के समकालीन कवियों की सूची दी है :- (पृष्ठ 83)

अब्दुब सिंह	-	1634
अब्दुल जलील	-	1682
इन्द्रजीत त्रिपाठी	-	1682
ईश्वर	-	1673
काशीराम	-	1658
किसन	-	1683
खुमान	-	1683
गंभीर राय	-	1650
गोपाल कवि	-	1650
गोविंद सिंह	-	1658
चिन्तामणि त्रिपाठी	-	1650
जयसिंह	-	1681
दीन अहमद	-	1679
ठाकुर कवि	-	1683
तुलसी	-	1655
निवाज	-	1650
नीलकण्ठ	-	1650
देवदास	-	1650
पंचम	-	1660
प्रताप	-	1633
पुरुषोत्तम	-	1650

प्राणनाथ	-	1650
बनवारीलाल	-	1638
बारन	-	1683
विजयाभिनन्दन	-	1650
बिहारी लाल चौबे	-	1650
बीरयान	-	1658
बंदागराय	-	1650
भूषण	-	1660
मतिराम	-	1650
मंडन	-	1659
मान कवि	-	1660
मुरलीधर	-	1688
रघुनाथ	-	1681
रतन	-	1680
रणछोड़	-	1680
रावरतन	-	1650
राजसिंह	-	1658
लाल कवि	-	1608
सदा शिव	-	1660
सबलसिंह चौहान	-	1670
संभुनाथ	-	1650
सरस्वती कवीन्द्र	-	1650
सामंत	-	1673
शिवनाथ	-	1660
सुन्दर	-	1631
सूजा	-	1681
श्री गोविन्द	-	1673
श्रीधर	-	1683

श्रीपति	-	1683
हरिकेश	-	1650
हरिचन्द्र	-	1650
हरिवंश	-	1662

अन्त में बिहारी सतसई में आज कुछ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिए गए हैं .

ग्रंथ के प्रारम्भ में इस बंध में प्राप्य ग्रन्थों की सूची इस प्रकार दी है :-

आ = पुस्तक मां. जे. ग्रंथों. लखे छे. तेना नाम नीचे मुजब;

1. अमर चन्द्रिका (बिहारी सतसई की टीका) सूरत मिश्र कृत, पत्र-1 थी 80 सुधी
2. अनवर चन्द्रिका (बिहारी सतसई की टीका) शुभकरण कवि कृत, पत्र-1 थी 126 सुधी
3. बिहारी कवि नो हकीकत : पत्र 81
4. बिहारी सतसई नी टीकाओ । पत्र 81
5. बिहारी नां समय मां ते साथे थयेला कवियों ना नाम, पत्र-83
6. बिहारी ना कारण शब्दों ना अर्थ, पत्र-84

अनवर चन्द्रिका[10]

ग्रन्थ का नाम	-	अनवर चन्द्रिका
मूल विषय	-	बिहारी सतसई की टीका
कर्ता	-	कवि शुभकरण
साईज	-	16'' x 12''

प्रति पृष्ठ 32 पंक्ति / प्रति पंक्ति लगभग 16 शब्द

सम्पादन	-	गोविन्द गिल्लाभाई
लिपिकाल	-	संवत् 1956 भाद्रपक्ष सुदी 14 शनिवार
पुष्पिका कृत पत्रा	-	126 पृष्ठ 252

श्री कल्याण यस्तु / श्रीरस्तु / तथास्तु

विक्रम संवत् 1956 का भाद्रपद सुदि 14 शनिवार के दिन बिहारी सतसई सटीक मेहता हरी खत्री की प्रति पर से श्री सिंहोर नें चहुआन रजपूत कवि गोविन्द गिल्लाभाई ने स्वार्थ

स्वहस्तु लिखकें पूरन की है ।

प्रारम्भ में टीका ग्रंथ को सोलह विभागों में विभक्त करने का संकेत है -

'अथ बिहारी सतसई की अनवर चन्द्रिका टीका के सोरह विभाग यथा' -

1. वयसंधिता नायक वर्णन - दोहा 17
2. साधारण नायका वर्णन दोहा -611 से 10
3. शिखनख वर्णन दोहा पत्र 10 से 28
4. मुग्धा - मध्या प्रौढ़ा वर्णन दोहा - पत्र 28 से 31
5. अष्टनायका वर्णन - दोहा - पत्र 31 से 56
6. रूपगर्विता, गुनगर्विता प्रेमगर्विता वर्णन दोहा पत्र 53 से 54
7. मानिती, त्रिधामान, मानमोचन - दो पत्र 24 से 61
8. सुरत - सुरतांत - परिहास वर्णन दोहा - 61 से 66
9. साधारण परकीया, परकीया षटभेद वर्णन दोहा - पत्र -67 से 95 तक
10. दशदशा वर्णन दोहा - पत्र 95 से 97 तक
11. सात्विक भाव वर्णन दोहा - पत्र 97 से 99 तक
12. मद्यपान वर्णन दोहा - पत्रा - 99 से 101
13. दशविधि हाव वर्णन दोहा - पत्रा 101 से 103
14. नवरस - रसाभास - देवरतिभाव - भाव - सबलतादि वर्णन दोहा - पत्र - 103 से 111 तक
15. षटऋतु वर्णन दोहा - पत्र 112 से 116
16. प्रस्ताविक और अन्योक्तिवर्णन दोहा पत्रा 116 से 119 तक

प्रारम्भ ॥ श्री ॥

श्री गणेशाय नमः

॥ अथ श्री अनवर चन्द्रिका टीका का क्रम ॥

टीकाकारोक्त सूचना

॥ दोहा ॥

विघन हरन को विघनहर, करिप्रनाम करिकायः ।
सैयासत अर्थन अबै, करिहों, कही कहायः ॥1॥

उदेजु अनवर चन्द्रिका, देखे अर्थ अनेक ।
तातै संग्रह कै कियौ, सतसई अर्थ विवेक ॥2॥
अहि छत्रा, ओरक अवनि, नागर नगर निवास ।
मुरछत महि बासौ बसै, विद्याविनय विकाशः ॥3॥
अपनी इच्छा तें किये, रामकृष्ण शुभनाम ।
अरथ अकारथ होय तो, छमियो कृपासु धाम ॥4॥

अथ श्री बिहारी सतसैया प्रारम्भ

॥ दोहा ॥

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झांई परै, स्याम हरित दुति होइ ॥1॥

अर्थ सोई राधा नागरि मेरी भव बाधा हरौ, संसार में विप्रलंब दुख कौ मिटाऔ । सोई कौन सी जातन झाई परै, स्याम हरित द्युति होय । भगवान अति कृश होय हैं इति विप्रलम्भावस्था । ॥ संयोगे ॥ सो राधा नागरी मेरी भव बाधा रहौ । ॥ प्रार्थना ॥ सोई कोन सी जा तन की झाई परै, स्याम हरित दुति होय । जिनके स्वरूप की कांति भगवतस्वरूप में मिले ते हरित द्युति होत है । सो कहा हर्‌यौ रंग होत है, परस्पर कांति मिलिकै एक रंग होत है, ऐसौ जानियैं ।

तम संमति यथा - दोहा -

नितप्रति रोकत ही रहत, बेस बरन मन एक ।
चहियत जुगल किशोर लखि, लोचन जुगल अनेक ॥

श्री भगवान जो रसरूप कहे सो वियोग संयोग के विसे एक रूप हैं । याते कहा तात्पर्य भयौ । रति भाव ध्वनि । श्री जी के जाकै विषै, बहुत कृपा है - प्रार्थना - तात्पर्य यह है । जो मैं संसार - समुद्र परौ हौं, सो विकारी कैं भगवत स्वरूप की प्राप्ति करौ । इति प्रार्थना।

विषेयालंकार - श्लेष भासत है । ताके लक्षण

॥ विषयालंकार लक्षण ॥

कारन कौ रंग और ही, कारण औरै रंग ।
यह विषयालंकार को, कियौ भेद छवि संग ॥

त्रतीय काव्य लिंग अलंकार ताके लक्षण -

काव्य लिंग सामर्थ्यता, जहॉ दृढ कीजै मित्त ।
क्यों जीती है विरहतम, चंद्रमुखी कौ चित्त ॥

400 दोहों तक तो अर्थानुवाद तथा संलग्न अलंकारों के लक्षणादि भी दिए हैं किन्तु बाद के मूलदोहों के अर्थ नहीं दिए केवल अन्तर्हित अलंकारों का उल्लेख भर कर दिया है।

अन्त इस प्रकार है :

मूल दोहा (पत्रा 126) पर -

विषय विषयादिक की तृषा, जिये मतीरनि शोधि ।
अमित अपार अगाद जस, मारौ मूढ़ पयोधि ॥ -

अन्योक्ति

मूलदोहा

इहि द्वै ही मोती सुगथ, तूं नथ गरबि निशांक ।
जिहि पहिरत जग दृग ग्रसत, लसत हसत सी नाक ॥

अन्योक्ति

इति श्री अनवर चन्द्रिकायां प्रस्ताविक अन्योक्ति वर्णन नाम षोडसः प्रकासः ॥16॥

प्रारम्भ में उल्लिखित प्रकासों के वर्गीकरण से जाना जा सकता है कि सम्पादक ने बड़ी ही कुशल दृष्टि से ग्रन्थ को 16 प्रकाशों मे वर्गीकृत किया है । इसमें नायिका भेद, शिखनख वर्णन, भक्ति, रस अलंकार आदि से सम्बन्धित दोहों को एक ही स्तान पर संगटित करके, उनमें अन्तर्हित विशेषताओं को ज्ञापित किया गया है ।

बिहारी सतसई पर लिखी गई अमर चन्द्रिका तथा अनवर चन्द्रिका दोनों ही महत्वपूर्ण सटीक सम्पादन की कुशलता को व्यक्त करती है ।

ग्रन्थ का नाम - **दयानिधि काव्य संग्रह**[12]

ग्रन्थ कर्ता - कुलपत्रा, ब्रजकाव्य कुल पत्रा 263

सइज - 13'' X 8''

प्रतिपृष्ठ 27 पक्ति

प्रति पंक्ति 17 शब्द प्रति पंक्ति

सम्पादन - गोविन्द गिल्लाभाई

लिपिकाल - सं. 1973

प्राप्ति स्थल - बड़ौदा विश्वविद्यालय

अन्य विवरण - यह स्फुट कवियों का सम्पादित काव्य संग्रह है ।

प्रारम्भ :- अथ श्री दयानिधि कृत कवित्त संग्रह

वयसि किसोर दोऊ जोवन के जोर मच्यौ,
मदन मरोर में विलास पर जीव कौं ।
तोरि नीवी बंधन को दूरि करि सारी छोर
किंकनी कों छोर, झकझोर कटि छीन कौं ।
जोर मुख 'दयानिधि' पीवत निचोर रस,
करत निहोर प्यारी चोर चित लीन कौं ।
थोर धुनि पायल की विधिमान संग बजै,
घोर किंकिनी की, मंद शोर शिशकीन कौं ॥

करिकैं सिंगार रतिकेलि के महल आई,
कंत के गहै पै मयकंप सौं कपी सी जात ।
चंद्रमुखी चकित चितै है चंद चादिनी कौं,
चंचल चखन चारु चौकत चयी सी जात ।
'दयानिधि' पिय झुकि रस में झकोरयौ चाहै,
झिझकि झिझकि झीने चीर में झपी सी जात ।
छनक छकाय छैल छल सौं छुवत छाती,
छुरि कै छबीली तऊ छपा सी छपी सी जात ॥

इस वर्ग में 108 से 118 तक संख्या के ग्रंथ समाविष्ट है । सूची इस प्रकार हैं-

108	दयानिधि काव्य संग्रह	दयानिधि
109	जगदीश काव्य संग्रह	जगदीश
110	समस्या सार ग्रन्थ	रावरामनाथ जी
111	चन्द्ररामायण	चन्द्र कवि
112	रसोत्पत्ति ग्रन्थ	बख्तावर सिंह
113	फुटकर कवित्त	बख्तावर सिंह
114	रसविलास	रावशिवदास
115	सुजान विलास	सुजान

116	विरह पचीसी	सुजान
117	फागुन महात्म	गनेटा
118	शब्दविभूषण	केशव

इसमें फुटकर कवित्त संग्रह :

1 यमक पचीसी

2 गोदकाष्टक

3 वीर रसादिक मानुषी कविता

4 जैपुर के महाराजा माधवसिंह जी के विषय में

5 जैपुर के महाराजा प्रतापसिंह जी के विषय में

दयानिधि काव्य संग्रह में प्रारम्भ में 31 कवित्त लगभग मांसल शृंगार के रूपसज्ञा और संभोग शृंगार के स्थूल चित्रण प्रस्तुत करते हैं -

तत्पश्चात् लक्षण ग्रन्थ परम्परा का निर्वाह-सा प्रतीत होता है । जिसमें नायिकाभेद के अन्तर्गत - आगमपतिका, शुक्लाभिसारिका, खण्डिता, कलहंतरिता, सुरतरता, सुरतांत, झूला, वसंत, फाग, वियोग, विरहाष्टक, जमुना जी के कवित्त, प्रभुनाम प्रताप, अजामिल के कवित्त , सिद्धान्त के कवित्त, करुण के कवित्त, शान्त रस में कवित्त, गोदोहन आदि के छन्द हैं ।

आगमपतिकानायिका । खंडितानायिका, मुग्धानायिका, आदि के कुल 147 कवित्त हैं ।

अन्तिम छन्द -

चूनी तें चरन चारु चंपा ते वरन चोख्यौ,
चंद ही ते चौगुनी बनक प्रभा दरसी ।
केल खंभ हू ते कमनीय जानि जंघ सोभा,
केहरी ते कृश कटि कलित सुपर सी ।
भनै 'दयानिधि' बाहु मंजुल मृणाल हू ते,
श्री फल ते सरस उरोज छबि बरसी ।
खंजन ते खूब आँखें मृग तें मनोहर री,
सफरी तें, सर तें, मनोज हू ते सरसी ॥

॥ कविजगदीश कृत काव्य संग्रह ॥[13]

यह नायिका भेद पर आधारित है । इसमें स्वकीयानायिका/ज्ञातयौवना/मुग्धा/अज्ञात यौवना/विश्रब्ध नवोढा/मध्यानायिका सुरतरता/सुरत संग्राम/अन्य संभोग दुखिता/प्रथम अनुशयना, कृष्णाछवि ध्याने आदि के छन्द हैं -

कवित्त 27 के बाद कुछ प्रासंगिक प्रशस्ति परक वर्णन हैं -

आमेर किंवा जैपुर में गोविन्द मामा ठाकुर जी की मूरती की प्रशंसा -

- कृष्ण छवि ध्यान
- श्री कृष्ण स्तुति
- मन प्रति भक्ति वचन, तत्पश्चात् -
- नायिका, प्रति सखी वचन । परकीया/नैन लगनि/बंसी/नायक के प्रति नायिका वचन/उपपति नायक/महाराज प्रताप सिंह भक्ति विषे/गणिका बासक सज्जा/नवोढ़ा सुरतांत/अभिसारिका/कृष्णाभिसारिका/अभिसारिका/कुलटा के भी वर्णन/टीका, भालरेख/भ्रकुटी, लवि, नैन, प्रभुविनय/भक्तपक्ष के कवित्त/भक्त उधारन/श्री कृष्णस्य की ध्यान/बृजप्रशंसा/उरोज/भानवती/कलहंतरिता, प्रोषित पतिका, आगतपत्रिका, होरी खेल, महाराजा माधवसिंह जू विषे/महाराज प्रतापसिंह होरी खेल/राधाकृष्ण होरी खेल/बंसत/गुलाब/केश/बसंत-खवास रूपक/3 अर्थ का कवित्त/नायिका सुकुमारता, छवि, नैन, चरण, संहिता, गनिका, पावस, सांझा, पावस गन द्वन्द (213) सावन तीज, उद्दीपनविभाव/शिविर, ग्रीष्म, प्रसस्ति महाराजा की स्वयंदूतिका, खसखाना, हेमंत, शिशिर रासलीला ।

उधव गोपी संवाद

इस ग्रन्थ में कुल 333 छन्द हैं, पृष्ठ 54 पर ग्रन्थ समापन है । लगता है कुछ और भी छंद रहे होंगे जो लिपिकार को नहीं मिल पाए ।

प्रारम्भ - स्वकीयानायिका

श्रौंन दिये तु त्रैबन सुने परैं
मानत है नहिं तानति भौहैं ।
कंतहिं कौं जगदीश लावें मुख-
नैन तिहारे न आनहिं जो हैं ।
पौरि तो गौरि समान गिनै, अँगना

हूँ सों नाहिने पाई चलो हैं ।
तेरे सरीर सुझाव सबै सखि,
इन्दुमति औ शची गुन सो हैं ।

अन्तिम पदांश :-

॥ कवित्त ॥

विच विप्रलाई औ लवाई त्यौं अरुनताई,
शेरनि तिखाई जिमि कंज पखियान मैं ।
होइ कें सराग-राग हरिजीनि तिमिताई,
चंचलता छाई जैसे जल झखियान मैं ।
कवि 'जगदीश' बर बानिक बदाम धारि
आम फारि वारि वारि सौरी सखियान में ।
मोहन बसीली सुनि राधिका रसीली राजै,
सब उपवन-गुन तब अँकियान में ।

॥ यमक पचीशी ग्रन्थ ॥[14]

पृष्ठ 55 से यह ग्रन्थ प्रारम्भ है । इसमें यमक के 55 भेदों का सोदाहरण काव्योल्लेख है ।

प्रारम्भ :

जलनिधि कौ धरि ध्यान उर, नृप ब्रजनिधि की आंन ।
जमक पचीसी करत हौं, जमक झमक पद गान ॥1॥

यथा दोहा :

कानन कीजै कानन हि, कानन सुनिकैं बैन ।
मैं जानी जानी मिले, जानी वेदन मैन ॥
दशा तोरई द्वै गई, कुसुम तोरई अंग ।
कुंजन में तब तोरई, अब तो रई कुढंग ॥
प्यारी प्यारी कहि कहैं, प्यारी नीर कपूर ।

तू प्यासी तू प्यासी नहीं, प्यारी रीतिम तूर ॥

हांसी करि हांसी भई, हांसी क्यों बकरैहि ।

दासी दासी होई कै, दासी घर न हरैहि ॥

अन्त में :

चिकन चोलना चिकन मन, चिकनवार विसतार ।

छैल चिकन, छिलिवें चिकन, चिकुर वंधावति द्वार ॥

नृप प्रताप परताप दुति, परतापनु अनुमान ।

जगदीसहिं जगदीस ही, प्रभु जगदीश जमान ॥

॥ छक पचीसी ग्रन्थ ॥ (पृष्ठ 56 से)

प्रारम्भ :

सहस पाँखुरी पदम सिर, श्री गुरु देव सुथान ।

छक पचीसी मैं करौं, तिनकों धरि कै ध्यान ॥

उधव प्रेम पचीशिका, पहल बखानी होई ।

या सा ज्यों तीजी करत, पखपख सुभ मच होई ॥

अन्त में :

सावन सुनि की तीज कौ, करी पचीसी सार ।

संवत अट्ठारह सतहि, त्रेपन रुचि रविवार ॥

॥ मोदकाष्टक ॥ पृष्ठ 62 से प्रारम्भ है

प्रारम्भ :-

मोदकमन गत नाथनू, भुजमोदक दरसाइ,

मोदक अष्टक करत में, मोद करौ उर आइ ॥

अन्त में :-

मोदकअष्टक यह कियौ, लहि मोदक जमदीश

कंठकिए इहि मोह कहि, धर मोदककरि सीस ॥

इसमें मोदकों से स्नेह व्यक्त करते हुए कवि ने कहा है -

॥ कवित्त ॥

भूपति प्रताप महाराजन के महाराज,
सुरराज हू सों यौं, दराज दरसाने हो ।
कवि जगदीश कहै गोविन्द प्रसाद भई,
पूरव पवन कों परम परसाने हो ।
आनन-अवनि अति कीजत मधुर धौरे,
और मनु घोरे ऐसी शीत सरसाने हो ।
हम से पपीहन की जीभिन के विनोदक,
मोतीचूर मोदक के मेह बरसाने हो ।।2।।

॥ सवैया ॥

हौंन लगे कलि के परभाव सौं गोविंद देव गुसाई हु चीठे ।
हौंस धनी विधि के परसाद ये, भोंव बिना किहुं कौं नहिं दीठे ।
जानि कैं यौं 'जगदीश' ससक्कत, लड्डुन सौं जनि आदि के ढ़ीठे ।
मेदनि कल्पतरू परताप सौं, बांटत मोतिन चूर के मीठे ।।6।।

॥ कवित्त ॥

मंजुल मथैंनी कवि चंद की अमंद दुति,
अमृत कौं मथि, मधुराई मनु मेली है ।
कमल गुलावन के कुसुम सकोलन की,
मानहु नरमताई सामिल सकेली है ।
मोदक गुविंद के प्रताप की कृपा सौं पाइ,
कवि 'जगदीश' पा ली जुगति की बेली है ।
चासनी के चांदी त्यौ सुवासिनी के आदी मानौ,
सुबरन सुहानी बूंदी कुंदन में मेली है ।।

<u>पत्र - 62 से शृंगार-पावस ऋतु</u>

॥ कवित्त ॥

सबज बनातसा विधित-छिति दूबन की,
अरुन बघूटी रिंगे लालन ज्यौं भूल ना ।
जिंगन औ किंगन तमाती जाती तित तित,

झालरि तपाती तरुपाती लख्यौ मूल ना ।

सीतल सुगंध मंद पवन झकोर और,

बोले 'जगदीश' रति ईश अनुकूल ना ।

आली लखि सावन की लूमें झूमें नन्दलाल,

लूंमैं झूमैं अंबन कदंबन के झूलना ॥

पत्रा - 63

॥ द्रव्य बिना ग्रह आश्रम व्यर्थ ॥

भाग ही की फलै, और चलै ना उपाय कछू,
सेवन करहु नरदेवन पिरथ कौ ।
साधौ सस्त्र विद्या किधों, शास्त्र अवराधौं कोऊ,
तरनौ समुद्र हू कौ करनो विरथ कौ ।
कवि 'जगदीश' आई बीतत है ओंटी यातें,
कोऊ पुन्य उदै लीजे सरनौ तीरथ कौ ।
भारत बरस बीच भारत के खंज जाहि,
गरब बिना है धिक आश्रम गिरथ कौ ॥

(इसके बाद हेमन्त तथा वर्षा के कवित्त हैं ।)

फिर होली के कवित्त हैं -

मोपर तौ डारत गुलाल सितसोति करि,
डारत अबीर इत अंखियान लाल की ।
केसरि को नीर भरि पिचकारी छिरकत,
अलि अवलीन रंग भीजति बहाल की ।
कवि 'जगदीश' सब काम हैं छुटक तऊ,
काम ही के बस यासौं परम निहाल की ।
ढपहि बजात, गारी रस बरसत हेली,
अजब है फागु प्यारे मदन गुपाल की ॥

पृष्ठ 66 से रस वर्णन हैं

यह ग्रन्थ 86 तक है। ग्रन्थ संग्रह होते हुए भी अपूर्ण जान पड़ता है। जगदीश कृत काव्य संग्रह में छंद संख्या -

ग्रंथ में कुल संख्या	333
अतिरिक्त संख्या	006
कुल जोड़	339

कुल	कवित्त	246
	सवैया	085
	छप्पय	002
	देखता	005
	दोहा	001
	कुल जोड़	339

समस्यासार ग्रंथ[15]

इस ग्रन्थ की विषय सूची इस प्रकार है -

विषय नाम	पत्र संख्या
मंगलाचरण	1
ग्रंथ संवत	1
नृपति वंश	1
कविवचन ग्रंथप्रयोजन	1
समस्यापूर्ति लक्षण	2
समस्यापूर्ति भेद नाम	2
अघटित वचन के भेद	2
वात्सल्य ते पूर्ति	2
उन्माद ते पूर्ति	2
गद्य ते पूर्ति	2

विषय नाम	पत्र संख्या
सूत्र ते पूर्ति (अपठित)	2
वियोग ते पूर्ति	3
घात ते पूर्ति	3
<u>द्वितीय स्थल</u>	
अघरित घटन भेद	3
स्वप्न तें पूर्ति	3
इन्द्रजाल तें पूर्ति	3
मति भ्रम तें पूर्ति	3
माया तें पूर्ति	4
चित्त तें पूर्ति	4
मंत्र तें पूर्ति	4
औषधि तें पूर्ति	4
मणि तें पूर्ति	4
मंत्र औषधि मंत्र तें पूर्ति	4
तप तें पूर्ति	4
पदभंग तें पूर्ति	4
पद बदल तें पूर्ति	4
अर्थ बदल तें पूर्ति	5
अन्य भांति तें पूर्ति	5
तीर्थ तें पूर्ति	5
वांछित तें पूर्ति	5
मनोगति तें पूर्ति	5
पुहुप तें पूर्ति	5
देवप्रसाद तें पूर्ति	6
प्रश्नोत्तर तें पूर्ति	6
उनकी आंन भांति	6
दृष्टान्त और प्रमाण तें पूर्ति	7

विषय नाम	पत्र संख्या
पुराण तें पूर्ति	7
लघु वस्तु गुरु कथन	8
कम्यादि कल्पनाते	9
सिंधु ते लघु की	9
लघुवस्तु के संग तें	9
गुरुवस्तु लघु कथन	9
युगांत तें गुरु	9
दुरावलोकन तें गुरु की लघुता	10
गुरु वस्तु के संग ते	10
एक वस्तु दो रूप	10
विपरीत विधि	10
वर्ण विपर्णय	10
चंद्र ते खेत करिवे की	11
तम ते स्थान	11
ताके उदाहरण	11
रवि तें रक्त करिवे की विधि	12
रवि शशि तम के संग बदल की विधि	12
कीर्ति ते यथा	12
कुकीर्ति ते यथा	12
सन्धा ते पूर्ति	12
चन्द्रदि तें वर्ण विपर्यय	12
ताके उदाहरण	12
अन्य वर्ण के संग में	13
अन्य भुवन में	13
पाताल में सुरलोक अवतार	13
पाताव में जगत प्रलय	13
पाताल में ग्रहोअस्त	13

विषय नाम	पत्र संख्या
पृथ्वी में सिंधु मंथन	13
पृथ्वी से सिंधु मंथन	14
पृथ्वी में प्रतिबिंब ते	14
आकाश में संग्राम ते	14
हरिश्चन्द्र पुर ते	14
स्वर्ग में सद्य गुरुता	14
उपमान ते समस्यापूर्ति	15
उपमा उपमेय तें	17
ताके उदाहरण	17
वक्रोक्ति ते पूर्ति	17
काकु ते पूर्ति	17
श्लेष वक्रोक्ति	17
निषेध में पूर्ति	17
प्रकारान्तर पूर्ति	17
ऋषिशाष ते पूर्ति	18
प्रतीति ते पूर्ति	18
अनुराग ते पूर्ति	18
लक्षणा लक्षण	19

(विवरण पूर्वगत)

ग्रन्थारम्भ

दोहा : मंगलाचरण

गणय हरी हरि हर मिहर, त्रिभुवन पास दयाल ।
विघन हरन मंगल करन, करुना करौ कृपाल ॥

श्री गुरु पिता गुलाब के, चरण कमल बस पाय ।
रचौ समस्यासार में, बार बार सिर नाय ॥

॥ ग्रन्थसंवत् ॥

संवत् उनईस सै, अड़तालीस सुढार ।
माघ शुक्ल रवि दोज में, भयौ ग्रन्थ तैयार ॥

(अर्थात संवत् 1848 माघशुक्ल दोज रविवार)

॥ अथ नृपति समय दोहा ॥

नृपति मुकटि मणि मति सदन, शील सिंधु रघुवीर ।
बूँदी पति महिशेष सौं, अति राजौ रणधीर ॥

॥ कविवचन ग्रन्थ प्रयोजन ॥

गुनगाहक रघुवीर की, रीस हेत हितकार ।
करौ परिश्रम कविन कौ, मानि महा अवतार ॥
करत समस्यापूरती, निराधार कवि लोय ।
ताते अब आधार लछि, भरि हैं सब सुख होय ॥
स्थूलाक्षर में पाठ जो, लिख्यौ छन्द के अंत ।
ताहि समस्या जानियैं, शेष पूर्ति मतिमंत ॥

कहीं कहीं कवि ने पद्य के बाद में गद्य टीका भी प्रस्तुत की है यथा :-

प्रफुलित सुमना गुणवती, असिजित प्रीति रहाहि ।
सरसा शाला मोद की, वाला माला आहि ॥

टीका :

बाला-नायिका है, वह बाला कैसी है कि - प्रफुलित कहियै प्रसन्नता सहित है, सुमना, सुन्दर मन कली, गुणवती गुणरूप, चतुरता आदि तिन करिकें संयुक्त है, अति जुत प्रीत रहांहि....., अली सखी है, सो प्रीति सहित रहै है, अर्थात सखिन कौ नायिका सौं, बहुत हित है, सरसा रस जो राग ता करिकैं सहित हैं । शाला मोद की, मोद-आनंद ताकी शाला-घर है, ऐसी तौ बाला है, माला कैसी है कि प्रफुलित सुमना- फुले हुए पुष्पन की है, गुणवती-डोरावाली है अलि जुत प्रीति रहांहि अलि-भ्रमर है, सो प्रीति सहित रहै है, जा माला के विषै अर्थात भ्रमर सुगंध के लोभ से माला के चहुँ ओर भ्रमत है, सरस, रस जो गंध रस ता करि कें सहित है, शाला मोद की अमोद-कहिए अत्यन्त मन कों, हरिवे बारौं सुगंध ताकी शाला हियै घर है । ऐसी माला है ।

अन्तिम अंश इस प्रकार है -

''करत कविन सौं बिनती, रामनाथ सिर नाय ।
होय चूक या ग्रंथ में, ताकौं लेहु बनाय ॥

॥ इति ॥

इति श्री यह बनि मंडल मंडनायनाम बून्दी पुरन्दर श्री रामसिंह नृपात्मज श्री रघुवीर सिंह महीन्द्राश्रित बंदी वंशरवतंस कविराज श्री मद्राव गुलाब सिंहात्मज रामनात कवि विरचिते **समस्यासारे** प्रकारान्तरे समस्यापूर्ति निरूपणं नाम एकादश स्तलम् ॥11॥

इति सम्पूर्णम्

संवत 1976 जेठ सुदि 6 ने रवीवारे सिंहोर निवासी चौहान कवि गोविन्द गिल्लाभाईये, प्रति प्रमाणे स्वहस्ते स्वकाजे लखी ने पूर्ण करेल छे ।

इसमें कुल 147 छन्द हैं ।

छन्द वर्गीकरण

दोहा = 24+17+7+14+18+17+13+8+15+5=138

कवित्त = 1

टीका =113+117+118+118+119+120+121=7

सवैया = 2+7+2+2=13

अन्त में पुष्पिका =

दोहा = 138

कवित्त= 001

सवैया= 013

कुल = 152

छन्द क्रम ग्रन्थ में त्रुटिपूर्ण है ।

कवि चन्द्र कृत रामायण (पत्रा : 1-III)[16]

प्रारम्भ अथ श्री कवि चन्द्रकृत रामायण

ग्रन्थारम्भ - ॥ मंगलाचरण दोहा ॥

श्री गनेश अरु शारदा, सुमरे होत अनंद ।
कछुक हकीकत रामकी, अरजकरत है चंद ॥

आदि पुरुष परमात्मा निराकार है सोय ।
भक्ति हेतु मानव भए, रामकहत सब कोय ।।
आदि अनादि जुगादि है, ताहि जपै सबकोय ।
रामचरित अद्‌भुत कथा, सुनै पुन्य फल होय ।।
अजब अजायब देव है, चार हस्त नर नील ।
जप हौं बुध बल सहित, मैं तर्क दसन सिर फील ।।
मात भवानी गीरजा, हूँ निज प्रनमूँ तोहि ।
उक्त प्रयुक्त अच्छर सरस, देहि कृपा करि मोहि ।।
जैसी जाकी बुद्धि है, उक्ती तैसी होय ।
करौं विनय सब कविन कौं, हाँसि न कीजो मोय ।।6।।

।। छन्द ।।

नगर अयोध्या राजा दशरथ, बाल राम औतार लियौ।
जनक स्वयंवर संग राज ऋषि, धनुष तोरि सिय ब्याह कियौ ।।7।।

।। दोहा ।।

परशुराम सौं युद्ध करि, सागर बाधे सेत ।
चंद अहिल्या नारि है, रावन मारन हेत ।।8।।

अंतिमांश

।। दोहा ।।

यह रामायन देखता, किये चंद चितलय ।
श्री विट्ठलेश की प्रीत सौं भय संपूरण आय ।।155।।

इति श्री दिल्ली निवासी चंद कवि विरचिते चंदरामायण संयूरन सुभंभवतु ।

।। समाप्त ।।

संवत 1973 नां जेष्ठ वेदी 8 ने गुरुवारे सिंहोर मध्ये चहुवान गोविन्द गिल्लाभाईये स्वार्थे स्वहस्ते प्रति प्रमाणे लखे छे ।

छन्द परिमणता :

दोहा = 062

छंद = 001

कवित्त	=	082
सवैया	=	009
छप्पय	=	001
कुल	=	155

॥ श्री ॥

श्री गणेशाय नमः

॥ अथ उदयपूर ना रहीस ते राजकवि वख्तारसिंह जी राव कृत कविता संग्रह ॥

अथ रसोत्पत्ति ग्रंथ[17] - प्रारम्भ यथा -

॥ मंगलाचरण गाथा ॥

ब्रज वन निकुंज बिहारी, वायारी राधा आलंबन भूता ॥
श्रंगार रस चारी, प्रगट्यहारी त्वं वंदेहम् ॥1॥
निमि दिमाव अनुभाव सात्विक स्थाई अरु संचारीय जु ।
अगंहि रस उपजाया । सो वर्तत लच्छन संयुक्ता ॥

॥ अथ रसोत्पत्ति लक्षन छप्पय ॥

कारन रूप दिखाव, एक आलंबन चितय ।
इक उद्दीपण होहि, याजु दोउन कोउ हितय ॥

अतिकमांश

॥ कवित्त ॥

प्रार्थना एती सुन करुना निधान राम,
कह्यौ यातें एकलिंग अब कहा आसूं मैं ।
तुम ही हौ दैव मेरे हम हैं दिवान तेरे,
दीजिए हजार पत्र शरना गत राखूं मैं ।
ताही छिन पत्र दियौ भलैहि शरन राखि,
एक-ये-रहेंगे मर्तखण्ड के अलाखू मैं ।
राके तब संघनी के केतेई सरूप रात,
सार निज सैन दैकें लाख विधि साखू मैं ।

॥ इति श्री उदै निवासी राव श्री बख्तार जी कृत कविता संपूर्ण ॥

छन्द -

कवित्त = 3+11+9+11= 34

सवैया = 1+1+4 = 6

कुल = 40

<u>रस विलास नं 14</u>

गणेशाय नमः

अथ श्री **रस विलास** ग्रंथ प्रारंभ

मंगला चरन ग्रंथ प्रारम्भ

मंगला चरन = गनपति स्तुति

॥ दोहा ॥

मंगल करन मतंग मुख, अति उतंग परभाव ।
सुखदायक लायक, गननायक गुन आव ॥

यह एक लक्षण ग्रन्थ हैं जिसमें काव्य लक्षणों की परिभाषा सोदाहरण दी है । विशेषरूप से इसमें रस-विलास अर्थात रस निष्पत्ति की चर्चा है ।

यथा -

अथरसोत्पत्ति वर्णन यथा - दोहा :-

रस उपजत है भाव तें, भाव सु पंच प्रकारि ।
मनि भाव अ.नुभाव अरु, सात्विक थिर संचारि ॥

॥ अथ एक के द्वै भए ॥

सो विभाव द्वै भांति को, आलंबन उर धारि ।
उद्दीपन दूजो कहत, कवि पंडित निरधारि ॥

यह ग्रंथ मध्य मान से अपूर्ण है, पत्रा पर छन्द संख्या 36 है फिर खाली पृष्ठ है तदुपरान्त पत्रा 7 पर शेष भाग का 41 वां अपूर्ण छंद है । यथा -

साई भूलि गई,
सौहन दिवाय चारे आपन छुड़ायवौ ।

तब भरि अंक बाम ले सिधारे निजधाम,
अधर कपोल चूमि कीनौ मनभायौ ।
हा हा खाति, सतराति, मीन ज्यौं तरफरात,
पिया मुसिकात देखि तिय ससकायवौ ॥4॥

43 पृष्ठों पर लगभग 343 छन्दों में लिखा गया एक वृहद् ग्रन्थ है ।

अन्तिमअंश इस प्रकार है -

रसविलास या ग्रंथ को, करि करि पढ़ै उमेद ।
रस विलास सब जगत के, समुझे सब विधि भेद ॥342॥

इति श्री राय शिवदास कवि विरचिते रस विलास ग्रंथे कवि प्रस्ताव नाम सप्तमो अंगः ॥7॥ पूरणम् ॥

लेखक वचन दोहा - (1962 संवत्)

कार्तिक वदि तिथि द्वैज रवि, दृग ऋतु निधि शशि साल।
ग्रन्थ लिख्यौ बूंदी नगर, बंदी मोतीलाल ॥1॥
लिख्यौ शोधि या ग्रन्थ कौ, कछ पति निज मनुहारि ।
तऊ अशुद्धि कहू होय तिहि, लीज्यो सुकवि सुधारि ॥

संवत 1962 मां बूंदी नगर थी लखावी घर मां राखेल प्रति पर थी संवत 1976 नां जेष्ठ सुदि 14 ने सोमवारे । सिंहोर निवासी चौहान कवि गोविन्द गिल्लाभाईये सिंहोर मध्ये प्रति प्रमाणे स्वहस्ते स्वार्थे लखीने पूर्ण करेल छे ।

भाषा शुद्ध एवं सुवाच्य है ।

छंद संख्या :-

दोहा = 198
कवित्त = 142
कुल = 340 5 छन्द नहीं हैं पत्रा 6 के ।

सुजान विलास (सुजानकवि कृत)[18]

मंगलाचरण - गनपति

॥ छप्पय ॥

जयगनेशगजबदन, रदनइक महादेवसुव ।
मंगररचितमुसुंड, शीशछबि औषधीशहुव ॥
नगतनयाकेतनय, दनुजकाननननाशकरः ।
फरसकरनमेंगहे, सहेप्रभुतासभासकरः ॥
षटवदन अनुज सुरईश हो, विघनहरन छितिसुतकरन ।
तुवजन 'सुजान' दिनरेंन, विधि, पांनि जोरि वंदित चरन ॥

इसमें पृष्ठ 22 से - बारह मासा ग्रन्थ है जिसमें 31 छन्द हैं । सुजान विलास में 133 छन्द हैं इस प्रकार प्रजान विलास तथा बारह मासा में कुल 164 छंद हैं - यथा-

छप्पय = 1
कवित्त = 71
दोहा = 17
सवैया = 69
वरवै = 6
कुल = 164

(पृष्ठ 27 पर ग्रन्थ पूर्ण होता है ।)

अंतिमांश :-

कवित जानि सब छोर के, अपनी मति अनुसार ।
भूल चूक सु सुधारि लै, कवि पंडित गुनगार ।
संवत दिग देवी भुजा, दो पस, दो उर धारि ।
भादो सुदि शित नैन तिति, भुवसुत बार विचार ।

इति श्री करौली निवासी कुंवर फकीर सिंह जी उपनाम 'सुजान' कवि विरचित 'सुजान-विलास' ग्रन्थ संपूर्णम् ।

विरह पचीसी[19]

करौली निवासी कुंअर फकीर सिंह जी 'सुजान कवि' कृत

रचनाकाल - संवत 1838 मिति पौष सुदि 9 रविवार

कुल छंद - 26

कुल पत्र - 4

लिपि कर्ता - गोविन्द गिल्लाभाई

प्रारम्भ

॥ अथ विरह पचीसी ग्रंथ ॥

- मंगलाचरण - दोहा -

बरनत बरखा बिरह कों, श्री गणपति उर धारि ।
सहज 'सुजान' सनेह के, करि अरिल्ल विचारि ॥1॥

॥ अरिल्ल छन्द ॥

करुणां वदो अपीर, न जाने हेत है ।
पहिले मिलन वियोग, फेरि लिखि हेत है ।
कौन अनौखी पीर, मरे नहिं चैन है ।

इसमें कुल 25 अरिल्ल छन्द तथा 1 सवैया है । अन्त में सवैया इस प्रकार है -

'सावन आवन भावन के, परदेस गयौ बदि औधिकौं भेरौं ।
बारह बार दई पगई बहादत है विरह डर सेरौं ।
ऐसौ बधारियैं प्रीत किये मन, जैसौ कियौ मन सुजानब नेरौ ।
ऐरे अहीर के, क्यों करियै भरि, आल कौ गाइवौ आइवौ तेरौ ॥

इति श्री करौली निवासी कुंवर फकीर सिंह जी उपनाम सुजान कवि विरचित वर्षा विरह पचीसी ग्रंथ संपूरनाय् । संवत् 1839 मिति पौष सुदि 9 रवि बासरे लिखितं लीला बालकृष्ण गोस्वामी ना स्वपढ़नार्थाय वा परोपकरायः ॥ सुजान विलास ग्रन्थ की श्लोक संख्या 550 अंके साड़ापांच सौ की है ।

करौली अग्रवाल वैश्य बिहारीलाल लेखक की पास तें ।

हमने कितनेक भाषा कविता के ग्रंथ लिखवाई कैं । मंगाय कै, उनकी साथ 'फागुन मास महात्म' नाम से कितनीक कविता (अर्थात छोटी के फाग) आई थी । वह लिखने लायक नहीं है तथापि नीचे लिखि जाती हैं ।

फागुनमाहात्म्य[20]

॥ अथ श्री फागुन महात्म्य लिखे हैं ॥

मंगलाचरण दोहा -

भगवती देवी भजो, सब देवन की यारि ।
रचि हौं याकी प्रीति सौं, फागु चरित्र सुधारि ॥

॥ छप्पय ॥

तीन खूंट मुख लाल, स्याम बैदी अति सोहै ।
परम गिलगिलौ गात गोल, मन सब को मोहै ।
दंतन ही बलि लेति, लिंग लंबो अति भारी ।
जीत्यौ सब संसार सार सीतल सुभकारी ।
झंटन कौ बन विकट अति, निकट अंतपुर गढ़ में,
पीवत घोरो रुधिर यह बसत जांघन के मठ में ।

पुनः ॥ कवित्त ॥

जेते ग्रहकाज तजि साज औ समाज सबै,
छांडि कुल कानि निज काम तन छीजीयै ।
खान पान सदन संवाद रसवादन के,
बोलन हंसन दाव भाव नैकु कीजीयै ।
और मास मान कौ, अमानौ मास फागुन लागै
मन भाए मित्रन कौ, देखि देखि जीजियै ।
आठौ जाम घरी घरी पल पल मेरी आली,
छैलन की छाती लगि खुदवौ ही कीजियै ।

॥ इति श्री गनेश कृत फाग महात्म संपूर्णम् ॥

॥ श्लोक ॥

चैत्र कृष्णो महाबाहो, कृष्ण नंदा तथैव च ।
भंग लिंग प्रचोद वाक्यं, सजति पर भंगती ॥

दोहा	=	7
चौपाई	=	1
छप्पय	=	1
कवित्त	=	18
श्लोक	=	1
छंद	=	1
कुल छंद	=	29

रचना - संवत् 1945

शब्द विभूषण : चरण केशव दास कृत[21]

प्रारम्भ :

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मंगलाचरण - सरस्वती स्तुति - सवैया

शुभ प्रभाव पुरी निशदांबर, चंद्रमनी अवतंश विराजै ।
सौरभसार लिलार मनोरह, मुक्तनहार सुकंठहि साजै ॥
बाहन हंस गती सु प्रशंसिक, पानि विपंचिक पुस्तक छाजै ।
मातु गिरा वरदान निरंतर, केशव के सब संकट भांजै ॥

॥ दोहा ॥

मैं सादर सुमिरौ सदा, शारद कृपानिधान ।
जयतु मातु वरदायिनी, दीजै वर वरदान ॥
अपनौ सेवक जानि मम, करौ अनुग्रह राहु ।
शब्द विभूषण ग्रन्थ यह, गिरा मोहि रचि देहु ॥

गनपति स्तुति ॥ सवैया ॥

वंदन भाल विराजत चंदन, विघ्न निकंदन नाम यथा ।
दायक सिद्धि सतोगन लायक, मूषक वाहन मंजु मुदा ॥
तेज विशाल कृपाल महावर, व्यालहि मात हियैं प्रमुदा ।
जै गननाथ अनाथनि नाथह, केशव मोहि सदा सुखदा ॥

॥ दोहा ॥

जय कृपालु शिव नंदवर, सुमिरौ तव पद कंज ।
मोहि निरंतर विविध विधि, देहु सुमति अति मंजु ॥

निज गुरु स्तुति/जगदीश्वर स्तुति/चार अनुबंध वर्णन/शब्दालंकार के अंग/समास लक्षण/शरद ऋतु का वर्णन/ओज गुन का लक्षण/माधुर्य लक्षण/गौडी रीति वैदरभी रीति/पंचाली रीति/समान्य ते अनुप्रास/छेकानुप्रास/वृत्यानुप्रास/अन्त्यानुप्रास/पुनरुक्त वदामास/प्रहेलिकालंकार/दृष्टांत अलंकार/संकरालंकार/वीप्सालंकार/लाटानुप्रास/यमकालंकार/मुख्य काव्य दोष/जुगुप्सा तथा अशुभ दोहा/ब्रीडा तथा ग्रामिक/संदेह तथा यतिक्रम/पुनरुक्ति/व्यर्थ/विरुद्ध कृत/लोक विरोधा/समय विरोधा/विरोध लक्षण/कर्णकटु-नग्न तथा मृतक लक्षण/विसंधान क्लिष्टार्थ/पालकी प्रबंध चित्र/पंच विरोध अंध और शब्द विरोधी बधिर/अंकसत्ता दशवर्णन/आशीर्वाद/नृप जस प्रताप वर्णन/कवि कौ वचन राज प्रति ।

अंत में

॥ ग्रन्थ संवत्सर दोहा ॥

संवत् शर फल निधि धरनि, माधव मास निदान ।
शुक्ल त्रिदशि रवि दिन कियौ, पूरण ग्रंथ प्रमान ॥

इति श्री कच्छ देस ना रहीस अचाजी चारन केशव कृत शब्द विभूषण नामक ग्रन्थ संपूर्णम् ।

दोहा	=	65
सवैया	=	11
कवित्त	=	30
छप्पय	=	13
हरिगीतिका	=	01
रसावली छन्द	=	02
कुल छंद	=	122

भूयोग[22]

कुल पत्र 16

ग्रं. क्रम. संख्या - 119

ग्रन्थ का नाम - भूयोग

साईज - 16'' 10''

विवरण 14 शब्द प्रति पंक्ति

19 पंक्ति प्रति पृष्ठ

कुल पत्रा 53

लगभग 170 छंद

यह ग्रन्थ मारवाड़ी (राजस्थानी) में अस्पष्ट लिपि में लिखी गई है । ग्रन्थ के ऊपर नाम 'भूयांग' लिखा है किन्तु अन्दर लिपि पठीय न होने के कारण विशेष विवरण स्पष्ट नहीं होता ।

कही कहीं गुजराती लिपि एवं भाषा का भी प्रयोग किया गया है ।

यथा -

'परेसावन सागर अने मारे थुथु नो भुदो जीदो करी ने मा रोग लोहु मेरो म्वते पछी सरका साथे मलवी ।'

इस प्रकार यह ग्रन्थ हिन्दी का तो नहीं लगता । लिपि अपठनीय होने के कारंण ही ग्रन्थ की विषय वस्तु स्पष्ट नहीं हो पाती है ।

रसतरंगिनी[23]

ग्रन्थ - रसतरंगिनी

साइज - 16'' 10''

प्रति पृष्ठ - 20 पंक्ति

प्रति पंक्ति - 10 शब्द

कर्ता - भानुदत्त

लिपिकार - गोविंद गिल्लाभाई

लिपिकाल - संवत् 1938

पुष्पिका - संवत् 1938 ना चैत्र सुदि 7 ने रवीवार श्री सिहोर नगर मद्ये खवास श्री गोविन्द गिल्लाभाईये आ रस तरंगिनी मुंबई ना पंडित ज्येष्टाराम मुकुंद जी नी प्रति ऊपर थी स्वार्थे स्वहस्ते प्रति प्रमाणे लखी छे । श्री श्री कल्याणयस्तु ॥ श्री ॥

यादृशंपुस्तकंदृष्ट्वा, तादृशंलिखितं मया ।

यदि शुद्धमशुद्धंवा, ममदोषानदीयते ॥
दद्क्षरं च पदभंगं, तथा च पद वर्जितम् ।
ततक्षमया करंदेवं, प्रसिद्धं परमेश्वरम् ॥
मग्न पृष्ठ कटिग्रीवा, वंद्धमुष्टिरधोमुखम् ।
कष्टेन लिखितं ग्रंथ, यत्नेन परिपालयेत् ॥
जलाद्रक्षै तैलाद्रक्षैत्, रक्षेत् शिथिल बंधनात् ।
मूर्ख हस्ते न दातव्यं, एवं वदति पुस्तकम् ॥

यह ग्रन्थ भी भानुदत्त कृत रसमंजरी है जो मूल संस्कृत भाषा में लिखी गई है । संस्कृत में होने के कारण अपेक्षित नहीं है कि विवरण तैयार किया गया ।

गोविन्दानन्द घन[24]

ग्रन्थ - गोविन्दानन्द घन
कुल पत्रा - 142
प्रति पृष्ठ - 30 पंक्ति
प्रति पंक्ति - 14 शब्द
संपादन तथा
लिपिकर्ता - गोविन्द गिल्लाभाई
लिपिकाल - संवत् 1953

पुष्पिका में - इति श्री गोविन्द कवि विरचिते रसिकगोविन्दानंद घन ग्रन्थ सम्पूर्ण। संवत् 1953 ना वैशाख वदी 5 ने शुक्रवारे श्री सिंहोर ना रहीस खवास गोविन्द वि. गिल्लाभाई ये आ दूषणोल्लास ग्रन्थ बूँदी ना रावजी गुलाब सिंह पासे थी मंगावी ने प्रतिप्रमाणे स्वार्थ स्वहस्ते लखी ने पूरौ करौ छे ।

यह एक वृहद ग्रन्थ का तीसरा भाग है । इस संदर्भ मे लिपिकार ने अंत में लिखा है । 'ग्रन्थ और कवि विषै -

रसिक गोविन्दानन्दघन ग्रन्थ के चार भाग हैं ।

<u>प्रथम भाग</u> - श्री राधा सर्वेश्वर शरण गुरु की परम्परा और कवि वंश वर्णन है ।

<u>दूसरे भाग में</u> - नवरस, भाव शांति, आदि विभावादि तथा नायक नायका का सगुन है।

<u>तीसरे भाग में</u> - पद दोष, वाक्यदोष, अर्थ दोष, रस दोष, नाटक के सोरह, अठारह, पचीस,

भेदादि हैं । और

चौथे भाग में - गान और शब्दालंकार तथा अर्थालंकार वर्णन है ।

गोविन्दानन्दघन ग्रन्थ के अंत में गोविन्द कवि ने निजविषे लिखा है -

॥ कवित्त ॥

जादौदास शाह कौ सपूत पूत शालिग्राम,
तासु तनरानी बालमुकुंद कहायौ है ।
जैपुर बसैया, बिलसैया कोककाव्यन कों,
ताकौ लगु भैया गोविन्द कवि गायौ है ।
संपति विनासी तब चित्त में उदासी भई,
सुपति प्रकाशी यातें ब्रज कौं सिधायौ है ।
अब हरिव्यास कृपा दंपति विलास-रास,
सब सुख शसि बास वृन्दावन पायौ है ॥

॥ दोहा ॥

माता गुमाना गोविन्द की, पिताजु शालिग्राम ।
श्री सर्वेश्वर शरण गुरु, बास वृन्दावन धाम ॥
श्री सर्वेश्वर शरण कें, शिख सब परचेदार ।
श्रीयुत नंद कुमार जू, सबसिकन सिरहार ॥
रच्यौ गोविन्दानन्दघन, श्री नारायण हित्त ।
कृष्णादत्त पांडे तने, दियौ जानि निजमित्त ॥
सूत्र बांध लक्षण सबै, उदाहरण सब छन्द ।
रसिक गोविन्दानन्द घन, बरन्यौ रसिक बिन्द ॥

ग्रन्थ के अन्त में तीन विशेष तालिका दी हैं जिनमें प्रथम तालिका ग्रन्थ के विषयों का अमुक्रम है, दूसरी तालिका में इस संग्रह ग्रन्थ में सम्पादित कवियों की सूची है तथा तीसरी तालिका में सहायक ग्रन्थों की सूची दी है - इसके दूसरी और तीसरी तालिका द्दष्टव्य है -

प्रथम तालिका का विवरण ग्रन्थारम्भ के साथ आगे दे रहे हैं । दूसरी तालिका में कुछ 44 कवियों का इस प्रकार उल्लेख है -

'दूषण भूषण दो भाग में जितने कवि की कविता है उनके नाम नीचे लिखे हैं -

1. अलखत रंग
2. आनन्द घन
3. कविन्द
4. कालिदास
5. कासीराम
6. किसन
7. किशोर
8. कुलपति
9. केशवदास
10. कृष्ण
11. गिरधर
12. गोविन्द
13. गंग
14. घनश्याम
15. चतुरबिहारी
16. चिन्तामनि
17. जग जीवन
18. ठाकुर
19. तुलसीदास
20. दूलह
21. देव
22. देवीदास
23. नरोत्तम
24. नंददास
25. नागरीदास
26. नाथ
27. निपट निरंजनी

28. पुरवी
29. पुराण
30. प्रसिद्ध
31. बिहारीलाल
32. ब्रह्म (बीरबल)
33. मतिराम
34. मुकुन्द
35. रसखानि
36. लालकवि
37. शिरोमणि
38. शोभ
39. श्रीपति
40. सुन्दर
41. सेनापति
42. सोमनाथ
43. हठी
44. हित हरिवंश

सहायक ग्रन्थ सूची इस प्रकार है -

यह ग्रन्थ में जिन ग्रन्थों की कविता ली है, उन ग्रन्थ का नाम -

1. रस पियूष
2. रस रहस्य
3. अलंकार माला
4. भाषा भूषण
5. करणामरण
6. कवि प्रिया
7. राम चन्द्रिका
8. बिहारी सतसई
9. रसराज

10. सुन्दर श्रंगार

11. रस चन्द्रोदय

12. वृन्दसतसई

13. किशन बावनी

14. काव्य प्रकाश संस्कृत

15. मुकुन्द कृत अलंकार के ग्रन्थ

16. देवीदास कृत नीति

प्रथम सूची मे रसिक गोविन्दानन्द घन वृहद ग्रन्थ की समग्र विषय सूची इस प्रकार दी है -

प्रथम भाग

दोष लक्षण/दोष भेद

पद दोष - श्रुतिकट/संस्कारहत/अप्रयुक्त/असमर्थ/निहितार्थ/अनुनितार्थ/निरर्थक/अवाचकः/अवाचक/अश्लील/संदिग्ध/अप्रतीत/गाम्य/नैयार्थ/क्लिष्ट/अविमृष्टविधेयांश/विरुद्धमति कृत

वाक्य दोष - प्रति कूल/वृतहस्त/न्यूनपद/अधिकपद/कथितपद/पतत्प्रकर्ष/समाप्त पुनरुक्ति/अद्धंति/केत वाचकः/अयवन्मतयोग/अनभिहित वाच्य/अस्थानस्थ पद/अस्थानस्थ सपात/संकीर्ण/गर्भित/प्रसिद्धहत/मगनप्रक्रम/अक्रम अमतयदार्थ

अर्थदोष - अपुष्टार्थ/कष्टार्थ/व्यर्थ/अपार्थ/व्याहत/पुनिरुक्ति दुःक्रय/ग्राम्य/संदिग्ध/निर्हेत/प्रसिद्ध-विद्याविरुद्ध/कवि सम्प्रदाय विरुद्ध/शास्त्र विरुद्ध/अनवीकृत/नियम में अनियम/अनियम मे नियम/विशेष में अविशेष/अविशेष में विशेष/साकांक्षा/मुक्तपद/सहचर भिन्न/प्रकाशित विरुद्ध/विधि अनुवाद अयुक्त/त्यक्त पुनः स्वीकृत/अश्लील अमंगल अश्लील/ ग्लानि अश्लील/दोष निवारण

रस दोष - इसी तरह से

<u>भाग दूसरे</u> में गुण हैं

<u>तीसरा भाग</u> में शब्दालंकार (कुल 23)

<u>चौथे भाग</u> में अर्थालंकार (कुल 54)

यह ग्रन्थ अपूर्ण प्रतीत होता है क्योंकि इसके प्रारम्भ से ही ज्ञात होता है कि इससे पहले खण्ड में बहुत कुछ दिया जा चुका है । इसमें **तृतीय प्रबंध प्रारम्भ** लिखा है । अथ **दूषण उल्लास** से यह ग्रन्थ इस प्रकार प्रारम्भ होता है -

॥ अथ दूषण उल्लास निरूपण ॥

गद्य - जद्यपि गुण अलंकार रस के उपकार कह यातें निरूपण करिवे योग्य हैं, तौ हू दोष ही प्रथम कहत हैं । काहे ते कि सम्पूर्ण कवि प्रथम दोष ही कहते आए हैं - दोष लक्षनः मुख्यार्थ कौं न्यून करैं सो दोष । मुख्यार्थ रस है, रस के आश्रय तें वाक्य हू मुख्यार्थ है दोउन के उपयोगित्व तें शब्द हूं शब्दन के बरन हू मुख्यार्थ रस है, रस के आश्रय तें वाक्य हू मुख्यार्थ है दोऊन के उपयोगित्व तें शब्द हू । शब्दन के वरन हू मुख्यार्थ हैं । याते मुख्यार्थ कहिबे में इन सबन कौ बोध होत है । दोष पॉच निधि .....

कवित्त - (उदाहरण)

गोविन्द सें पिय सों न मान करि मानिनी तू ।
मानि कह्यौ मेरौ मन मान ऐसे में न चहियें ।
लघु दिन दीह रैंनि मैन की फिरत सेन,
ऐंन हु लजात आंसु देंसे को लो सहियैं ।
सीतल अकास भूमि भूषन बसन भौंन,
सीत भीत मीत, सों मिलाप करि रहियै ।
लीजै परजंक यै निशंक अंक भुज भरि,
ठाठ सौं करेंजे पटु ऐसे कैसे कहियैं ॥
यहॉ ठाठ सौं करेंजे पटु की ठौर,
करकस बोल बाल यौं कह्यौ चाहियै ।

अन्तिमांश पहले दिया जा चुका है । कुल छन्द संख्या - 774.

संख्या 123 अमर सिंह मुखारबिंद मकरंद कमल नयन पत्रा - 1/152

संख्या 124 शृंगार समुद्र - बेत्रीप्रसाद 153/191

संख्या 125 नखशिख - कान्ह कवि 192

संख्या 126 शिखभरव - रस आनन्द 205

संख्या 127 रस आनंद चरित्र - रस आनन्द 225

संख्या 128 रस आनंद कृत-फुटकर कवित्त 226

संख्या 129 भरतपुर के राजन की वंशावली 227

इस समग्र ग्रन्थ को 'कविकुल विनोद ग्रंथ' नाम दिया गया है। इस एक ही बंध में 7 ग्रंथ समन्वित हैं। विवरण -

ग्रन्थ - कवि कुल विनोद ग्रन्थ (भाग - 3)[25]

अथ श्री रामसिंह मुखार बिंद मकरंद ग्रंथ ॥

कर्ता - कमलनयन

साइज - 16'' X 10''

प्रतिपृष्ठ - 30 पंक्ति

प्रतिपंक्ति - छन्दानुसार

लिपिकार - गोविन्द गिल्लाभाई

पुष्पिका में - लिपि - गुजराती

'इति श्री मत्कविकुलभूषण गोकुलालंकार श्रीमद्गोस्वामी वल्लभाचार्य चरणा र्विदमकरंदा स्वदित गोकुलस्थ रैहस्थ श्री कृष्ण महाकवि राजात्मज श्री गोकुलकृष्ण कवि वल्लभतमय कमलनयन (वल्लभतनय) विरचिते श्रीमत्परमसिंह मुखार्विंद मकरंद ग्रन्थे श्रंगारादि नवरस निरूपण नाम पंचदशम् नवरस निरूपण नाम पंचदशम् स्तरंग ॥15॥

यह ग्रन्थ सम्भवतः अपूर्ण है, क्योंकि इसकी पन्द्रह तरंग तो व्यवस्थित और पूर्ण है किन्तु इसके बाद कवि ने अन्य स्थाई भाव वर्णन प्रारम्भ किया है, इसमें श्रंगार-हास्य, करुण, वीर, आदि के वर्णन में निम्नांकित स्थाई भावों का वर्णन है -

रति - हास्य - शोक - क्रोध - उत्साह - भय - ग्लानि - विस्मय - निर्वेद।

तत्पश्चात षटऋतु वर्णन है - इसमें भी - वसंत - ग्रीष्म -वर्षा - शरद - हेमन्त तथा शिशिर का पूर्ण वर्णन है, किन्तु अन्य का छन्द दंडक पूर्ण नहीं है यथा -

॥ इति षटऋतु ॥

॥ दंडक ॥

एक सौ अटल, राज सौं निरोग देह,
तीन सौं प्रताप अरिगन निदरयौ करै ।
चार के प्रचारन ते, रति उपचारी पंच,
छहन के .....

(पत्रा 150)

नोट - ब्रजभाषा में गुजराती लिपि में लिखा यह एक लक्षण ग्रन्थ है जिसमें राजवंश वर्णन की प्रशस्ति से ग्रन्थारम्भ होता है ।

क्रम इस प्रकार है -

राजवंश वर्णन / अजीत सिंह के पराक्रम का वर्णन / विसन सिंह वर्णन / राजा राम सिंह का वर्णन / शौर्य / औदार्य / गुन / यश / प्रताप / देश वर्णन / बूँदी वर्णन /पंडित बर्नन /कवि वर्णन ।

कवि वर्णन में कवि ने स्वपरिचय इस प्रकार दिया है -

॥ हरिगीत ॥

कहॉ लौं बखानौ सुजस तुम्हारौ विप्रकुल मण्डन किए ।
वडनगर वासी, सिव उपासी, दुष्ट जन खंडन किए ।
वडजाग जीवन शोभित अमृतलाल सुवेश है ।
कविता सुरस में लीन दोऊ लाल चंपा देख है ।

॥ हुल्लिका छंद ॥

चारन कुल मंडन, अरि दल खंडन, सूरजमल्ल उदार लसैं ।
जै अंब उपासी, निजग्रहवासी, मंडिदान के कुँवर जसैं ।
कविता के लोभी, अति रस भोगी, नृपति कृपा तें नित विहरै ।
पर काज करैया, पीर हरैया, देस देस में जस फहरै ।
माथुर कुल अंसी, चौबे बंसी, बालकृष्ण आनंद रहै ।
निज रूप उजागर, कविता सागर, रंग रसीली बात कहै ।
बूँदी में राजै, निज जन काजैं, नृपति कृपा ते मोद भरें ।
हरिभक्ति निरंतर नेकुन अंतर श्री वल्लभ के नाम परे ॥

॥ दोहा ॥

कवित बनावन में चतुर कविता रस में लीन ।
परकाजी हरिलाल हे, औ रसरंग प्रवीन ॥
कविजन मन राजी करैं, परकाजी तुम नाम ।

बलबन्दन कीटत करत नंदराय सुत स्याम ॥

इसके अनन्तर / वैद्य वर्णन / सैन्यदल वर्णन / गज वर्णन / तुरंग वर्णन / रथ वर्णन / सामंत वर्णन / मंत्री वर्णन / मीसंजी पीर वर्णन / चौगरन मौरी वर्णन / आंवूसर वर्णन / मेडक दरवाजा वर्णन / दधमथ माता वर्णन / फूल सागर वर्णन / खसरतना/ तलवार वर्णन ।

प्रथम तरंग में कवि वंश वर्णन है । इसमें छन्द संख्या 18 से 'कृष्णभक्त कवि' के कवित्त हैं ।

19 वां छन्द गोकुल कृष्ण कवि का है - इसी प्रकार नवल कवि राम कवि तथा जगन्नाथ कवि, जीवन कवि हरि कवि के कवित्त भी हैं । अन्य तरंगों में काव्यांग विवेचना भी है ।

ग्रन्थारम्भ -

॥ मंगलाचरण ॥ सोरठा -

सुमरत मोहन स्याम, स्यामा नित लालित रहै ।
पूरत मन के काम, नंदनन्दन आनंद करे ।

कवित्त -

अन्त .... किया जा रहा है ।

श्रृंगार समुद्र ग्रन्थ[26]

कर्ता - बेनी प्रसाद

लिपिकार - गोविन्द गिल्लाभाई

अन्य विवरण - पूर्ववत

कुल छन्द - 264

आरम्भ :- दोहा उल्लास - दो

कहत नायका नायकहिं, कवि करि सुमति उद्योत ।
आलंबन श्रृंगार के, दुहू परस्पर होत ॥

इसमें नायिका भेद निरूपण है ।

अन्त में पुष्पिका :- दोहा

सत्रय सै पचावने सावन सुदि दिन रुद्र ।
रसिकन के सुख दैन कौ, भौ शृंगार समुद्र ॥

इति श्री महाराजाधिराज जगत राज विनोदार्थ कवि वेनी प्रसाद विरचिते श्रंगार समुद्र ग्रंथे नायक, सखा, सात्विक, शृंगार अवस्था दर्शन, वर्ननो नाम द्वितीय उल्लास श्रंगार समुद्र ग्रंथ सम्पूर्ण - यह शृंगार समुद्र ग्रंथ **मथुरा निवासी चौबा नवगीत कविराज** के पास सें लायकें संवत 1954 का ज्येष्ठ वद 5 गुरुवार के दिन श्री सिंहोर मध्ये चहुआन गोविन्द गिल्लाभाई ने स्वार्थ स्वहस्ते यथा प्रति लिख कै पूरन किया है ।

कान्ह कवि कृत नखशिख

पत्रा -192 से 204 तक

विवरण पूर्ववत्

लिपि - हिन्दी नागरी

इसका प्रारम्भ :-

॥ मंगलाचरण कवित्त ॥

मूषक सबारी दुष्ट दूषक संघारी पुष्ट
पूषक प्रहारी कोटि विगन कों रंदा है ।
लम्बोदर नाम पूजै 'कान्ह' मन काम कोरि,
सूर कौ सौ धाम भाल चंदन कौ विंदा है ।
बडे बरदानी सेवे सारदा भवानी देवौ,
मुक्ति मनमानी धेवौ पापन कौ फंदा है ।
शोहे गन झुंड पर चंद नभ शुंड पर,
सुंड पर कंज धरैं मुंड पर चन्दा है ।

इसके अनन्तर निम्नलिखित विषयों पर सोदाहरण लक्षण दिए हैं -

पगनख/पदांगुली/पद/तरवा ललाई/एड़ी/पाइजेब/पींडुरी/जघन/नितम्ब/कोटि/किंकिनी/नाभी/उदर/त्रिवलि/रोमराजी/कुच/कुचललई/कुचस्यामता/कंचुकी/हस्तनख/अंगुरियां/हथेरी/कंकन/चूरी/भुज/भुजमूल/पीठि/ग्रीवा/सतलरी/चिथुक/अधर/रसना/वानी/हासी/नासिका/नथ/बेसरी/कपोल/कपोलगाड/बरुनी/पलक/नैनकोये/नैनडोरे/नैन/सूधीचितवन/कज्जल/तारे/भृकुटी/भाल/बैंदा/अलक/कर्ण/कर्णफूल/मांग/पाटी/शीशफूल/

वेदनी/केश/छूटे बार/बेनी/जूरा/मुखमण्डल/अंग सुबास/नखशिख

अन्तिमांश - 'इति श्री कवि कान्ह विरचिते नखशिख ग्रन्थ समाप्तः संपूरणम् ॥'

इसमें कुल 72 छन्द हैं ।

कवित्त - 70

चौपाई - 1

सवैया - 1

शिखनख[27]

कवि रस आनन्द कृत

लिपि हिन्दी नागरी ब्रजभाषा

विवरण पूर्ववत

प्रारम्भ - ग्रन्थ रचनाकाल सं. 1792

लिपिकाल - 1892

॥ अथ श्री कवि रस आनन्द कृत शिखनख ग्रन्थ प्रारम्भ ॥

॥ मंगलाचरण दोहा ॥

इस आनन्दमंय रूप की, नैननि साधि समधि ।
जग बाधा निस्तार हित, राधा चरन अराधि ॥

छप्पय -

वर्णन

केश/पाटी/वेनी/मांग/माल/वैदी/गुलाल-आद्र/भृकुटी/अलक/नेट/चिकर्णन/तारिका/कज्जल/नाशिका/नथ/अधर/दशन/रसना/बानी/हास/कपोल/कपोल-गाड/कपोल-तिल/भवन/ठोड़ी/चिबुक/मुख/ग्रीवा/मुज/कर/कुच/कंचुकी/उदर-रोमावली सहित/त्रिवली/नाभी/कटि/नितम्ब/जंघा/चरन/जावक-आंगुरी/नख/तरवा/नूपुर/पायल/गति/भूषन/गुराई/जरकसी/सारी/दामन/षोडस श्रंगार/आशिष ।

पुष्पिका -

राम निद्धि बसु चंदजुत, कहि संवत सुक हानि ।
ब्रज कृष्णा तेरस सुदिन, पूरन ग्रंथ प्रमान ॥

सिद्धि श्री जदुवंश वसंत श्रीमन्महाराजाधिराज श्री वृजेन्द्र बलवंत सिंह विनोदार्थ

कवि रस आनंद विरचिते शिखनख सम्पूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ मिति जेष्ठ कृष्णा-13 संवत 17 93 हस्ताक्षर कवि रस आनंद के भर्तपुर मध्ये ॥

कवि रस आनन्द जी भरतपुर पासे ना बेसवा ग्राम ना रहेवासी अने जात ना जाट हता, तेमनो जन्म बेसवा ग्राम मां सं. 1792 मां थयो हतो । तेओए 77 वर्ष नी उमर भोगवी ने कायम भरतपुर मां रहेता हता । तेमना करेल ग्रंथो ना नाम :

1. समर रत्नाकर ग्रन्थ (जैमिनी अस्वमेघ की भाषाकर)
2. संग्राम कलाधर (भारत के वैराटपर्व की भाषा) नृप बलवंत सिंह भाटे ।
3. मौज प्रकाश - तेमां बलवंत सिंह महाराज की अद्‌भुत राजक्रीड़ा वर्णवी छे ।
4. शिखनख - नृप बलवंत सिंह माटे
5. गंगा भूतल आगमन - बलवंत सिंह माटे
6. विजय विनोद - करौली ना राज माटे । (लड़ाई)
7. हित कल्पद्रुम - (हितोपदेस भाषा) नृप जसवंत सिंह माटे ।

कवि रस आनन्द जी के फुटकर कवित्त[28]

नैन वर्णन के दो कवित्त -

निसि सपने में एक सांवरौ अनूप देखौ,
ताके रस आनंद सरूप में हुलसी गई ।
गही कर कंज मंजु चुबक चुबक मेरे,
गुंज नथली की छबि अधरन धसि गई ।
सिसिकी भरूं मैं ज्यौ लौ कसकि भुजनि पर,
दोऊ कर जोरैं उन में हूँ मुसि हसि गई ।
बैनन पत्यात करयौ चाहत कछु जतन,
हाय इतने में नींद नैनत ते नसि गई ।

॥ कवित्त ॥

आले होत सेज के उसीसे या के सजनी री,
रोवत ही रोवत में रजनी निपह जात ।
सखिन सुबास के बिछाये जे कुसुम पास,

बिरह उलास जे हुतास है उधर जात ।
प्यारी रस आनंद की, अननिष आंकिन में,
नींद बसिवे के काजे जब ही निकर जात ।
जात जात आगे कौं, दिखात अश्रुपात सो,
दरात बूढ़वे तें यातें पाछे कौ पलट जात ।

इसमें केवल दो ही छन्द दिखाए हैं ।

भरतपुर महाराजान के पूर्वजों की (जादौं की) वंशावली । (पत्रा - 227)[29]

राजा बिजै पाल ताकौ तिहौनपाल, ताकौ भवन पाल ताकौ सूहे ठाकुर, ताके सोद और सांवरे, सांवरे के लाखे ताको बालचंद ताके जटिन आई होडल कसोहटो, ताके बेटा सुरद, विरद, सुरद कौ धेनु ताकौ भीम, ताको मनय, ताकौ भोज ताकौ कामथौ, ताकौ भूरे ताकौ रोरिया, ताकौ पंचे, ताकौ महु ताकौ सुन्दर ठाकुर, ताकौ पृथ्वीराज, ताकौ मकन ताकौ खनु, ताकौ ब्रज, ताकौ भरवसिंह, ताकौ बदनसिंह राजा (बदनसिंह के 27 पुत्र थे), ताकौ सूरजमल्ल राजा (ताके और बेटा अखैसिंह रामवल - भेदसिंह - भवानी सिंह) सूरजमल के बेटा झवाहर सिंह - नाहर सिंह ।

सूर्यमल उर्फ सुजान कौ चार पुत्र थे उनके नाम - जवाहर सिंह - रतनसिंह - नवलसिंह तथा रणजीत सिंह ।

- इसमें कुल इतना ही वर्णन है ।

ध्यान बत्तीसी भूधर कवि कृत[30]

रजिस्टर जिल्द

लक्षण ग्रन्थ

लिपिकार - गोविन्द गिल्लाभाई ।

इस ग्रन्थ में अनेक छोटे छोटे काव्य ग्रन्थ लिपिबद्ध हैं यथा -

संख्या - 130 - ध्यान बत्तीसी

संख्या - 131 - नखशिख

संख्या - 132 - सुदामा चरित्र

संख्या - 133 - मांझा

संख्या - 134 - बरवै नायिका भेद

संख्या - 135 - परतीत परीक्षा

संख्या - 136 - ब्रजलीला

संख्या - 137 - वियोग बेला

संख्या - 138 - कृपा कन्द

संख्या - 139 - रूप मंजरी

संख्या - 140 - विरह मंजरी

संख्या - 141 - रस मंजरी

प्रारम्भ में कुछ विषय तालिका दी है जिसमें -

1. ध्यान बत्तीसी ग्रन्थ
2. हस्तामलक वेदान्त
3. रस मंजरी - रस मंजरी की नंददास कृत वर्ण्य विषय तालिका दी है - (यह एक नायिका भेद ग्रन्थ है)
4. विरह मंजरी
5. रूप मंजरी
6. कृपा कंद
7. वियोग वेली
8. ब्रजलीला
9. प्रतीत परीक्षा
10. बरवै नायिका भेद
11. खानखाना कृत वरवै छंद
12. वल्लभ रसिक कृत मांझ
13. सुदामा चरित्र
14. नखशिख - मंडन कृत

ध्यान बत्तीसी का प्रारम्भ इस प्रकार है -

॥ श्री ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अतिहि छोटे ग्रंथ का संग्रह -

अथ ध्यान बत्तीसी ग्रन्थः

॥ सवैया ॥

मोर किरीट लसै सिर चारु ललाट दिपै रबि चंद कला की ।
बांके कटाक्ष विशाल महादृग, कुंडल लोल कपोल थला की ।
दंतनि की दुति कंठसिरी मुक्ता कर कंकन छाप छला की ।
नूपुर की कटि किंकिनी की उर तें न टरै छवि नंदलला की ।

इसमें कुल 32 छंद हैं जिनमें सवैया 14 तथा 17 घनाक्षरी कवित्त हैं ।

अन्त में भगवान श्री कृष्ण के सुन्दर स्वरूप का यशगान है । अन्त में लिखा है-

इति श्री कवि भूधर विरचित श्री ध्यान बत्तीसी ग्रन्थ संपूर्णम् ॥ समाप्तम् ॥ इति संपूर्णम्॥

इसीमें पत्रा 7 से नया ग्रन्थ है -

हस्तामलक वेदान्त ग्रन्थ -

प्रारम्भ इस प्रकार है -

प्रश्न कवित्त

को हौ जू, कहाँ ते जाए, जाउगे कहाँ कौ तुम,
शिष्य कौन के हौ, हमैं नाम कहि दीजियैं ।
प्रीति के बढ़ाइवे कौ प्रगट बताए दीजै,
जाति कुल आश्रम बरन भेद कीजियैं ।
सुर हो कि नर हो, कि नाग हों कि जक्ष हो कि,
रक्ष हों पिशाच कहौ अक्ष भरव भीजियै ।
अखैराम दीसत हौ बालक-से सांची कहौ,
क्षमा उर गहौ बात बूझत न खीजिए ॥

उत्तर कवित्त -

सुर ना नाग जक्ष जानौ न अदेव हमै,
क्षत्री द्विजराज वैश्य सूद्रहू न मानियैं ।
ब्रह्मचारी ग्रेही वानप्रस्त दंडी जेते भिक्षु,
विचारी मन यौं उरधारि न वखानियैं ।
सिद्ध गंधर्व सूत मागध विचारि मन,

जपी तपी जोगी मति भूलि उर आनियैं ।
हमैं निराधार औ अधार सब जीवन कौ,
भूपन कौ भूप निज बोध रूप मानियै ।।

इसमें कुल 15 घनाक्षरी छन्द हैं - इसमें अखैराम - जगदीश आदि कवियों के कवित्त संग्रहीत हैं ।

नखशिख[31]

- मंडन मिश्र कृत
- रजिस्टर साईज
- नखशिख
- मंडनमिश्र
- गुजराती लिपि
- लिपिकार गोविन्द गिल्लाभाई
- लक्षण ग्रन्थ
- पृष्ठ अति जीर्ण फटे हुए ।

प्रारम्भ - अथ मंडन मिश्र कवि कृत नखशिख ग्रन्थ

केश वर्णन - कवित्त -

प्यारे भू कौ गरब गयंद मनमंथ याहि,
जड़तें इखारयौ मानौ डोरा वाके, मूल के ।
केसर है मंडन तमाल बाल फूल के कि,
मरकत मनि के किरन रस फूल के ।
सैवली सनेह ह्वै सिंगर रस धार किधौं,
औषधी कौ सार कीनो विरहा के सूल के ।
जीवन अपार जंबुनदी कौ सिवार मेरी,
प्यारी तेरे बार किदौ तार मकतूल के ।

इसमें ललाट/भृकुटी/कान/बरुनी/नैन/नाक वर्णन के बाद पत्रा - 3-4-5 तथा 6 नहीं हैं । पत्रा 7 में ग्रन्थ समाप्त हो जाता है ।

इसके बाद समस्या पूर्ति के कवित्त हैं । ये कुल 5 कवित्त हैं ।

सुदामा चरित्र[32]

- नरोत्तमदास कृत
- रजिस्टर आकार
- लिपिकार गोविन्द गिल्लाभाई

पृष्ठ - 111 से प्रारम्भ,

प्रारम्भ -

मंगलाचरण सोरठा -

गणपति कृपानिधान, विद्याबुद्धि विवेक जुत ।
देहि-मोहि वरदान, प्रेमसहित हरिगुन कहौ ।
हरि चरित्र बहु भाई, शेष दिनेश न कहि सकै ।
प्रेम सहित चित लाई, सुनौ सुदामा की कथा ।

॥ दोहा ॥

विप्र सुदामा बसत है, सदा आपने धाम ।
भिक्षा करि भोजन करै, हिये जपै हरिनाम ॥

अन्त में -

कृष्णा सुदामा मिताई, करी नरोत्तम दास ।
कहत सुनत सादर करैं, कृष्ण भक्ति उरबास ।

इति श्री नरोत्तम विरचिते सुदामा चरित्र ग्रन्थ संपुरणम् । समाप्त ॥

विक्रम संवत् 1956 का अषाढ़ सुदि 16 गुरुवार के दिन सिंहार में चहुवान रजपूत कवि गोविंद गिल्लाभाई ने यह सुदामा चरित्र कवि नरोत्तम कृत भरतपुर के महाराजा के पुस्तकालय में से मोरबी के राजकुमार श्री हरमयजी साहब मारफत मंगलवाय के इन पर सों यह प्रति स्वार्थे स्वहस्ते लिखकें पूरन की हैं ।

श्री कल्याणमस्तु - श्रीरस्तु - तथास्तु

अन्त में दो कवित्त 'अहमद' के सुदामा विषे दिए हैं ।

मांझ[33]

- मांझ
- कवि वल्लभ रसिक कृत

- पत्रा 101 से प्रारम्भ् से 110 तक

- कुल 58 छन्द हैं

- लिपिकार - गोविन्द गिल्लाभाई

प्रारम्भ - मांझ

पूरन शशि मडल की किस्मै मनि मंडल में आई ।
चमकि चमकि चहुं दिशि फूलिन निज चांदिनी बिछाई ।
अंबर पर सुन्दर तारागन छाति छपाई तनाई ।
वल्लभ रसिक विलास रस उल्लास ग्रांस सुधि आई ।

अन्त -

हम जुगल महल रस कुंज अलिंदा संधि नजानै ।
रसदरिंदा वृन्दावन-गन चरित्र नंद गहि छानै ।
हाहिर के बासिंदा करै सु को मन में आने ।
वल्लभरसिक चुनिंदा बिन को भिंदा सुक का पहिचानैं ॥

इति श्री वल्लभरसिक विरचिते मांझ संपूर्णम् । समाप्त ॥

इसमें राधाकृष्ण का प्रशस्ति गान है ।

बरबै छन्द[34]

ग्रन्थ - बरबै नायिका भेद

पत्रा - 95 से

अब्दुल रहीम खानखामा - रहीम दास जी

- लिपिकार - गोविन्द गिल्लाभाई

प्रारम्भ -

वरवै छन्द लक्षण -

बारह कला विराम करिय पुनि सात ।
आने सकल पद वरवै अढतिस मात ॥

नायिकाभेद प्रारम्भ -

अत स्वकीया नायिका वर्णन -

वरवै छन्द -

अमरन बालम सूरति, देख व चाद ।
हाथ न बलया चारिक, राय न राद्र ।

मुग्धा -

वरष दसक ते सुकीया, मुग्धा होई ।
धहर सरस बरसन कों, नौ इति होइ ॥

इसमें कुल 46 वरवै हैं ।

इसके आगे अन्य वरवै छन्द हैं - यथा -

अथ खानखामा कृत वरवै छन्द यथा -

टेकवा करे तयोलिनि, ऊंचि दुकान ।
हरत हंसत मनु फेरत पान ॥ गुमान ॥
तीसमि तकनि तवाकिनि वाके नैन ॥

ये भी कुल 13 वरवै हैं ।

परतीत परीक्षा[35]

- कवि बालकृष्ण कृत

- कुल छन्द - 64 (दोहा) (पद्धरी)

- लिपिकार - गोविन्द गिल्लाभाई

पत्रा - 86 से

आरम्भ - अथ प्रतीति परीक्षा ग्रन्थ - मंगलाचरण -

जय जय श्री राधिका चरण कमलनि चित लाऊं ।
राधापति कौं सुमरिकैं राधा पति गाऊँ ॥
जे राधापति गावई, ते यह फल पखैं ।
दुष्ट दोष दूर्बर्धना, दुबुर्द्धि नसावैं ।

अन्त में -

राधा राधा रवन के सो अति मन भावै ।
सुनै सुनावै फिरी सुनै, अति प्रेम बढ़ावै ॥
बालकृष्ण की कृपा जू अभिलाषा पुजावै ।
अपनी आशा भक्ति कौं, देकैं अपनावै ॥

इति श्री कवि बालकृष्ण विरचित परतीत परिपत्रा संपूर्णः ॥ समाप्त ॥

राधाकृष्ण की प्रशस्ति एवं प्रार्थना है ।

ब्रजलीला[36]

- ब्रजलीला - उद्धवगोपीसंवाद
- कविचंद गुसाई कृत
- कुल छंद - 111
- पत्रा, 69 से प्रारम्भ
- लिपिकार - गोविन्द गिल्लाभाई

प्रारम्भ

अथ चंद गुसाई कवि कृत अरिल छन्द ब्रजलीला उधवगोपी संवाद प्रारम्भ । अरिल छन्द -

बनि ठनि के इति आइ कन्हाई भोर ही ।
मुरली मधुर सुनाई सबै हम भो रही ।
सखि वाके छल छन्द, कहो धो को कहै ।
चंद रसिक नंद नन्द बन्यौ जिनि कोक है ॥

अन्त में -

तब चित लीनौ चोरि, सुहित करि शोच हे ।
अब सु बढ़ावत हियै, अहित करि सो चहै ।
कब आवै ब्रजनन्द करौ किन मुदई ।
ऊधौ तजि छलछन्द, कहौ किन मुदई ॥

इति श्री कवि चंद गुसाई कृत अरिल ब्रजलीला ऊधवगोपी संवाद संपूरणम् - समाप्त-

इसमें भी कृष्ण प्रशंसा ही है ।

वियोगवेली[37]

कवि आनन्द घन कृत

लिपिकार - गोविन्द गिल्लाभाई

कुल छन्द - 41

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

पत्रा - 67 से प्रारम्भ

वियोग पर आधारित

प्रारम्भ - अथ वियोग वेली ग्रन्थ प्रारम्भ

सलौने स्याम प्यारे क्यों न आवो ।
दरस प्यासी भरे तिनिकों जिवावो ।
कहा हों जू, कहाँ हों जू, कहाँ हौ ।
लगे ये प्रान तुम सौं जहाँ हौ ।

गोपियों के कृष्णा से वियोग को ही यहाँ बहुविधि चित्रित किया गया है -

अन्त में -

सदा आनन्द के घनस्याम संगी ।
जियो ज्यावो सुधा प्यावो अभंगी ।
सुनो अब गोकुलेस सुजान जानी ।

इति श्री आनन्दघन कवि विरचित वियोग वेली ग्रन्थ संपूर्ण ॥ समाप्तः ॥

कृपाकन्द[38]

घन आनन्द कवि कृत

कुल छन्द 57

कवित्त + सवैया[39]

लिपिकार गोविन्द गिल्लाभाई

प्रारम्भ-

॥ मंगलाचरण कवित्त ॥

नेक उर आए ही बहुत दूर दुरि जात,
ताप बिन ताहि आय नंदन कृपा करै ।
लगन दै लागनि दै, पाग अनुरागनि दै,
जागनि जगाइ लै कैं मंदन कृपा करै ।
बानी के विलास बरसावै गनआनन्द व्है,
मूढ़ हू प्रगट गूढ़ छन्दन कृपा करै ।
आरति निकंदन मिलावै नंदनंदन सौं,

आनन्द न मेरी मति वंदन कृपा करैं ।

भगवान की कृपा का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए ही विविध छन्द रचे गए हैं -

अन्त में -

दौरि दौरि थक्यौ पै थके न जड दौडनि तें,
गन मूले मन की दूरी न कछु तो तेरे ।
तातें ठोर दीजै याहि सुधि लीजै मोद घन,
बूझिये न विदायो अनाप तोहि होते रें ।
हाल हाइ है मोही हारिकें कहत हाहाँ,
आह बनी अब व्है है वही रची जो तेरे ।
आस विसबास दें असाधनि हू सधि लै न,
साधन कृपा है और कहा सदे या तेरे ।

॥ समाप्तम् ॥

गोविन्द गिल्लाभाई की प्रशस्तियाँ[40]

-रचयिता गोविन्द कवि

आकार : 10'' 8''

प्रति पृष्ठ : 20 पंक्ति

प्रतिपंक्ति : छन्दानुसार

कुलपत्रा - 25

लिपिकार - गोविन्दगिल्लाभाई

इसमें :- प्रारम्भ में लिखा है -

'कवि गोविन्द गिल्लाभाई ने गुणनी तथा तेमनी कविता नी बीजा कवियों ए कविता में करेल प्रशंसावाणी - कविता नो संग्रह -

- यथा -

काशीना (बनारस ना) रहीस नारायण कवि जो सरदार कवि ना शिष्य हता, तेमणो

संवत् 1931 ना वर्ष मां महारी पर पत्र लखेलो तेमां लखेल कविता नीचे मुजब चे -

- कुन्डलिया छन्द -

स्वस्ति श्री गुनगन कलित गोविंद गिल्लाप्रसिद्ध ।
किल्ले सिंहोर सुस्थान में, बसत रहत गुनबद्ध ।
बसत रहत गुनबद्ध, नीत नित जानत नीके ।
कविता पर उपकार, ज्ञान छपवावत ठीके ।
याते सुजस जहान, होय परशंसैनृप सुन ।
नारुपण कवि कहे, आपको स्वति श्री गुन ।।

2. मधुमती अेटले महुवा ना रहीस अतित बाबा रामवनजी ने सं. 1949 नो कार्तिक सुदी 1 में
3. जामनगर के मरजी त्रीकमलाला गोपाल महजी
4. बनास (काशी) से भारत जीवन प्रेस के सम्पादक रामकृष्ण वर्मा
5. जूनागढ़ ताबा ना कृतिमागा ग्राम के रहीस बारोट माधव पुरुषोत्तम ने धर्मपुर से लिखा -
6. संवत 1954 में बरतपुर के रहीस कवि नवलकिशोर ने -
7. कच्छ भुज वाले कविवराज गोपालजी जगदेव ने
9. भरतपुर के जानी बिहारीलाल स्कूल मास्टर ने
10. कच्छदेश के पत्री ग्राम के प्रतापसिंह जी भाई ने
11. संवत् 191 मां अधिक वैशाख वद 5 ने मंगलवारे मने सिंहार मां मथुरा नां निवासी चौबा नवनीत कवि ने लखेल पत्र मण्यो तेमां गोविन्दग्रन्थ माला विषे काव्य छे ते नीचे मुजब छे -

आपका गोविंद ग्रन्थ माला से पत्र आया वांच के परमानन्द भया । आपकी काव्यकलापूर्ण वाणीमहारीनी के विलासोल्लास के निवास को देख चित्त को परम आनन्द और संतोष प्राप्त हुवा कि इस कलिकाल में भी ऐसे ऐसे सत्कवि विद्यमान हैं जिनका अवलंब कर श्री वागेश्वरी नृत्य कर रही है, इस विषय में जादा कहना मेरी बुद्धि से विशेष है, जैसा कि आपकी गोविन्द ग्रन्थ माला काव्य के अंगों से परिपूर्ण है ।

नवनीत कवि कृत गोविंद ग्रन्थ माला की प्रशंसा के कवित्त नीचे लिखे हैं -

॥ कवित्त ॥

निराकार निर्गुन और समुन उभयपच्छ, लच्छकरि राखे हैं सुमेर रस आला को ।
'नवनीत' प्यारे प्रेमदाभ में पिरोय धरे, खरेभाव भूषित नसैया भव जाला को ।
व्यंग्य ध्वनि औज माधुरी के मधुमांहि सने, गने जात चित्त में कवित्त नंदलाला को ।
एक एक मन का मना कामना करन सिद्ध, रिद्धि के भरैया है गोविंद ग्रंथमाला को ॥1॥

॥ पुनचर्चा कवित्त ॥

कविकुलमारग दिखैया, शुद्धसान भरे, कुकवि कुतर्क में वितर्क-गुन आला को ।
'नवनीत' प्यारे गुन मंडित अनेक भॉति, पंडित प्रवीन अवलंब रस ख्याला को ।
नायिका विधायक विभावक विभाख भाव, भूषन सिंगार और गुनगान वाला को ।
भरनौ हिय में रत्न मनका प्रकाश पुंज, बरनौ कहाँ लौ मैं गोविंद ग्रंथ माला को ॥2॥

॥ दोहा ॥

गो. बानी सानी सुधा, कवि कुल कुमुदानन्द ।
गोविंदताप नशात लीव, गोविंद कविता चंद ॥3॥

कच्छ देश के कवि जीवराम अजरामर गोरे के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर वर्णन है ।[41]

इसके बाद पृष्ठ 14 पर गोविंद ग्रन्थ माला के प्रथम भाग के ग्रंथों की सूची तथा ग्रन्थ निर्माण काल भी दिया है । इसमें इनके मूल ग्रन्थ, सम्पादन अनुवाद, टीकाग्रन्थ आदि का उल्लेख है । इनके लेखों की सूची पृथक दी है ।

अन्त में फुटकर ग्रन्थों की सूची है जो गो. गि. को मिले थे तथा जो अपूर्ण थे -

इस तरह यह ग्रन्थ गोविंद गिल्लाभाई के सम्पूर्ण कृतित्व पर प्रकाश डालता है ।

अष्टांग राजनीति[42]

जसूराम कृत

पृष्ठ - 33

रजिस्टर साहज

लिपिकार गोविंद गिल्लाभाई

प्रारम्भ :- अथ कविजसुराम कृत 'अष्टां राजनीति' मंगलाचरण दोहा -

अक्षरधाम अगम अपार गति, किन हू पार न पाय ।
सो मोकूं दीजै शकति, जय जय जय जगराय ॥

॥ छप्पय ॥

वरनी उज्ज्वल वरन, शरन जग अपारन शहनी ।
करनी करुना करन, तरन सब तारन तरनी ।
शिर पर धरनी छत्र, भरति सुख संपति भरनी ।
भरनी अमृत भरन, हरनि दुख दरिद हरनी ।
धरती त्रिशूल खप्पर धरन, भव भय हरनी सकल भय ।
जगदंबा आदि बरनी जसू, जय जगधरनी की मात जय ॥

इसमें नीतियों को स्पष्ट किया गया है । राजा के दायित्व आदि का निरुपण है ।

इसमें :-

प्रथम राम अंग / द्वितीय राजनी अंग / तृतीय राजकुमार अंग / चतुर्थ वजीर अंग / पंचम मुसाहिब अंग / षष्ठ रावत अंग / सप्तम रैयत अंग / अष्टम कवि अंग

पृष्ठ 30 पर समाप्त पृष्ठ 31 से षटऋतु बर्मन प्रारम्भ है जो पृष्ठ 33 पर समाप्त है। षटऋतु वर्णन में कुल 22 छन्द हैं ।

इन ग्रन्थों में कठिन शब्दों के अर्थ नीचे दिए गए हैं ।

राजनीति[43]

देवीदास कवि कृत

रजिस्टर साइज

लिपिकार गो. गि. भाई

आकार वही पूर्ववत

कुल पृष्ठ 37

प्रारम्भ :-

अथ श्री देवीदास कृत राजनीति प्रारम्भ :-

अथ नीति की आवश्यकता विषै -

॥ कवित्त ॥

नीति हितैं परम धरम तें सकल सिद्धि,
नीतिहिं तें आदर समान रीति पाहयै ।
नीतितें अनीत छूटे, नीतिहिं ते सुख लूटे,
नीतिहिं तें बोल भला वकला कहाइयै ॥
नीतिहिं ते राज राजे, नीतिहिं ते पातशाह,
नीतिहिं कों नाइ, खंडमांहि जस गाइये ।
छोटेन कौ बड़े करै, बड़े महा बड़े करै,
तातें सबहिन को राजनीति ही सुनाइयै ॥

यह भी नीति शास्त्र ही है -

इसमें कुल 222 छन्द हैं। पृष्ठ 37 पर इति श्री कवि देविदास विरचिते नीति संबंधी कवित्त संग्रह समाप्त। अतः - शिवसिंह सरोज ने पाने 119 में थी वधारा भी उतारेल कवित्त ने ऊपर ना नहीं - (दो कवित्त हैं)

अन्त में एक कवित्त है और ऊपर लिखा है - रस पीयूष चोपड़ी नो पुठ्ठा पर थी उतारेल देवीदास नु फुटकर कवित्त ॥

एक पृष्ठ पर विज्ञापन लिखा है

श्री

गिरिधर कृत कुंडलिया संग्रह

नीति और वैराग्य

यह

दो भाग में

कवि

गोविंद गिल्लाभाई पास शोधकें

लोक हितार्थ

'शेठ महमद अल्ली अवहुल अल्ली में

छपाय के प्रसिद्ध किया

अमदाबाद

आर्योदय प्रेस में छपा

संवत् 1948 सन् 1892

किम्मत

यह ग्रंथ रजिस्टर कराय सर्वहक्क स्वाधिक रखा है ।

दूसरे पृष्ठ पर प्रस्तावना है ।

सम्भवतः यह प्रेसकापी तैयार की गई है ।

कुंडलिया संग्रह[44]

गिरिधर कविराय

कुल पृष्ठ - 60

नीति सम्बन्धी

वैराग्य सम्बन्धी

यह एक प्रेस कापी है ।

प्रारम्भ में कुंडलियाँ सूची है ।

प्रारम्भ इस प्रकार है -

प्रथम भाग - नीति

- मंगलाचरण कुंडलिया -

जियवो मरिवो जगत में, यह नहिं अपने हाथ ।
जानत हैं ये नंदसुत, विहसत बदसन साथ ।
बिहसत बछसन साथ, चारि युग के (सवारे)
ईन्द्रमान जिन हस्यौ, विपत्ति के काटन हैरे ।
कहि गिरधर कविराय, ज्वाब साहन सों करिबौ ।
यह नहि अपने हाथ, जगत में जियवौं मरिबौ ।

कुल 186 कुंडलियाँ दी हैं जो प्रसिद्ध और प्रकाशित भी हैं ।

अन्त में -

गीता भारत भागवत, पढ़े लोभ के हेत ।
हृदय न मानैं एक मद होवे साहब चेत ।

होवे साहब चेत, सुनावै लोको ताई ।
लग रहे तीनौ ताप, हृदै में शांति न आई ।
कहि गिरधर कविराय, बजावै धीधर तीता ।
पढ़े लोभ के हेत, भारत भागवत गीता ॥

बीजो कुंडलियो जुवो - प्रस्तावना नी पेले टाइटल साते लख्यौ छे -

गोविन्द गिल्लाभाई ने गिरधर की कुन्डलियों को प्रकाशित कराने के लिए यह संग्रह ग्रन्थ तैयार किया था, इसमें उन्होंने व्यवस्थित रूप से गिरिधर कविराय की कुंडलियों को सम्पादित किया है, यह प्रेस कापी है । प्रस्तावना के लिए सम्पादक का वक्तव्य दृष्टव्य है -

प्रस्तावना

आ कुंडलिया ना कर्ता कवि गिरिधर राय अंतरवेद में संवत् 1710 मां थई गया, अेम शिवसिंह सरोज मां लख्यु छे । अने जैपुर ना महाराज सवाई जयसिंह नी सभा मां हतो। ते तेज महाराजे तेने कविराय नी पदवी आपी हती । ते कविराजे कुंडलिया मां अेक नीति विषय नों ग्रन्थ रचवा मांग्यों हतो पण वचमां अंतरकर्ण आवा भी गुजरी गयो ।

त्यार पछी बाकी नां केटलाक कुंडलिया तेना स्त्रिए बनावी ग्रन्थ पूरो करयो । अेम कहेवाय अने जे कुंडलिया मा 'साई' शब्द आवे छे ते कुंडलिया तेथी स्त्री ना बनावेल छे अेम लोको कहे छे ।

ते विषे गये ते होय पर तेमा नीति संबंधी कुंडलिया सर्वोत्तम होवा थी आखा हिन्दुस्तान मां सर्वे ठिकाणे प्रसरेली । अने खरेखर असरकारक छे अे बात जग प्रसिद्ध छे । तेथी जेम जेम ते मणतां गया तेम तेम तेनो संग्रह करतो गयो । अने आज दिन सूधी सर्वे मणी 102 एकदा यथा अेटला मां संवत् 1946 नी साल मां अचे ना (सिंदोर) ना वहीवट दार थई आजम मेहेरबान रा. रा. मुहम्मदअली भाई अबदल अल्लीभाई आव्या, तेमने विद्या नो विसेष शेख होवा थी तथा शोधक बुद्धि ने लीधे म्हारा पुस्तको नो लिस्ट जोवा माग्यु अने ते जोता तेमा थी आ गिरिधर नी कुंडलिया तेमने पसंद आववा थी ते मंगाई ने सर्वे वाँची जोवा ने ते ठीक जणाया थी जोते छपाय तो सर्वे ना उपयोग मां आवे अेम धारी मने कह्यो कि आ कुंडलिया घणाज अशुद्ध अने छन्दोभंग जेवा जणाय छे । तेने जो तमे सुधारी यथाक्रमे गोठवी कठम शब्दों ना अर्थ करी आपो तो हुँ महारे खर्चे छपावी लोकों ना उपयोग मां लाखूं । ते बात में घणा मान साथे कबूल करी पण केटलायक बीजा कामने लीधे ते जल्दी बनी शक्या नहीं,

अने तेओ साहेबनी अचे थी प्रमोसन साथे भावनगर मां फेरिस्तखाता ना ऊपरी तरीके बदली थई । त्यां संतोषकारक काम करवा थी तेमनी नोकरी नी बुत्त जाणी महाराज साहेबे हाल तेमने खुद भावनगर मां सारा दोढ़ सौ ना पगार ती न्यायाधीश नी जग्यो आपी छे, ते काम सारी रीते काता हता, विद्या ना उत्साही होवा थी महारी पासे कुंडलिया भी उधराणी बखतो बखत करता हता, तेथी महारी यथामति प्रमाणे ते कुंडलिया ने सुधारी कठण शब्दों का अर्थ करी तेमने छपावा माटे आप्या छे ।

आ कुंडलिया संग्रह ना बे भाग पाडेला छे तेमा प्रथम भाग मां नीति विषय नो संग्रह चे तेमा प्रथम परचूरम अने पची अन्योक्ति अेम गोठवण करी ने 102 कुंडलिया नो समावेश करयौ छे । अने बीजा भाग मां वेदान्त विषय ना अेटले बैराग्य ना 132 कुंडलिया छे । ते एक बे वार प्रथम छपाया छे । पण घणांज अशुद्ध अे छन्दोअंग हता । तेवी तेने कुंडलिया छन्द ना यिम प्रमाणे घणा फेरफार साथे सुदारी, शुद्ध करया छे माटे कोईए अमारी रजा सिवाय अमारी प्रतिपर थी छापवा अथवा छपाववा नहीं अेज,

संवत् 1948 ना मागसर सुद 15 ने मंगणवार ए. योनार कवि गोविंद गिल्लाभाई

संभवतः यह संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ क्योंकि प्रेस कापी गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में ही सन्निहित है ।

यह भी हो सकता है कि एक प्रति गोविन्द गिल्लाभाई ने प्रेस में दे दी हो औ दूसरी प्रति अपने पास रखली हो -

वह प्रकाशित प्रति कहीं भी देखने में नहीं आई ।

प्रवीण सागर मूलग्रन्थ गुजराती के समर्थ हिन्दी महिरावणसिंह कृत है । म.स. विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से डॉ. महोब्बतसिंह चौहान ने प्रवीणसागर पर शोध प्रबंध लिखा है ।

किन्तु प्रवीण सागर की लहरे में कवि रणमल अदाभाई कृत लिखा है ।

ग्रन्थ का परिचय प्रथम दृष्टव्य है -

प्रवीणसागर की लहरें[45]

कर्ता - रणमल अदाभाई बारौट

लिपिकाल - सं. 1944

लिपिकार - गोविंद गिल्लाभाई

कुलपृष्ठ - 64

कुल लहर - 12

रजिस्टर साइज -

प्ररम्भ :- अथ श्री प्रवीणसागर ग्रन्थ की लहर 73 थी लखे छे । यथा लहर 734 मी प्रारंभ -

(सूचना - इससे ज्ञात होता है कि इससे पहले की 72 लहर दूसरे भाग में दी जा चुकी है यह ग्रन्थ आगे का हिस्सा है)

अथ योगी बद्रिकाश्रम गयन ; तदंतरे प्रवीण विछोह वर्णन -

- दोहा -

प्रथम वर्गमहुं तीसरो उत्तर वानर तीन ।
तिनके नामे नाम तन, प्रगटयौ कला प्रवीन ॥1॥

- पुनः -

प्रथम वर्ग परमान करि, करि बौ अंत कहाय ।
लाय लगत परवीन मुख, हाय हाय अरु हाय ॥2॥

- सोरठा -

विछुरत सागत मित, बाढयौ विरह प्रवीन कौ ।
छिन छिन सोभित चिंत, सो कछुय कवन्नि सुवौ ॥3॥

अथ कुसुम प्रवीन चर्चा तथा प्रथम प्रवीनोल विलास वर्तन -

- दोहा -

होत निरास उदास है, कुसुम सुं दर्द सुनाय ।
बिन सागर कैसैं जियौं, अब निसिदिन क्यौ जाय ॥

अथ प्रवीनोक्त विभावनालंकार -

कैसै धरै धीर असरीर कहौ कैसै रहै,
कौन सुनै, कासौं कहूं को करै सहाय रे ।
आवै नाहिं कंत अब, कोऊ ना कहावै कब ।
याते अंत तंत कौन अंतक मिलाय रे ।

घरना सुहावै, वन फिरना सुहावै नाहिं,

मरना सुहावै यौं कहावै हाय हाय रे ॥

इसमें 73 लहर में कुल छन्द

दोहा	8
सोरठा	1
कवित्त	5
गाहा	1
भुजंगप्रयात	18
सवैया	3
कुल	29

74 लहर में

दोहा	9
नाराचछंद	2
सवैया	5
कवित्त	3
सोरठा	1
चिंतामणि छंद	2
छप्पय	1
चौपाई	8
हरिगीतिका	1
गरहा	1
कुल	33

लहर 75 में

दोहा	16
नाराचछंद	21
सोरठा	6
मनमोद छंद	1
सार	1

पद्धरी	1
चौपाई	1
सवैया	1
कवित्त	1
हनूफाल छंद	5
छप्पय	1
पायाकुलच	19
गाहा	1
कुल	75

<u>76 लहर में</u>

दोहा	9
मोतीराम छंद	27
चौपाई	28
भुजंगप्रयात छंद	17
कवित्त	1
गाहा	1
कुल	83

<u>लहर 77 में</u>

सोरठा	1
दोहा	10
कंद छंद	4
चौपाई	1
पधारी छंद	10
भुजंगप्रयात	28
छप्पय	1
गाहा	1
कुल	57

<u>लहर 78 में</u>

चौपाई	1
दोहा	6
सवैया	1
द्वैअक्षरी	1
छप्पय	3
पद्धरी छंद	1
सोरठा	1
चिंतामणि छंद	1
चामर छन्द	10
चौपाई	5
मनहरन	1
चन्द्रामणि छन्द	1
गाहा	1
हनुफाल छंद	11
कुल	44

इसी प्रकार लहर 79 में 23 छन्द

इसी प्रकार लहर 80 में 23 छन्द

इसी प्रकार लहर 81 में 26 छन्द

इसी प्रकार लहर 82 में 19 छन्द

इसी प्रकार लहर 83 में 23 छन्द

इसी प्रकार लहर 84 में 38 छन्द

पुष्पिका में लिखा है -

संवत् 1944 ना ग्रावण वदी 8 ने बुधवारे राजकोट ना बारोट रणमल अदाभाई कृत प्रवीणसागर ग्रंथ नी लहर 73 थी 84 सुधी नी बार लहर तेमने पासे ती हाथ अक्षरनी लखेली प्रति मांगी लई ने तेने उपर ती प्रति प्रमाणे स्वाथे स्वहाते लखी छे । श्री इल्याणरस्तु ।।तथास्तु।।

इसमें लिपि गुजराती है तथा भाषा ब्रजभाषा है ।

अतिमांश -

॥ गाहा ॥

शुभ उच्छव शिव रात्रो, सागर उद्धार आए सुबहिमान ।

चतुर्दशी अभिधान, पूर्णप्रवीण सागरो लहरम ॥38॥

इति श्री प्रवीन सागर ग्रन्थे सागर उद्धार बहिमान ।

आगमन नाम चतुरासीतितमो लहर संपूर्ण 845

इति श्री बारोट रसामल कृत प्रवीन सागर ग्रन्थावली 12 लहर समाप्त

यशवर्णन[46]

छगनलाल संतोषराम देसाई

कुल पृष्ठ - 8

आकार 6.5'' X 8''

प्रारम्भ

॥ श्री ॥

अथ श्री अत्योदार नामदार देसाई श्री छगनलाल संतोषराम नां यशवर्णन छुटक कवित्त लख्या छे ।

॥ यथा ॥

- छप्पय -

रामचन्द सम सील, सत्य हरिचन्द समाने ।

उदधि समो उदार, धर्म समो वृत्त माने ।

क्षमा क्षिति सम सोय, निर्लेप समीर समाने ।

नेम नाथ सम देख, दया दिल मा अति आने ।

पुनिलोल मोह मारे नथी, पर उपकार परजन्य समो ।

सो छगनलाल संतोष सुत, देवमूर्ति देखो अमो ॥

इसमें

- छगनलाल सुशीण सर्वगुण सम्पन्न विशे
- छगनलाल सर्वोत्तम विशे
- छगनलाल कल्पवृक्ष प्रतियुक्ति विशे ।

- छगनलाल भोज प्रतियुक्ति विशे ।

- गोविंद ने छगनलाल नो आधार ते विशे ।

- चित्रकाव्य

- छगनलाल विरद वर्णन

धनुषवेध छन्द चित्र । गोमूत्रिका । त्रिपदी बंध । छगनलाल सुजस वर्णन - कमलबंध

- केणवृक्षबंध चित्र -

- नागमण्डल बन्ध चित्र -

इसमें अनेक चित्रकाव्य दिए गए हैं । धनुषबंध चित्र का छन्द इस प्रकार है :-

कठिन विरद कलिकाल में, छगनलाल का सार ।
देत दान प्रतिदिन सुघन, कठिन करे ना कार ॥

इसी प्रकार के अन्यत्र चित्रबंध हैं । यह एक प्रशस्तिकाव्य है ।

रसतरंगिनी[47]

(तरंगिनी भानुदत्त का अनुवाद)

वेणीदत्त कृत्त रसिकरंजन की टीका लिखी है -

रस तरंगिनी का गुजराती भाषान्तर :

कुल पृष्ठ	-	162
साइज	-	8'' x 10''
प्रतिपृष्ठ	-	16 पंक्ति
प्रतिपंक्ति	-	10 शब्द
लिपि	-	हिन्दी नागरी
भाषा	-	गुजराती

प्रारंभ :-

॥ गणेशायनमः ॥

॥ अथ इस तरंगिणी भाषान्तर प्रारम्भः ॥

लक्ष्मी जोईवो भाषा निगम नेइ सत्ता शोककर्ता पक्षनो सत्ती ने मारता ते दशमुख समरें जोई रोमांच थाता चोरी ने भागता जे भयथी कि दधि नेति चने मारता ते पृथ्वी ने दांत

मांहि तिलमिव धरता रक्षतुपित वासा ॥1॥ .....

वस्तुतः ये गुजराती भाषा में काव्यानुवाद है जिसका गुजराती गद्य अनुवाद भी साथ में दिया गया है ।

काव्यांश विवेचना से संबंधित यह ग्रन्थ भानुदत्त कृत रसतरंगिनी की टीकारूप में निर्मित हुआ है ।

अन्तिभांश इस प्रकार है -

'..... हे सरस्वती आदित्य रवि रस तरंगिनी मां प्रवेश करो ने मारा करेल श्लोक रूपी कमल नूं कान ना घरेणु करो ॥26॥

ज्यां सुधी सूर्य नी पुत्री यमुना पृथ्वी मां हो त्यां सुदी भानुदत्त कवि रचेल रसतरंगिनी पृथ्वी मां रहो । शिवं 30 ।

इति श्री वेणीदत्त कृत रसिक रंजनि रस तरंगिनी नी टीका समाप्ता -

इसमें कुल आठ तरंग हैं -

छन्द संख्या इस प्रकार है -

प्रथम तरंग	17 छन्द
द्वितीय तरंग	20 छन्द
तृतीय तरंग	19 छन्द
चतुर्थ तरंग	10 छन्द
पंचम तरंग	45 छन्द
षष्ठ तरंग	23 छन्द
सप्तम तरंग	30 छन्द
अष्टम तरंग	30 छन्द
कुल	194 छन्द

उसमें सप्तम तरंग के पश्चात् वेणिदत्त को कवि वागीश भट्टाचार्य की उपाधि से सम्बोधित किया गया है ।

संस्कृत में भानुदत्त कृत रसतरंगिनी का काव्यानुवाद है यह ।

फुटकर कवित्त[48]

गोविन्दगिल्लाभाई कृत

आकार - रजिस्टर आकार

कुल पृष्ठ - 11

पत्र - 1

प्रारम्भ में कवित्त लक्षणम् में एक श्लोक दिया है तथा गुजराती में उसका भावार्थ स्पष्ट किया है ।

पत्रा - 2

कवित्त 31 = 32 अने 33 अक्षर ना तेमां तेत्री12 अक्षर मां नीचे लख्या छे ।

वीप्सा अनुप्राश वाला 33 अक्षर नां कवित्ते - (सुखसागर पत्र - 55 में कवित्त-158 मां) यथा कवित्त - (देवकवि) - (सजान विनोद-पावस ऋतु-पत्र77 में)

रसमें निरत चहुँधाइ सों धिरत घन,

आवत घिरत झीने सरसों झपकि झपकि ।

शोरन मचावैं नंचैं मोरनि की पांति चहूँ -

ओरन तें कौंधि जात चपला लपकि लपकि

बिन प्रान प्यारे प्राण न्यारे होत 'देव' कहैं,

नैन असुवान रहैं अँसुआ झपकि तपकि

रतियाँ अँधेरी धीर नतिया धरति मुख -

बतियाँ कढ़ैं न उठैं छतियाँ तपकि तपकि

ब्रजभाषा काव्य संग्रह ने पाने 45 में कवित्त 288 मु.

(33 अक्षर के कवित्त)

॥ यथा कवित्त ॥

धाइ धइ झमकि झमकि झर लाइ लाइ, उमड़ि घुमड़ि घटा घन की गरजि गरजि ।
धाइ धाइ सघन कदंब फूले चहुँ ओर, साँस न भरन देत चपला तरजि तरजि ।
चाइ चाइ बोलत पपैया मोर सांस भोर, सुनि सुनि उठे आली, छतियाँ लरजि लरजि ।
जाइ-जाइ बाहिर निलज फिर आवैं प्रान, बिना प्रान प्यारे कैसैं राखौं री बरजि बरजि ॥

इनके अतिरिक्त

महाराजा यशवंतसिंह (शृंगार शिरोमणि)	ग्वाल /4
(सुखसागर तरंग)	देव /5
(प्रेममाधुरी)	हरिश्चंद /6
(मधुविलास ग्रन्थ)	माधौ कवि /7
(अलंकार कलानिधि)	कृष्णाभट्ट कलानिधि कवि /8
(अनुराग-बाग)	दीनदयाल गिरि /9
(शृंगार सुधा)	परसाद कवि /10
(सुधासर)	रंगनाथ कवि /11
(कवित्त रन्तमालिका)	रसरासि कवि /12

रसरासि के कवित्त पाठभेद के कारण दो विभिन्न पुस्तकों के आधार पर दो बार लिपिबद्ध हैं। (12 तथ 12)

(सुजानविलास) कुँअर फकीर सिंहजी उर्फ सुजान कवि (13-14)15

(बृज चंद्रिका ग्रंथ) कृष्णाभट्ट कलाविधि (16)

इसके बाद 33 अक्षर के घनाक्षरी कवित्त गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा रचित दिए गए हैं। लिखा है कवि गोविंद गिल्लाभाई कृत तेतीस अक्षर के कवित्त यथा स्वयं दूतिका नायका-वचन-नायक प्रति -

॥ कवित्त ॥

सुन्दर स्वरूप कान्हा रावरौ निहारि नेक,
मोमन मो हाथन ते आयगै सटक सटक।
मानत न मेरौ कह्यौ वरजि वरजि हारी,
तोहु धाइ रह्यो जोइ तोहि में अटक अटक।
कोऊ की करत नाहिं नैक परवाह पुनि,
त्यागी कुल कानि कह्यो लाज कों पटक पटक।
'गोविंद' कहत सोइ दीजियै फिरय नातौ।
उनके अलावै रस प्याइयैं गटक गटक।

इसी प्रकार निम्नांकित क्रम में और भी कवित्त हैं -

- पावस ऋतु प्रोषित पतिका नायिका
- प्रौढा आगत पतिका
- पावस ऋतु प्रोषित पतिका
- प्रौढ़ा आगत पतिका
- पावस ऋतु प्रोषित पतिका

<u>पत्र 7 पर</u>

31 अक्षर के कवित्त

इसमें गोविन्द गिल्लाभाई के अतिरिक्त

- रसिक बिहारी (रामरसायन)
- पदमाकर (जगतविनोद)
- हफीजुल्काखां का हजारा में (पत्र - 396 में)

-हरिश्चंद पुकलित

- कवि 'सुवस' माधव विलास ग्रन्थ से - 9
- सोमनाथ (रसपियूष) 2 क.
- ऊधौराम - (पत्र - 9)
- देवकृत - (सुजान विनोद)
- मुकुन्दीलाल कृत (मुकुन्द विलास)
- देवकृत - सुजान विनोद
- मुग्धा अभिसारिका -
- ऋतुऋतु हजारा पावस -

पावसभूषण - मालकवि - 2

नंदरामल - 1, सुन्ददास - 1, कुल कवित्त - 35

ये एक छोटा-सा संग्रह ग्रन्थ है जिसमें घनाक्षरी छन्द के 33-32 तथा 31 अक्षरों के छन्दनिबंधन पर आधारित कुछ वरिष्ठ कवियों के कवित्त संलग्न किए गए हैं ।

यह कवि की निजी शौक दर्शाता है । यह निजीसंग्रह हेतु ही सम्पादित किया गया ग्रन्थ है । पृथक इसकी विशेष महत्ता नहीं है ।

ढोला मारु नी वार्ता[49]

प्रख्यात राजस्थानी लोककथा

रजिस्टर आकार

लिपिकार गोविन्द गिल्लाभाई

कुल पत्रा 60

अपूर्ण प्रति है ।

रचनाकाल - सं. 1743

प्रारंभ में विस्तृत भूमिका दी है ।

भूमिका इस प्रकार है -

मारू ढोला नी वार्ता

(लेखक सिहोर निवासी कवि गोविंद गिल्लाबाई)

मुम्बई मां निकणता 'गुजरात' नाम ना वर्तमान पत्र नो संवत 1971 ना वर्ष नो दीवाली नो अंक ता. 7मीं नवेम्बर सन 1915 नो जे छपाउवा बहार पड्यो छे, तेमां पत्र 1923 में 'मारु अेज ढोला' ए नाम नी वार्ता कच्छना कविराज जीवराज अजराम गौरे लखीने छपावी छे ते प्राचीन ऐतिहासिक वार्ता होवा थी कविता नां जूना साहित्य मां वधारौ पयो जाणी आपण ने संतोष थाय छे ।

कविराज जीवराजभाई सारा कवि अने सुलेखक अने प्राचीन ऐतिहासिक वार्ताना शोधक होवा थी वखतोवखत आवी वार्ताओ लखी गुजराती साहित्यमां वधारो करे छे, तेथी तेमनो उपकार मानवो जोइये । केम के ते भाईअे पोताना करेल थी बीजाओना धन्यावाद घटे छे ।

आ वखते दीवाणी ना अंक मां जे 'मारु ढोला नी वार्ता' आपी छे ते माट चारण्ये ने माढे थी सांभणी संग्रह करेलो होय के पछी तेमने कोई लखेलो ग्रंथ मणेल होय तो तेपर थी लखीने मोकली हशे । अेम अनुमान थाय छे . अने तेमां पोते 'नखरगढ़' तथा 'यूगलगढ़' विशे अने तेना राजाओ विशे केटलीक शंकाओ बतावे छे । पण कोई निर्णय पर आवी शक्या नथी। ते पर थी स्पष्ट जण्मय चे के तेमने ते विषे विशेष खात्री लायक पुरावा न मणवा थी तेमणे

तेम लख्यु छे, अेटले ते वार्ता अपूर्ण त्रुटक अने काई निर्णय न थवा थी शंकावाणी रही छे, तेथी ते वार्ता नी शंकाओ नुं समाधान करी खात्री लायक पुरावा आपी लोक हितार्थे परिपूर्ण बतावानी रजा लऊं छूं ।

'मारु ढोल नी वार्ता' घणीज प्राचीन अेटले दिल्लीनां मोगल बादशाह मोहम्मद जलालुद्दीन अकबर बादशाह नी पहलां बनेल होय अेम जणांय छे. ते विशे एक एवी दंतकथा म्हारा सांभणवामां आवी छे के -

दिल्ली बादशाह अकबर जेम राजकुशल अने नीतिज्ञ तथा विद्याविनोदी हतो, तेम रसिक पण हतो, तेथी तेनां दरबार मां कवियो, गवैयाओ अने नायकाओ अनेक देशों मां थी आवी आवी हाजर थई पोत पोतनी वार्चचातुरी बतावी ईनामो मेणवता हता, वखते कोई नामांकित कारीगर अेटले गुणज्ञ पातानां निर्वाह मां संतोष मानी न आवतो तो तेने हाजर थवानी थरज पाड़वा मां आवती हती । जेमके संगीत विद्याना सुरतरु अने आखा हिन्दुस्तान मां वखणायेल गायनाचार्य 'तानसेन' ने 'बाँधव गढ़' ना बघेला महाराजा 'रामदेव' फारस इतिहास मैं तेनु नाम 'रामचन्द्र' लख्यु छे, तेनी पासे हतो त्याथी तेने तोड़वा ईस्वी सन् 1562 मां पाताना सरदार 'जलालखान' ने मोकली घणां सम्मान थी बोलावी पोता पासे राख्यौ हतो ।

तेमज बुंदेलखण्ड माटे ना ओरघा ना महाराज 'मधुकर शाह ना (रामशाह/होरीलराय/नृसिंहदेव/रत्नसेन इन्द्रजीत सिंह/प्रतापराय) वीर सिंह अने हरिसिंह जी अे आठ पुत्रो हता । तेमां सर्वथी माटो रामशाह जेने केशव कविअे दुलहराम लख्यौ छे ते गादी अे बैठा पछी सर्व राजकार्य इन्द्रजीत सिंह करता हता, ते काव्य अने संगीत ना घणांज शोखीन हता। तेमने ग्रास मां मणेल कछोवा कमलगढ़ नाम ना गाम मां निवास स्थान राखी त्यां एक संगीत शाणा स्थायी हती । तेमां मुख्य प्रवीणराय, नवरंगराय, विचित्र नयना, तानतरंगा, रंगराय ने रंगमूर्ति अे छः नायिकाओ हती । तेमा प्रवीणराय सर्वथी श्रेष्ठरूपवान गुणवान अने घणीज चतुर तथा कविता करती हती तेना केशव कविअे 'कविप्रिया' नामना ग्रंथ नी शुरुआत मां घणांज बखान कर्या छे, ते बखते तेना रूपगुण अने चतुराई नी प्रशंसा आसा हिंद मां फैलावा थी ते बात दिल्लीसर अकबर बादशाह ना जाणवा मां आवतां तेने दिल्ली दरबार मां हाजर थवा हुकम लखी मोकल्यो, ते मण्या पछी पोते राते खानगी इन्द्रजीत सिंह नी हजूर मां हाजिर थई नीचे नो सवैयो बोली -

इन्द्रजीत सिंह प्रति प्रवीणराय उक्ति

॥ सवैया ॥

आइ हौं बूझन मंत्र तुम्हें जिनि, शासन सौं सिगरी मति गोई ।
देह तजौं कि कुलकानि, अजौं न लजौं, लजि हैं सबकोई ।
हाथ रहे परमारथ स्वारथ, चित्त विचारि कहौं पुनि सोई ।
जामै रहै प्रभु की प्रभुतां, अरु मेरौ पतिवृत भंग न होई ।

ढोला मारु नी वार्ता का मूलारम्भ पृष्ठ 22 से हुआ है -

बापैया बहुचंचदी, बोले पिय पिय बानि ।
विरही ने किमि बालतो, पिय परदेसे जानि ॥1॥

सभी दोहों के गुजराती अनुवाद भी साथ में दिए हैं ।

कुल दोहे चौपाई - 913 हैं अंतिम दोहा -

बिरही नो मन उल्हसे, संयोगी सुख थाय ।
बेधक चित्त बाल्ही घणंक, सुघतां आवे हाय ॥9॥

इति श्री ढोला मारु चौपाई समाप्त । संवत् 1743 वर्ष आसौ मासे शुक्ल पक्षे एकादशी तिथी वक्रो वासरे लिपिकृत लेखक पाठक नां मंगलं मपात् शुभं मुपात् । कल्यामयस्तु

संवत् 1972 नां काति4क सुद 14 ने शनिवारे सिंहोर मध्ये खवास गोविंद गिरुभाईये स्वहस्ते स्वकारणे प्रतिप्रमाणे लखी छे, मंगलं ।

सने 1910 नां 'गुजराती' ना दीवाणीनां अंक मां 'मारई' अने 'उमर' नी वार्ता पत्र 77 मांथी लखी छे, ते मारई पति थणता मलीर प्रगणीनी हती ते आ मारु थी जीणी जाणवी अंक लेखक कवि दयारा ये लख्यु छे .....

ग्रंथ का गोविन्द गिल्लाभाई ने सम्पादन किया है ।

इसकी भूमिका में प्रवीणराय और अकबर के प्रसंग की कथा कही गई है । इसमें इन्द्रजीत सिंह के आश्रित कविवर केशवराय जब अपने आश्रयदाता का संदेश लेकर अकबर के दरबार में जाते हैं तो वह बीरबल के किए एक प्रशस्तिपरक छन्द लिखकर भेजते हैं - वह छन्द इस प्रकार हैं -

पावक-पच्छि-पशु-नग-नाग-नदी-नद लोक रचे दसचारी ।
केशव देव अदेव रचे, नरदेव रचे रचना न निवारी ।
रचिकें नरनाह बली बलवीर मा कृतकृत्य महावृतधारी ।

दै करतायन आपन ताहि, दियौ करतार हुहूकरतारी ॥

इसमें अकबर और प्रवीणराय के संवाद भी है यथा -

प्रवीणराय : युवन चलति तिय देह तें, चलति किहि हेतु ।

अकबर : मनमथ बारि मसाल कौं सैति तिहारो सेतु ।

प्रवीण : ऊँचे व्है सुखमय किए, सम व्है नर बस कीन ।

अकबर : अब पताल बस करन कौं, ढरकि पयानौ कीन ॥

प्रवीणराय : विनतीराय प्रवीण की, सुनियै शाह सुजान ।

झूठी पतरी भखत हैं, बारी, बायस, खान ॥

इसमें आगे अकबर के नवरत्नों के नाम दिए हैं -

1. अबूफजल, 2. फैजी, 3. खानखांमा, 4. टोडरमल, 5. जयपुरनरेश महाराजा मानसिंह, 6. राजा बीरबल, 7. बदाऊँनी, 8. तानसेन तथा 9. गंगकवि ।

गोविन्द गिल्लाभाई ने अनेक प्रतियों के आधार पर पाठभेद छाँटकर प्रस्तुत प्रतिमा सम्पादक किया है । इन्होंने छः प्रतियों का इस प्रकार उल्लेख किया है -

<u>प्रथम प्रति :</u>

जोधपुरनां महामंदिर नां आपसजी ने त्यां संवत् 1667 ना कार्तिक सुदि 3 ने बुधबार नी लखेली तेना संवत नी कविता नीचे मुजब -

संवत सोरह सतरे बरखे, आखतीज दिवस मनहरखे ।

<u>दूसरी प्रति :</u>

जोधपुर दरबार नां राजपुरोहित नां घरमां छे, तेना संवत नी कविता -

संवत सोलह सतरोतरे । आखातीज सोमवार ।

वांच्यां सुख संवत सदां, जैसलमेर मधार ॥432॥

<u>तीसरी प्रति :</u>

यह प्रति सम्पूर्ण है, ते संवत, 1603 नां वैशाख सुदि 3 ने गुरुवारे जैसलमेर ना चंदकवि नी बतावेली छे । अने तेमां दरराजजी मी आज्ञा थी रची एम लख्यु छे ।

<u>चौथी प्रति :</u>

ते प्रति कौने पास छे ते काई लख्यु नथी । पण तेनो संवत् आव्यो छे -

संवत सोलह तीरोतरें, आखातीज गुरुखरे ॥

<u>पाँचवी प्रति :</u>

मारवाडमां झालयगढ गाम ना जता ज्ञानमल्ल ना उपालयमां तेमां संवत् नथी, पण कविता लखी छे ते नीचे मुजब -

जिमिमदुकर सिर केतकी, जिम कोयल सहकार ।
मारवारी मन हर लियौ, ढोला सौ मरतार ।
आनंद अधिक उद्वाह अति, नखर बाज्या खेल ।
संस्नेही सेनाररण, कलि मे रहियाँ बोला ॥

इन छः प्रतियों के अलावा मेरे पास में (गो. गिल्लाभाई के पास में) एक और प्रति है लिपिकाल है संवत् 1615 वैशाख सुदी 3 ने गुरुवार को जैसलमेर के राजा महाराज हरराज जी की आज्ञा से खदतर गच्छ के 'कुशललम' नाम के जैन कवि ने बनाकर शुद्ध भाषा में सम्पूर्ण तैयार की है । इसी पर से मैंने यह वार्ता लिखना प्रारंभ किया है । जहाँ आवश्यक समझूँगा वहाँ मुझी ग्रन्थ की कविता का प्रमाण देकर सबको आशवस्त कर सकता हूँ ।

प्रसंगानुकूल इसमें एक स्थान पर अकबर कृत कुछ कवितांश भी दिए हों -

अकबर शाह कृत ब्रजभाषा नी कविता

॥ दोहा ॥

जाकी कीरति जगत में, जगत सराहै जाहि ।
ताकौ जीवन सफल है, कहत 'अकब्बर' साहि ॥

॥ सवैया ॥

शाह अकबर एक समै चले कान्ह विनोद विलोकन बालहिं ।
आहट तें अबला निरख्यौ चकि चौंकि चली कर आतुर चालहिं ।
ज्यौं बलि बेनि सुधारी धरी सु, भई छवि यों ललता अरु लालहि ।
चंपक चारु कमान चढ़ावत काम ज्यौ हात लिये अहिबालहिं ।

इसमें ढोलामारु की मूलकथा भी संक्षिप्त रूप में दी गई है ।

यह मूलकाव्य राजस्थानी भाषा में है । इसमें मारवाडी और ब्रजभाषा का सम्मिश्रण सा है ।

रस प्रकाश की ग्रन्थ सूची[50]

लिपिकार	गोविन्दगिल्ला भाई
लिपि	गुजराती
विषय	यह काव्यांश विवेचन ग्रन्थों की सूची है किन्तु इसमें सोदारहण लक्षण भी दिए हैं, अर्थ गुजराती में दिया है । रस भेद पर विशेष बल है ।
साइज	रजिस्टर आकार
कुल पृष्ठ	34

प्रारम्भ :

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मेहेरवान दीवान बहादुर रणछोड़ भाई उदयराम भाई कृत 'रस प्रकाश' ग्रन्थ ना विषय ना क्रम नीचे लख्यो छे -

प्रथम रस लक्षण

विभाव - अनुभव ने संचारी भाव, अे त्रण थी जे (व्यक्त) प्रकट थाय ते रसः ।

शृंगार रत्नाकर मां रस ना बे भेद कर्या छे.

1. लौकिक - तथा 2. अलौकिक

लौकिक ना बे भेद -

1. जगत ना पदार्थ की उत्पन्न थयेला होय ते लौकिक, 2. मोद

1. आन्तर अने 2. बाह्य ।

1. आन्तर - आत्मगत - पोता ना मन मां थाय ते ।

2. बाह्य - बाहर ना विषय थी थाय ते ।

आंतर ना त्रण भेद (आंतर अथवा आत्मगत)

1. स्वाधिक (स्वपना मां थाय ते)

2. ममोरिथिक (मनोरथ मां थाय ते)

3. औषनायिक (उपनायिका विषै)

बाह्य ना भेद

शब्द - स्पर्श - रूप - रस ने गंध अेवा पॉच विषय छे, बाह्य ना पाँच भेद पडे छे।

'चर्चावली' नामे साहित्य नो ग्रंथ वृहस्पति ना पुत्र कच कविये संस्कृत में रच्यौ छे, ते ऊपर थी हिन्दी भाषा मां नधाल निवासी भीमचन्द राजा ना समय मां गंडकी नदी ना काँठे कंचनपुर नामे नगरी मां जगपाल महापंडित हतो तेनो पुत्र चंदन कवि हतो तेणे संवत् 1616 ना कार्तिक सुद 7 ने रविवारे अे ग्रन्थ परिपूरम करयौ छे. तेमा नीचे प्रमाणे छे -'

इस ग्रन्थ में मुख्य रूप में

- रस का स्वरूप
- विभाव लक्षण
- विभाव
- सात्विकभाव
- संचारीभाव
- नवरस
- स्थायीभाव
- शृंगार रस
- संयोग - विप्रलम्भ

  पूर्वराग - कामकी दशदशा

  पूर्वराग के तीन भेद
- मानवर्णन - प्रणयमान - ईर्ष्यामान,

  मानमोचन के छः प्रकार

  मान की दश कामदशा

  - प्रवास की प्रमाद दशा
- करुणात्मा - रौद्ररस
- संभोग शृंगार - वीररस
- हास्यरस वर्णन - उत्साह
- करुण रस - भयानक
- वीभत्स
- अद्‌भुतरस

- शान्तरस - शम

विशेष रस

वस्तुतः रसप्रकाश काव्यांश विवेचन जैसा ग्रंथ है जो गुजराती भाषा में काव्यनुवादित होकर सम्पादित किया गया है ।

इसका एक रोलावृत छन्द देखिए -

स्वर्ग माहिं कैं धरा, ऊपर मज वलणु थाजो ।
वा तुन इच्छा मुजबं नईमा वास निभाजो ।
शरद चरतु ना कमण जाकी ने अधिकज सारां ।
मरणलगाणी वित्त मरण चिंतवत करीश हुं तारां ।

अन्तिम छन्द भी गुजराती में ही है ।

इसमें ग्रन्थ विषय को विस्तार से व्याख्यायित किया है ।

कवि कुल कल्पद्रुम की अनुक्रमणिका[51]

आकार - रजिस्टर साइज

कुल पत्रा - 140

एक पृष्ठ में - 66 तालिकाएं - जिसमें ग्रन्थों का विषयानुक्रम है ।

कुल ग्रन्थ - 23

इस ग्रन्थ में जिन-जिन ग्रन्थों की अनुकमणिकाएं दी हैं वे निम्नलिखित हैं -

ग्रन्थ	रचनाकार	पृष्ठ
1. कविकुल कल्प द्रुम	कवि चिन्तामणि	1 से 11
2. काव्य कल्पद्रुम	कवि विश्वनाथ	12 से 20
3. रावणेश्वर कल्पद्रुम	कवि लछिराम	21 से 25
4. लखपति जससिंधु	कवि कुंवर कुशल	31 से 38
5. रस चन्द्रोदय	कवि गनेश	39 से 50
6. भूपाल भूषण	कवि वाणी	21 से 62
7. अलंकार आशय	कवि उत्तम चंद	64 से 68
8. अलंकार मणिमंजरी	ऋषिनाथ	69 से 71
9. काव्यनिर्णय	कायथ भिखारीदास	71 से 74

ग्रन्थ	रचनाकार	पृष्ठ
10. काव्यमंजरी	यद्मणदास	75 से 87
11. चरचावली	कविचंदन दास	88 से 98
12. अलंकार आदर्श	कवि दलपतराय डाह्याभाई	99 से 103
13. अलंकार आभा	चतुभुज	103 से 107
14. रामचन्द्र भूषण	लछिराम	107 से 110
15. रसिक मोहन	रघुनाथ कवि	111 से 113
16. चैत चन्द्रिका	गोकुलनाथ	114 से 117
17. अलंकार निधि	भैरवदान	118 से 121
18. भारतीभूषण	गिरिधर दास	122 से 125
19. करणामरण	गोविन्द	125 से 133
20. दीपप्रकाश	पद्माकर	134 से 136
21. चित्र चन्द्रिका	काशीराज बलवान सिंह	137 से 140
22. चित्रकलावर	गोकुल किंवा ब्रजकवि	141

इसमें 30 पृष्ठ तक नीला कागज लगा है तत्पश्चात सफेद साधारण कागज का प्रयोग किया गया है ।

इनमें अधिकांश ग्रन्थ काव्यांगभेद निरूपण के ग्रन्थ है । यथा -

1. कविकुलकल्पद्रुम -

प्रथम प्रकरण काव्यलक्षण (गुण)

द्वितीय प्रकारण अलंकार (शब्दालंकार)

तृतीय प्रकरण अर्थालंकार

चतुर्थ प्रकरण दोष

पंचम प्रकरण शब्द शक्ति

षष्ठ प्रकरण काव्यभेद अर्थ शक्ति नाचिका भेद

सप्तम प्रकरण नायक वर्णन, श्रृंगार वर्णन

अष्टम प्रकरण रसकिष्पत्ति

नवम् प्रकरण हावभावादि

दशम् प्रकरण शृंगार - वियोग

कुल पत्र 216

2. **काव्यकल्पद्रुम** पिंगल ग्रन्थ/काव्यांग विवेचना

कुल आठ पुष्प, कुल - 175 पृष्ठ

3. **कल्पतरु** - रावणेश्वर कृत में कुल

12 उल्लास या कुसुम

(सात तक उल्लास कहा है तथा बाद में 12 तक कुसुम कहा है)

रस अलंकार - पिंगल - 27 ग्रन्थ

कुल पृष्ठ - 332

4. **लखपतजससिंधु** - कुँअर कुशल कृत

इसमें कुल - द्वादस तरंग है ;

(ग्रन्थ में ग्यारह तरंग ही दी गई हैं)

कुल पृष्ठ 100 हैं ।

काव्यांश विवेचन का ग्रंथ

5. **चरचावलि ग्रन्थ**

इसमें दशखण्ड हैं ।

कुल पृष्ठ - 80

काव्यांग निरुपण का लक्षण ग्रन्थ है ।

ग्रन्थान्त में कविवंश - देशग्राम संवत का उल्लेख है ।

6. **रसचन्द्रोदय में**

कुल 17 कला -

कुल 72 पृष्ठ -

काव्यांश विवेचना

7. **अलंकार आशय**

कुल पृष्ठ 73

काव्यांश विवेचना

8. भूपालभूषण

कुल पृष्ठ 63

काव्यांश निरुपण

9. काव्य निर्णय ग्रन्थ

कुल 24 उल्लास, कुल - 248 पृष्ठ

काव्यांश निरुपण

10. काव्य मंजरी

प्रदुमनदास कृत

कुल 14 कलिका

कुल 204 पृष्ठ

काव्यांग निरुपण

11. अलंकार आदर्शनी अनुक्रमणिका

अलंकार आदर्श

कुल पृष्ठ - 103

काव्यांश विवेचना

12. अलंकार आभा -

यह कुबलयानंद का काव्यानुवाद है।

चतुर्भुज कवि कृत -

कुल पृष्ठ - 233

काव्यांश विवरण

13. रामचन्द्रभूषण

- लछिरांम कृत

कुलपृष्ठ - 143

अलंकार विवेचना

14. रसिक मोहन

कवि रघुनाथ कृत

कुल - 2 मंत्र

कुल पृष्ठ - 121

काव्यांश विवरण (अलंकार)

15. **चेत चन्द्रिका**

अलंकार ग्रन्थ

कुल पृष्ठ - 145

16. **अलंकार निधि -**

कुल 4 प्रभाव

कुल - 102 पृष्ठ

काव्यांश विवेचना अलंकार

17. **भारतीभूषण**

कुल पृष्ठ 24

अलंकार विवेचना

18. **कुलाभरण -**

कुल पृष्ठ 46

अलंकार ग्रन्थ

19. **दीप प्रकाश ग्रन्थ**

कुल 5 प्रकाश

कुल - 49 पृष्ठ

अलंकार ग्रन्थ

20. **पदमामरण ग्रन्थ**

कुल पृष्ठ 59

अलंकार ग्रन्थ

21. **चित्रचन्द्रिका**

इसमें चित्रकाव्य के भेद व्याख्यायित किए हैं । चित्र भी दिए हैं ।

कुल 9 प्रकाश

कुल पृष्ठ - 233

22. **चित्र कलाधर**

कुल - 3 प्रकाश

इसमें चित्रकाव्य तथा अर्थालंकार के प्रकार सोदाहरण लक्षण है ।

कुल पृष्ठ - 140

प्रस्तुत ग्रन्थ कवि गोविन्द गिल्लाभाई की एक परम विशिष्ट सूचि है जिसमें उन्होंने यथा प्राप्य ग्रन्थों की विषयवस्तु का उल्लेख करके ग्रन्थ की महत्ता को स्पष्ट किया है ।

लक्षण ग्रन्थ परम्परा में उन ग्रन्थों का विशिष्ट स्थान है ।

विवेक विलास ग्रन्थ[52]

विवेक विलास ग्रन्थ

गोविन्द गिल्लाभाई

लिपिकार - गो. गो.

कुल छन्द 471

कुल पृष्ठ 96

आभार रजिस्टर

स्थिति अहर्जवत्

इस ग्रन्थ का विषयक्रम दृष्टव्य है -

विषय	पृष्ठ
मंगलाचरण	27
शाखा स्तुति	27
परमेश्वर की स्तुति	28
महालक्ष्मी की स्तुति	28
रामचन्द्रजी की स्तुति	28
कृष्णचन्द्रजी की स्तुति	28
राधिकाजी की स्तुति	28
महादेवजी की स्तुति	28
देवीजी की स्तुति	29
विधि (ब्रह्मा) की स्तुति	29
सूर्य देव की स्तुति	29
गुरुदेव की स्तुति	30
ग्रन्थ प्रयोजन	30

विवेक प्रशंसा/विद्या प्रशंसा/सुकाव्य प्रशंसा/कुकाव्यनिन्दा/कवि लक्षण/सुकवि

प्रशंसा/कुकवि निन्दा/कवि की विधिप्रति प्रार्थना/कवि कौं नहि सतारवे विषे/राज्य पर कविन का हक्क विषै/पडिंत प्रशंसा/सुभाषित प्रशंसा/सुवक्ता प्रशंसा/काकरजी प्रशंसा/व्याकरण नी निंदा/गुण प्रशंसा/गुणवान प्रशंसा/धन प्रशंसा/धननिन्दा/धनवान प्रशंसा/धनवान निन्दा/ सज्जन प्रशंसा/असज्जन निन्दा/सूर्य और दुर्जन विषै/अवगुन परगुन करनहार विषै/संगति विषै/सत्संग विषै/कुसंग विषै/प्रेम प्रशंसा/प्रेमकरन विधि/प्रेममयजगत विषै/प्रेम लगनि विषै/ प्रेम की मधुरता विषै/प्रेम निवाह न विषै/प्रेमनिवाहन दुर्लभ/प्रेमपंथ कठिन विषै/प्रेम पहिचान विषै/प्रेम हढ़ाव/प्रेम छिपाया छिपै नहीं/प्रेमी को प्रेमी मिले बिना सर्व व्यर्थ/प्रेमी मिलाप/ प्रेमकथन/प्रेमनिन्दा/प्रेमदशा/सुमित्र प्रशंसा/कुमित्र निन्दा/स्वार्थ विषै/स्वथी विषै/परोपकार विषै/जन्म सफल करन उपाय विषै/हितशिक्षा/यशःविषै/धर्म विषै/अधर्म विषै/नीति विषै/ उदमविषै/कर्म विषै/प्रतिकूल दैव विषै/अनुकूल दैव विषै/विधि प्रशंसा/विधि निन्दा/विधि उपालंब/मनोपालंभ/संस्कृत भाषा की प्रशंसा/संस्कृत भाषा की निन्दा/प्रतापवान प्रशंसा/ गाफल विषै/धैर्य विषै/उन्नति के प्रतिबंधक विषै/उन्नतिहानि और शीलता विषै/सुस्वभाव विषै/कुस्वभाव विषै/मिलता-स्वभाव विषै/स्वाभाविक बैर विषै/संप विषै/कुसंप विषै/व्यवहार निपुण विषै/सर्ववस्य करन उपाय/सब सबके कार्य में कुनाल विषै/सुखदायक विषै/दुखदायक विषै/चतुर विषै/चतुराई विषै/मूर्ख लक्षण/मूर्खाई विषै/उपहास करिबे जोग्य विषै/दीनता विषै/यौवन प्रशंसा/छैल के लक्षण/कायी पुरुष वचन/स्त्री प्रशंसा/स्त्री भूषणलाज विषै/स्त्री की शोभा शील और साज विषै/पति बिना प्रिया नहिं शोभन विषै/स्त्री के गुदोष विषै/स्त्री अंग निंदा/स्त्री स्वभाव निन्दा/मदिरातें महिला/स्त्री और मदिरा विषै/ग्रहस्थाश्रम निन्दा/बचनपालन विषै/अधम कभी उत्तम होइ नहीं/महन्त पुरुष विषै/बड़े साथ विरोध नहिं करन विषै/सुराजा की राजनीति/कलियुग प्रभाव विषै/कुराजा की राजनीति/धिक्कार योग्य विषै/बसनिवे योग्य विषै/अलग रहन विषै/विश्वास नहिं करिबे योग्य/उदयास्त चढ़ती बढ़ती विषै/होनहार विषै/ होनहार विषै/गणक और गणिका की समता विषै/कृपण और कृपाण विषै/शंकर और स्त्रीस्तन की समता विषै/बुढ़िया और नवोदा की तुलना/राजा और रंक की समता/खड्ग और शत्री की समता कविता और कामिनी की समता/त्याग करिवे योग्य/ओछापात्र/ईर्ष्यालु/क्रोध/पर आशा नहिं करन/तृष्णा/लोभ/लोभी/सूर्य और दाता/लोभी प्रति उपदेश/सोमसरदास/भडुवा।

अन्योक्ति लक्षण/सूर्योनोक्ति/चन्द्रान्योक्ति/मेघान्योक्ति/हंसान्योक्ति/मयूरपिच्छान्योक्ति/ चातकान्योक्ति/शुकान्योक्ति/कोकिलान्योक्ति/वगुलान्योक्ति/चमरान्योक्ति/निंहान्योक्ति/गजान्योक्ति/ ऊँटान्योक्ति/मृगान्योक्ति सरितान्योक्ति/गंगान्योक्ति/सरोवरान्योक्ति/कूपान्योक्ति/पर्वतान्योक्ति/

मलयाचलान्योक्ति/सुवर्णान्योक्ति/हीरान्योक्ति/मलयान्योक्ति/साधारणवृक्षान्योक्ति/कल्प वृक्षान्योक्ति/चंदन वृक्षान्योक्ति/सहकारान्योक्ति/चंपक वृक्षान्योक्ति/कुल वृक्षान्योक्ति/ सहकारान्योक्ति/चंपक वृक्षान्योक्ति/बकुलवृक्षान्योक्ति/केतकी/गुलाब/कदली/दाडिय/दाक्ष/ अशोक/वट/निम्ब/ताड/सेमर/पलास बबूर/करीर/धतूरा/ऊख/जवासा/तुम्बिक/आदि अन्योक्ति/ताम्बूलान्योक्ति/कामदेवान्योक्ति ।

अर्थ शब्दालंकार - चित्रकाव्य वर्णन[53]

यमक विभिन्न शब्द के विशिष्ट प्रयोग दिए गए हैं ।

यह सूची भी पृष्ठ 121 तक है । अपूर्ण है । पृष्ठ अत्यन्त गले हुए से हैं।

विवेक विलास[54]

ग्रन्थारंभ :-

॥ अथविवेक विलास ग्रन्थ ॥

मंगलाचरण । श्री गनपति स्तुति ॥ दोहा ॥

सिद्धिसदन गजबदनवर । गिरिजानन्द गनेस ।
रहियो अनुकूल आप अति । किरिया करी हमेश ॥

॥ पुनः छप्पय ॥

गौरीनन्दगनेश विशदवर विद्यादायक ।
मालचंद, सुखकंद । मंद मति हरन विनायक ।
पीत बसन, इकदसन, असन अति, मोदक भावे ।
सिंदुर चरचितमाल, माल उर कुसुम सुहावे ।
उन ध्यान धरौं निज उर विषै, गोविंद सौ संयति सदन ।
मनमोदकरन भवभय हरन, विघन दरन बारन बदन ॥

छन्दयोजना

इसमें अधिकांशतः धनाक्षरी छन्दों का प्रयोग हुआ है । दूसरा बहुप्रयोगी छन्द सवैया है, तीसरा दोहा है । इनके अतिरिक्त - छप्पय, कुंडलिया । दुर्मिल, समुद्रबंद, इन्द्रविजय सवैया । आदि कुछ छन्द चित्रकाव्य के भी हैं । उदाहरण दृष्टव्य है -

मात्रा रहित एक ही स्वर का छन्द इस प्रकार है -

॥ कवित्त ॥

अजर अमर अज अकत अगम यह,

वरन करन सब सघन अघन हर ।

भगत भजत तब तजत सरब भय,

अभय करत मन, परम धरम धर ।

जनम मरन जग, हरन सकल जन,

करन कलम वह कमल नयन धर ।

अमर भरत भव अचल धरत यह,

कर समरन मन, महत लहत वर ।

सर्व दीर्घा मात्रा का छन्द -

मेरी माता मेरौ भ्राता, मेरी कांता प्यारी भारी ।
मेरौ बेटा, मेरी बेटी, मेरी काया माया है ।
मेरे हाथी, मेरे साथी, मेरे गाजी बाजी सोहैं,
मेरे नाती ज्ञानी ऐसे छाती में सोहाया है ।
मेरे लेना मेरे देना मेरैं पैसा ज्यादा बाड़ै,
आसा ऐसी धारै भारै धंधा माही धाया है ।
झूठे ऐसे फंदा तामैं, मूलीकै लोबाया कैसे ।
धाता को न ध्याया झूठी माया में बंधाया है ॥

इसमें चित्रकाव्य के चित्र नहीं बनाए हैं । यह सम्पूर्ण रूप से एक लक्षण ग्रन्थ है प्रति अपूर्ण है । पुष्पिका में ग्रन्थ रचनाकाल के विषय में संकेत है -

अबद उनीस पचीस तें, अस्सी सौ उरआन

(या पाठभेदानुसार)

संवत उन्नीस बीस तें, अस्सी सौ उर आन ।
किए कवित जिहिं नीति के, सो सब पामें मान ।

(संवत् 1920) सन् 1863

पृष्ठ 113 से विवेक विलास ग्रन्थ में 'बढ़ारा' अंश या अतिरिक्त अंश और जोडा गया है । इसे प्रक्षिप्त नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह अंश स्वयं कवि गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा ही लिपिबद्ध किया गया है । विवरण द्रष्टव्य है -

विशेष - बढ़ारा

चतुस्पादे एक सारंग शब्द यमक

॥ कवित्त ॥ (शृंगार सरोज से)

सारंग[1] तें वर्ष लगे सारंग[2] गुविंद तब,

सारंग[3] चमकि करे, सारंग[4] सकल सौर ।

सारंग[5] वा समैं लखि, सारंग[6] करन लागे,

सारंग[7] नयन रुठि सारंग[8] के सुनी सोर ।

सारंग[9] विमर्द्धमांहि सारंग[10] शयन लखि

सारंग[11] संताय लग्यौ, सारंग[12] कौं मारि घोर ।

सारंग[13] से अंगनि में सारंग[14] लगाई पुनि,

सारंग[15] बजाई बाल, सारंग[16] बिताई ओर ॥

1. व्योम, 2. बरसात, 3. बिजली, 4. प्रकाश, 5. मोर, 6. मयूरवाणी, 7. कमल, 8. पपीहा, 9. स्तन, 10. पुष्प, 11. काम, 12. बारग, 13. कंचन, 14. चंदन, 15. सारंगीवाद्य, 16. रात

इसी प्रकार प्रौढ़ा वासक सज्जा का रचित सारंग शब्द यमकानुसार ध्यातव्य है -

सारंग[1] के होत करि, सारंग[2] अनेक पुनि,

सारंग[3] तें न्हाइ सीस सारंग[4] सुधारे हैं ।

सारंग[5] कौ साजि अंग, सारंग[6] सुमग धरि,

सारंग[7] से लोचन में, सारंग[8] न सारे हैं ।

सारंग[8] को सेज साजि, सारंग[10] लगाय तनु,

सारंग[11] नयनि बैठि, सारंग[12] पसारे हैं ।

सारंग[13] हनत बाहौं, सारंग[14] गुविन्द तबै,

सारंग[15] धरन राह, सारंग[16] निहारै हैं ॥

1. रात्रि, 2. दीपक, 3. जल, 4. केश, 5. वस्त्र, 6. भूषण, 7. कमल, 8. काजल, 9. फूल, 10. चंदन, 11. मृग, 12. सुगंध, 13. बाण, 14. कामदेव, 15. धनुषधारी कृष्टम, 16. स्त्री

इस प्रकार के और भी तीन छन्द हैं जो सायास हैं ।

पृष्ठ 120

विवेक विलास बढ़ारा में ही कवि ने यह अतिरिक्त संस्करण जोड़ा है -

इसमें राकावली अलंकार लक्षण । कुंभान्योक्ति । घड़ा कौ नायक प्रत्युत्तर । नायक की सखा प्रति उक्ति । किवार की ओर से सखा प्रत्युत्तर । बुढ़ापा विषै । ढगामेल विषै। कवि गोविंद निवास स्थान विषै । पुनः बुढापा विषै ।

यह अन्तिम छन्द संख्या - 411 लिखी है । पृष्ठ 120 तथा 121 पर कुल 13 छन्द लिपि वद्ध हैं ।

इसके आगे के पृष्ठ रिक्त हैं । पृष्ठ संख्या 114, 113, 115, 116, 117, 118 फटे हुए एवं गले हुए हैं ।

गोविन्द हजारा[55]

- **गोविन्द गिल्लाभाई**
- **रजिस्टर आकार**
- **कुलपृष्ठ - 288**
- **ग्रन्थ जिल्द पर 'अपूर्ण' लिखा है ।**
- **लिपिकार गोविन्द गिल्लाभाई**
- **लिपिकाल सं. 1975**
- **ब्रजभाषा लक्षणग्रन्थ**

गोविन्द हजारा की यह दूसरी प्रतिलिपि है ।

इसमें प्रथम पृष्ठ से विषय सूची दी गई है जिसमें ग्रन्थ के वर्ण्य के विषय में शीर्षक-उपशीर्षक दिए गए हैं ।

इसमें कुछ छः प्रकरण (खण्ड) हैं ।

प्रथम प्रकरण : इस प्रकरण में प्रारम्भ में देवस्तुतियाँ हैं, हिन्दीभाषा तथा भाषा के भेद । व्याकरण आदि का विवरण है । कविता लेखन में तुक-योग का वर्णन है, कविता के चार मुख वर्णन हैं । पिंगल चर्चा है । सवैया के भेद हैं । कवित्त के भेद हैं । मुक्तक छन्द के लक्षण हैं छन्दों के अन्य विवरण भी हैं ।

द्वितीय प्रकरण : इस प्रकरण में अलंकारादि का वर्णन है । अनेक देवों की स्तुतियाँ हैं ।

तृतीय प्रकरण : काव्योपभेदों की चर्चा है । वक्रोक्तिभेद दिए गए हैं । अपन्हुत्ति अलंकार का विवरण है । (बीच का पृष्ठ 6 तथा 7 नहीं है) पृष्ठ 6 तथा 7 में प्रकरण तीन,

चार का विवरण संलग्न है ।

छठा प्रकरण : इस प्रकरण में विविध छन्दों एवं अलंकारों की चर्चा है ।

यह एक संग्रह ग्रन्थ है जिसमें निम्नांकित कवियों के छन्द संग्रहीत किए गए हैं -

अलखतरंग	गुलाब
अलीमन	गुविंद
अवधेश	गोकुल
आनंद	गोविन्द
आनंदघन	ग्वाल
औध	चोखे
अधाराय	छेभ
कान्ह	जगदीस
कालीदास	जगन्नाथ
काशीराज	जगमोहन
कुंजलाल	जगेश्वर
केशव	जदुनाथ
केशौदास	जलालदी
कृष्णलाल	ठाकुर
कोविद	डालप्रसाद
खुसरो	दयानिधि
गंग	दास
गंगाप्रसाद	दीनदयाल
गनपाल	देव
गिरिधारन	देवजू
गुमान	देवकीनन्दन
गुरुदत्त	देवीदास
द्विजदेव	भुवनेश
धनसिंह	भूषण

नरनागर
नंदराम
नंदलाल
नाथ
नीलकंठ
नेही
नृपशंभु
पदमाकर
परशाद
परम
पारस
पृथ्वीराज
पुरवी
प्रताप
प्रवीन
प्रसिद्ध
प्रहलाद
बलदेव
बलवीर
बाहिद
विजयानन्द
विप्रबिहारी
बिहारी
वीरजू
बीरबल
बेनी
बेनीप्रदास
बैजनाथ
ब्रजनाथ
मौन
मंगद
मंगलदीन
मतिराम
मनसा
माखन
माधव
माधौ
मुकुंद
मुकुंदलाल
मुरलीधर
यशवंत
रंगखान
रघुनाथ
रघुराज
रनछोर
रसदेव
रसरासि
रसिकेश
रसिक
राम
राजाराम
रामकवि
रामजी
रामचरित्र
रामलाल
लघनेश
ललित किशोर
ललित किशोर

ब्रज	लाल
भंजन	लालचन्द
भमान	शंकर
शंभु	सुन्दर
शशिनाथ	सुन्दरदास
शिरताज	सुंवश
शिवदत्त	सूरतिमिश्र
शिवराज	सैनापति
श्याम	हठी
श्रीपति	हनुमंत
संगम	हनुमान
सरदाजू	हरदास
सीताराम	हरदेव
सुकवि	हरिचंद
सुजान	हरिचरन
हरिवंश	हुलास
हेम	गोपाल

कुल 140 कवियों के काव्य का संकलन गोविन्द हजारा एक संग्रह ग्रंथ है जो लक्षण ग्रन्थ की परम्परा पर सम्पादित किया गया है ।

ग्रन्थारम्भ

मंगलाचरण विषै कवित

मंगल के प्रयोजन कोविद कहत चार ।
एक निरविघ्न ग्रन्थ पूरन काज हैं ।
दूसरे कविन्द्र कुल रीति अनुसार, पुनि -
तीसरो बताइबौ सु आसथा इलाज है ।
विनय बलिल निज विघ्न में बतान, चौथा,
कारन कहत ऐसे केते कविराज हैं ।
गोविन्द सो तीन बिधि, प्रथम नमस्कार,

आशिष औ वस्तु निरदेश ही छराज है ।

नमस्कारात्मक मंगलाचरण के लक्षणं दोहा -

प्रथमदेव सुमरन करी, नमन करत कविराज ।
नमस्कार आत्मक विसै, कोविद कहत सदाय ॥

इसमें कुल 1054 छन्द हैं । ग्रन्थ समाप्ति में संग्रहकर्ता कहता है -

सरस सरस कवि काव्यन में चुनि चुनि,
कमनीय कवित कों नेह ते निहारे हैं ।
जामें अति ओज बारी, रचना लखाय पुनि,
सुखद चमतकार ओपत अपारे हैं ।
ऐसे ऐसे कवित कों संचय सुगम करि,
'गोविंद हजारा' उन नाम निरदारे हैं ।
तामें होइ चूक सोई लीजिओ सुदार सबै,
कविन कोविद चूकों विनय हमारे हैं ॥

ग्रन्थ रचनाकाल हेतु

विमल विशाल देश काठिया सुबाढ़ तामें,
सुंदरसिहोंरपुर ओपत अपारा है ।
याहि में बसत, हम स्वजन सहित सदा,
गिल्लाभाई नंद नाम गोविंद हमारा है ।
संवत उन्नीस सौ पंचत्तर शासन में,
सावन शुकल पक्ष पूर्ण सोमवारा है ।
गोविंद कहत तब, संकलित सर्वकारि,
पूरन प्रकास कियौ गोविंद हजारा है ॥

इति काठियावाड़ देशान्तर्गत गोहिलवाड़ प्रांतस्थ सिंहोर नगर निवासी चौहान वंसोद्भव गिल्लाभाई सुत गोविंद कवि विरचिते गोविंद हजारा नामक ग्रन्थ सम्पूर्णम् इति ॥

जिल्द पर लिखा है कि यह ग्रंथ अपूर्ण है किन्तु ग्रन्थ सम्पूर्ण है । अन्तिम पुष्पिका तक दी गई है । जो बीच में ही एक पृष्ठ रिक्त है वे अनावश्यक ही है ।

शब्द विभूषण[56]

शब्द विभूषण

गोविन्द गिल्लाभाई

आकार रजिस्टर

लिपिकार गोविन्द गिल्लाभाई

लिपिकाल संवत् 1974

कुल पृष्ठ 121

कुल तीन प्रकाश

कुल छन्द :-

प्रथम	-	142
द्वितीय	-	79
तृतीय	-	160
कुल	-	381
अतिरिक्त	-	7
कुल	-	388

लक्षण ग्रन्थ

इसका विषयानुक्रम इस प्रकार है -

प्रथम प्रकाश :- मंगलाचरण गणपति/सरस्वती स्तुति/काव्यप्रयोजन/काव्यप्रशंसा/अलंकार/ग्रन्थनाम/कविविनय/शब्दालंकार/अपनुप्रास के भेदोपभेद/समांत/पदांत/ विषयांत।

द्वितीय प्रकाश :- यमक भेदोपभेद/सिंहावलोकन श्लेषभेदोपभेद/बिन्दुच्युत/मात्राच्युत/व्यंजनच्युत/अक्षरच्युत/च्युत दत्ताक्षर/वक्रोक्ति/वक्रोक्ति के भेदोपभेद ।

तृतीय प्रकाश :- छेकापन्हुति/किंवा मुकरी/व्यतिरेकालंकार/रत्नावली अलंकार/कालमाला लक्षण/एकावली/मुक्त प्रकेशी/सार लक्षण/मुद्रालंकार/यथासंख्यालंकार यथाक्रम/यतिक्रम/यतिमंत्र/विरोधाभास लोकोक्ति/अन्योक्ति/विहितालंकार/सूक्ष्म अलंकार/विवृतोक्ति अलंकार/गूढ़ोक्ति/गूढ़ोत्तरा ।

चतुर्थ प्रकाश :- कवि ने पृष्ठ 76 छन्द संख्या 76 के बाद तृतीय प्रकाश समाप्त कर दिया है तथा छन्द 77 से चतुर्थ प्रकाश प्रारम्भ लिख दिया गया है । किन्तु यह प्रकाश-

भेद बाद में किया गया है । क्योंकि अन्य प्रकाश में की तरह चतुर्थ प्रकाश का प्रारम्भ छन्द संख्या एक से नहीं है । तृतीय प्रकाश का अन्तिम वाक्य भी लाभ स्याही से नहीं लिखा है। प्रकाश तृतीय और चतुर्थ का एक सा है । इससे ज्ञात होता है कवि ने बाद में यह भेद किया था क्योंकि प्रकाश का अन्त तथा आरम्भ में स्वयं कवि ने लिखा है । अतः यह कविकृत्य मान्य है ।

इससे आगे :- प्रश्नोत्तर/प्रश्नोत्तर के भेदोपभेद/शासनोत्तर के लक्षण एवं भेद/बहिर्साक्षिका/अन्तरलक्षिको/चतुष्पाद प्रश्न/प्रहेलिका/पहेली/वर्णपहेली/चित्रकाव्य/शब्दचित्र/स्वरचित्र/चित्रकाव्य के भेदोपभेद/समुद्रबंद चित्र तथा सवैया/कवि वचन/निवास स्थान/ग्रन्थ सवत्सर/चित्रकाव्य ।

ग्रन्थारम्भ :-

शब्दविभूषण ग्रन्थ प्रारम्भ : दोहा गणपति स्तुति । मंगलाचरणे :-

विघ्नहरन मंगलकरन । गनपति मुद के मूल ।
करि करुणा मुख आपने । सदा रहौ अनुकूल ॥1॥

सरस्वती की स्तुति

॥ दोहा ॥

वीणा पुस्तक धारिणी, शारद सुखद विशाल ।
करि करुणा मो पर सदा, बानी करौं रसाल ॥2॥

काव्य प्रयोजन यथा :-

॥ सवैया ॥

मानव के मन कौ बहलावन, जाहि रुचै वह सोइ बतावै ।
कोऊ कहै तरुनी तन के अति, हावरुभाव महामुद लावै ।
कोऊ करै सुभ संगति शास्त्रसु, मोहमहा मन मांहि रचावै ।
'गोविंद' पै उनतैं अति आनंद, काव्यकला रस और उपावै ॥3॥

स्थान-स्थान पर कवि ने कविता का अर्थ भी गद्य में प्रस्तुत किया है यथा -

अलंकार आवश्यकता किंवा प्रयोजन

॥ सवैया ॥

सुन्दर सुद्ध सरीर सुहावत, चारु सुवर्णमयी सुखकारी ।
भावभरी रसरीतभरी पुनि, धारित सर्व सगून अपारी ।
ऐसी अनूप सुवृत्तिभई यहाँ, दूषणबीन विराजत भारी ।
'गोविंद' तो हून भूषण के बिन, भाय भली कविता वनितारी ॥4॥

प्रथम अर्थ कविता पक्षे -

कविता का (शरीर) छन्द शुद्ध सोहत होय और अच्छे-अच्छे अक्षरोंमय सुखकारक होय और कविता विभावादिक सर्वभावों तें भरी हुई होय और रस की रीतितें भरी होय तथा सर्वसुंदर गुणों युक्त होय ऐसे अनूपम सुंदर छन्दमई और दोषों से रहित विराजमान होय-गोविंद कहै तौ भी अलंकार बिना कविता अच्छी नहीं शोहत है ।

प्रथम अर्थ वनिता पक्षे -

स्त्री का शरीर पवित्र सोहत होय और जिनके सरीर के रंग सुन्दर सुखकारी होय और हाव भाव अधिक चेष्टा तें भरी हुई होय और शृंगार रस की रीति में भरी हुई होय और सर्व सद्गुणों का धारण करने वाली होय, ऐसी अनुपम सुन्दर आचार वाली तथा दोषों बिना की अच्छी शोहत होय, गोविंद कहैं तो भी गहना (भूषण) के बिना नायका अच्छा नहीं सोहत है ।

अंतिम दोहा ध्यातव्य है -

सँवत सीस नव साल सुति, मास अषाढ़ प्रमाय ।
सुदि चौदस शशिबार दिन, किये पुण्य सुखदाय ॥

इति श्री काठियावाड़ देशान्तर्गत गोहिल वाढ़स्य सिंहार गाँव निवासी चहुवान गिल्लाभाई सुत गोविंद कवि विरचिते शब्द विभूषण नायक ग्रंथ संपूर्णय ॥

अन्त में यमक के उदाहरण के बाद वढ़ारा दिया है जिसमें परिसंख्या अलंकार के 4 छन्द दिए हैं ।

पृष्ठ 121 पर खंडिता किंवा मानवती नायिका का प्रश्नोत्तर काकुवक्रोक्ति कवित्त है। अन्त में काव्यरसायन श्लेष वक्रोक्ति का एक सवैया दिया है ।

इस प्रकार देखा जा सकता है कि गोविन्द गिल्लाभाई का स्वयं का कृतित्व तथा उनके द्वारा संग्रहीत साहित्य विपुल मात्रा है जो उनके सक्षम रचनाकार को व्यक्त करता हुआ उनकी बहुआयामी कारियित्री प्रतिभा को ज्ञापित करता है ।

सम्पादन कला

कवि गोविन्द गिल्लाभाईने प्रमुख व्रजभाषा कवियों के कृतित्व को व्यवस्थित रूप से सम्पादित तो किया ही है । साथ में उन्होंने किसी भी विषय पर जब लेखन प्रारंभ किया है तो उससे सम्बन्धित सभी प्राप्य जानकारियाँ भी एकत्र करके सम्पादित की हैं । उन्होंने इस संदर्भ में राजनीति, इतिहास तथा साहित्य के सम्बन्धित सूत्रों को भी एकत्र करके प्रस्तुत किया है । उनकी मूल प्रवृत्ति साहित्य के अध्येता को अधिकाधिक जानकारी प्रदान करना रहा है, यह उनकी सम्पादकीय सूझ को व्यक्त करता है ।

यहाँ हम उनके द्वारा एकत्र सूचनाओं तथा कुछ विशिष्ट सम्पादित ग्रंथों के विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं ।

आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाईने सूचनाओं के एकत्र करने के लिए **डायरी लेखन** की विधि को स्वीकारा था । उनके द्वारा लिखी गई ऐसी अनेक डायरियाँ प्राप्त होती हैं, जिनमें उन्होंने महत्वपूर्ण सूचनाएँ एकत्र की थीं । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

संक्षिप्त जीवनी तथा डायरी[52]

विवरण

गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा लिखित चमड़ा जिल्द आकार रजिष्टरवत्

कुल 7 (सात) संग्रह सन्निहित हैं :-

1) **कवि जीवराम अजरामर का जीवन चरित्र**
2) **गोविन्द गिल्लाभाई के समय तक छपी हुई पुस्तकों के नाम (लेखकों निहित)**
3) **इतिहास सम्बन्धी सूचनाएँ ।**
4) **गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा की गई शिलालेखों की नकल ।**
5) **साहित्य सम्बन्धी सूचनाएँ ।**
6) **गोविन्द गिल्लाभाई का जीवन चरित्र (डायरी)**
7) **कवि गोविन्द गिल्लाभाई के व्यक्तिगत पत्र**

कवि जीवराम अजरामर का जीवन गुजराती भाषा में लिपिबद्ध है ।

प्रथम पृष्ठ से संस्कृत के श्लोकों का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है जिसमें कवियों

की विशिष्टता को ज्ञापित किया गया है ।

पत्र -3 के दूसरे परिच्छेद से कवि जीवराम के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालना प्रारम्भ किया गया है ।

लेखक गोविन्द गिल्लाभाई कहता है -

अत्रे कच्छ भुज ना प्रख्यात कविराज जीवराम अजरामर गौर नुं टुंक चरित्र लखवा धारिए छीए.

कविराज जीवराम अजरामर गोरनी टुंक हकीकत गुजराती नामना साप्ताहिक वर्तमान पत्रमां त्थां कच्छी नैनमित्र तथा विक्रमनी वीशमी सदी आदि मासिको में छपी है । किन्तु यह तोड़ मरोड़ के कारण वास्तविकता से दूर है ।

इसके बाद कवि जीवराम का जीवन चरित्र लिखा गया है । विवरण इस प्रकार है -

कवि जीवराम

जन्म - आश्विन सुद 7 सं. 1923 (शाके 1788),

गाँव के स्कूल में छठी कक्षा तक अध्ययन,

भुज की नं. 1 दफ्तरी स्कूल में मास्तर जगन्नाथ के सान्निध्य में परीक्षाएँ दी । (7 कक्षा)

अहमदाबाद के ट्रेनिंग कालेज से 1943 में तीन वर्ष में अध्ययन पूर्ण किया । कबीर पंथियों के स्थान पर बारह महिने नौकरी की ।

कच्छ दरबार के शिक्षा विभाग में सर्व प्रथम लखपत गाँव में 40 कोड़ी के पगार से शिक्षक बना ।

तीन वर्ष रहकर 1944 में भुज गाँव के स्कूल में 60 कोडी तनखा में काम किया। यहाँ हेडमास्टर हो गए । 1944 से 1950 तक छः वर्ष यही रहे । मुद्रा गो रक्षक मंडली की सेवाएँ कीं ।

अढाईस वर्ष की आयु में सवंत 1950 मे स्कूल में बड़ी प्रतिष्ठा के साथ स्वर्ण चन्द्रक युक्त कविपद अर्पण किया गया । 1950 में भुज की दरबारी नं. 1 में 40 कोड़ी वेतनपर फर्स्ट असिस्टेन्ट नियुक्त हुए । वहाँ व्यायाम शिक्षक बने । 1961 तक सरकारी सेवा में ही रहे ।

इसके बाद अन्य सेवाएँ विवाह संतति ग्रंथ आदि के विषय मे विस्तृत जानकारी प्रदान की है। ये काव्यशास्त्र के विशिष्ट विद्वान थे । इनके 4 पुत्र तथा 4 पुत्री थीं । संतानों में लक्ष्मीराम, हांसबाई, फिर ईश्वरप्रसाद, राजाराम, रतनबाई, केसरबाई, श्रीधरप्रसाद, शारदागौरी

इसप्रकार -

1. लक्ष्मीराम, 2. ईश्वरप्रसाद, 3. राजाराम तथा 4. श्रीधर प्रसाद पुत्र थे ।

और इसी प्रकार -

1. हांसबाई, 2. रतनबाई, 3. केशरबाई तथा 4. शारदागौरी पुत्रियाँ थीं ।

ग्रन्थ रचना -

1. शंकर यश मालिका (हिन्दी में)

गुजराती में इनके सात ग्रंथ हैं -

1. काव्य कलाधर (कला पहली 1949)

2. दादाभाई स्तोत्र (महासर 1950)

3. वीर बत्रीसी (1950 श्रावण)

4. प्रेमच पंचोत्तरी (1950 आसोव)

5. विदुर नीतीनुं भाषांतर (1955 कार्तिक)

6. दामोदर शतक

7. मणियश मालिका

इसके अतिरिक्त स्फुट रूप से भी पर्याप्त लिखा है ।

इसके बाद पुनः श्री कच्छ भुज ना कवि जीवराम राजाराम गौरनुं टुक जीवन चरित्र दिया गया है ।

इन्होंने 'सरस्वती शंकर' नाम की मासिक पत्रिका निकाली ।

इनके अतिरिक्त

केशव कृत कविप्रिया की गुजराती टीका ।

लगन अंग्रेजी सर्वेप्रिय शास्त्र का भाषान्तर । रसराज की गुजराती टीका ।

आईवन हो (सर वालतर कृत) का अनुवाद

वचनामृत (अंग्रेजी एवं फारसी उपदेश)

हिदायत लतीफ (फारसी ग्रंथ का गुजराती भाषांतर)

सुन्दर रत्नमाला (हिन्दी कविताओं का संग्रह)

ज्ञान पारस मणि गुजराती भाषान्तर

खूँनी खटमल्ल ने माटे पाथरेली जाल ।

आदि अनेक गुजराती ग्रंथो का आपने सृष्टि की है ।

यह सारा विवरण पृष्ठ 10 तक ही है जो अपूर्ण ज्ञात होता है ।

गोविन्द गिल्लाभाई के समय तक प्रकाशित हिन्दी की पुस्तकों की सूची

इसमें प्रथम सूची उन ग्रंथों की है जो गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में अप्रकाशित रूप से सुरक्षित हैं, जिनका अभी तक प्रकाशन नहीं हुआ है । इसमें निम्नांकित कवियों की रचनाएँ समाविष्ट है :-

हस्तामलक भाषा /अखैराम, राजयोग /अनन्य विज्ञानबोध, कोकसार /आनन्द, कृपाकंद/आनंदघन, वियोग बेलि/आनंदवन, माधव काम कन्दला/आलम, पाँचसौ स्फुट कवित्त/आलम, अलंकार आशय/उत्तमचंद भंडारी, गुनमाला/उदयराज, महोजदीन मैहताब/ उदैराज, कुकवि कुठार/उद्धव, अलंकार कला निधि/कलानिधि, शृंगार रस माधुरी/कलानिधि, वृत्त चन्द्रिका पिंगल/कलानिधि

इसप्रकार कवि ने अपने संग्रह में 138 कवियों के ग्रंथों की सूची दी है और कुल 203 ग्रंथों का उल्लेख किया है ।

इसमें ग्वाल कवि कृत निम्न ग्रंथ समाविष्ट है :-

1. साहित्यानंद
2. रसिकानन्द
3. रसरंग
4. कविदर्पण
5. भक्त भावन
6. नेहनिर्वाह
7. वंशीबीसा
8. कुब्जाष्टक

भक्तभावन में :

1. यमुनालहरी
2. गोपी पचीसी
3. नेत्र शतक
4. नखशिख तथा अनेक अष्टक ग्रंथ समाविष्ट है ।

नवनीत चतुर्वेदी के - स्नेह शतक तथा कुब्जापचीसी है ।

जिन कवियों के ग्रंथो का उल्लेख है उनके नाम :-

1. अखैराम	2. अनन्य	3. आनन्द
4. आनंदघन	5. आलम	6. उत्तमचंद भंडारी
7. उदयराज	8. उदेराज	9. उद्धव
10. कलानिधि	11. कल्यानदास	12. कल्यानमिश्रा
13. कविराज (शुकदेव)	14. कवीन्द्र (उदयनाथ)	15. कान्ह
16. कालीदास	17. किसन	18. कुलपति मिश्र
19. भट्टार्क कुँवर कुशल	20. केसवर चारण भुज	21. केशव आचार्य जैन
22. कृष्णदास	23. खेम	24. गंगाराम
25. गणेश चौबे (करौली)	26. गणदेव	27. गुलाबसिंह
28. गोप (प्राचीन)	29. गोप विद्यामन	30. गोपाल प्राचीन
31. गोपालभाई सिंहौर	32. गोवर्द्धन भट्ट	33. गोविन्द रसिक
34. गोविन्द गिल्लाभाई	35. ग्वाल	36. चतुर
37. चतुरभुज मिश्र	38. चतुरभुज कायस्थ	39. चंद
40. चंद गुसाई	41. चंदन	42. चिंतामणि
43. जगदीश	44. जगन्नाथ	45. जयकृष्ण
46. जसवंत विश्वनरेश (वघेला)	47. जसराज (जैन)	48. जसुराम चारण
49. जीवन (जीवन विजय)	50. ताज (मुसलमान करौली)	51. दत्तलाल
52. दयानिधि	53. दक्षन (अहमदुल्लाह)	54. दुल्लभ
55. दूलह	56. देव	57. देवीदास
58. नंददास	59. नरसिंह दास	60. नरोत्तम
61. नवनीत	62. नवीन	63. निपट निरंजनी
64. नौने व्यास	65. पंगु कवि	66. पद्माकर
67. परशाद (वेनीपरसाद)	68. प्रताप	69. बख्तावर

70. बनारसी दास 71. वल्लभ 72. वल्लभ रसिक

73. बंसीधर दलपतराम 74. बानी कवि 75. बालकृष्ण

76. बालचन्द जैन 77. बुद्धसिंह (कन्दीनरेश) 78. वेनीदास

79. वृन्द 80. ब्रजचन्द्र

81. ब्रजनिधि (महाराणा प्रतापसिंह)

82. भगवान 83. भूधर 84. भूषण

85. भैरव दास 86. मंडन 87. मधुसूदन

88. मयाराम 89. महासिंह 90. महेश

91. मान 92. मोतीसिंह 93. रघुराम

94. रञ्जवदास 95. रणमल भाट 96. यत्नजीत

97. रसपुञ्जदास 98. रसानन्द 99. रसराशि

100. रससिंधु (कमलनयन) 101. रामलाल 102. रामसिंह

103. रूपकवि 104. ऋषिकेश 105. लाल

106. लाल (जयदेव) 107. लाल (ज्वालाप्रसाद)

108. शिवचन्द (सेवक) 109. शिवदास 110. शुकदेव

111. शुकदेव 112. शुमकरण 113. शोम

114. श्रीपति 115. सरदार 116. संभूनाथ

117. सुजान (कुँवर फकीरसिंह) 118. सुन्दर 119. सुरतमिश्र

120. सुलतान 121. सेनापति 122. सोमनाथ

123. हरख 124. हरिचरन दास 125. हरिदास

126. हरिप्रसाद 127. हरिसिंह 128. हरिसिंहजी

प्रस्तुत पाण्डुलिपि में रचनाकारों की कुल संख्या 138 दी है, जबकि कुल संख्या 128 ही है । क्रमसंख्या में लिपिकार के प्रभाव से 17, 18 के बाद 29 आ गया है । और फिर संख्या 29 के बाद की ही चली है । इस प्रकार 10 का भेद है । वैसे कुल रचनाकारों की संख्या 128 ही है ।

इतिहास सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएँ : गोविन्द गिल्लाभाई

प्रथम पत्र की नकल

દક્ષિણના મહારાજા છત્રપતિ શિવાજીને ચાર સ્ત્રિયો હતી. તેમાં નિંબાળકરની પુત્રી લઈબાઈ થકી ઈસ્વીસન ૧૬૫૯ માં સંભાજીનો જન્મ થયો હતો. બે વર્ષમાં તેની માઁ ગુજરી ગઈ. તેથી સંભાજી તેના બાપ શિવાજી પાસે નિરંતર રહેતો હતો. અને તેથીજ સને ૧૬૬૬ માં શિવાજી દિલ્હીએ ઔરંગજેબને મળવા ગયા. ત્યારે સંભાજીને સાથે લેતા ગયા. પણ ત્યાં તેમનું ધારવા પ્રમાણે સન્માન થયું નહી. પણ અપમાન થયું. તેથી દિલ્હીનું હવાપાણી મને ત્યાં મ્હારે લશ્કરે માફન નથી એવી અરજ બાદશાહ પાસે કરીને લશ્કરને દેશમાં પાછા મોકલી આપવા રજા મેળવી. લશ્કરને પાછુ મોકલાવી આપ્યું. અને પોતે તથા સંભાજીને દશ-બાર ઉપયોગી માણસો પાસે રાખ્યા. તે જાણી ઔરંગજેબ મનમાં રાજી થયો. કે હવે શિવાજી મહારાજ હાથમાં બરાબર સપડાયો છે. પણ શિવાજીએ પ્રથમથીજ વિચાર કરીને પછી પોતાનું લશ્કર મોકલી આપ્યુ હતું. અને પોતે મંડવાડનું બહાનું કાઢી માંદો પડ્યો હતો. ને ઘણે દિવસે સારો થવાનો ડોળ કરી પૂન્યદાન કરવા લાગ્યો. ને અમીર ઉમરાવોમાં મિઠાઈના ટોપલા ભરીભરીને હમેશાં મોકલતો હતો. એમાં એક વખત લાગ જોઈને બાપ-દિકરો બે ટોપલામાં બેસી ગામ બહાર સંકેત સ્થળે નિકળી ગયા. ને ત્યાંથી કરેલી વાહનની સગવડે રાતદિવસ ચાલી ઈલાહાબાદ પ્રયાગમાં જઈ એક કલશ નામના બ્રાહ્મણને ત્યાં સંભાજીને રાખઈ પોતે વેશ બદલી કરી દક્ષિણ તરફ રવાના થઈ સ્વસ્થાન માં આવી પહોંચ્યા. ત્યારપછી કેટલેક દિવસે સંભાજીને લઈને કે કલશ નામનો બ્રાહ્મણ પણ આવી પહોંચ્યો.

ઉપર પ્રમાણે સંભાજીને કલશ તાળના કવિનો સહવાસ ઘણા દિન રહેવાથી પોતે હિન્દી ભાષા ઉપર પ્રેમ થયું. અને કલશ કવિ પાસે ભાષા કાવ્યના ગ્રંથો શિખી કવિતા કરવા લાગ્યો.

શ્રૃંગાર રસની કવિતામાં એટલો બધો નિમગ્ન થયો કે રાતદિવસ સ્ત્રિયોં સાથે વિલાસમાં રહેવા લાગ્યો. એક ખૂબસુરત બ્રાહ્મણ કન્યાસાથે બલાત્કાર સંભોગ કર્યો. તે ખબર શિવાજીને પડવાથી તેમને ખરાબ કરશે એમ જાણી ગુપ્તરીતે નાસીને દિલ્હીમાં મુગલબાદશાહના સૂબેદાર દિલેખાનને જઈ મળ્યો ને તેમની પાસે રહી મરાઠા વિરૂદ્ધ ગરજવા લાગ્યો. પણ દિલ્હીથી ઔરંગજેબનો પત્ર આવ્યો કે સંભાજીને કૈદ કરી દિલ્હી મોકલી આપો. તે ખબર તેને પડવાથી ત્યાંથી નાસી પાછો શિવાજીને આશ્રય આવી

માફી માંગી ત્યારે શિવાજીએ સર્વ ગુનાહ માફ કરી પોતાની પાલ સુધારે ત્યાં સુધી પન્હાળા કિલ્લામાં નજર કૈદ તરીકે રાખ્યો તેથી તે ત્યાંજ રહેવા લાગ્યો. અને રાત દિવસ કાવ્ય ચર્ચા તથા વિષયભોગમાં ને મદિરા સેવનમાં રહેવા લાગ્યો. તે ખબર પણ ખાનગી રીતે શિવાજીને મળવાથી પોતે પોતાના કુટુમ્બમાં અને અમીર ઉમરાઓમાં કોઈ કોઈ તે કહેતો હતો. મારી ગેરહાજરીમાં મારા રાજ્યનું તું શું કરશે. કેમકે સંભાજી સંળાળી શકશે નહી અને રાજારામ નાનો હોવાથી તેને અપાય નહીં. માટે સું કરવું તેની મને નિરંતર ચિન્તા રહ્યા કરે છે.

એવા વચન શિવાજીના સાંભળી તેની બીજી સ્ત્રી સોયરાબાઈ જેને પેટે રાજારામ જન્મો હતો. તેણે પોતાના દિકરા રાજારામને ગાદી મળે તો ઠીક થાય એમ ધારી પોતે પ્રધાન મંડળને લક્ષ્ય કરી પોતાની સત્તા બધારવા લાગી.

એટલામાં ઈસ્વીસન ૧૬૦૦ ના અપ્રેલ માસની તા. પમીને રોજે એટલે વિક્રમ સંવત ૧૭૫૭ના ચૈત્ર સુદ ૧૫ ના દિને ત્રેપન વર્ષની આયુષ ભોગવીને શિવાજી મહારાજ સ્વર્ગવાસી થયા. પણ રાજારામની મા સોયરાબાઈ અને અમીર ઉમરાવો સર્વે સમત્તિ મળી જઈ ને ખબર કોઈને નથી કરી. સંભાજીને કૈદ કરી રાજારામને ગાદી બેસાડવાની ખટપટ કરીને જનાઈનપંત, જેણે કર્ણાટકમાં આક્રમણ કર્યું. હતુ. તેને લશ્કર આપી પન્હાળે જઈ સંભાજીને કૈદ કરવા મોકલ્યો. ને પન્હાળાનો કિલ્લેદાર પર ખાનગી પત્ર જાસૂસ મારફતે મોકલ્યો. તેને જાનથી મારી નાખ્યાને પોતે બીજી નવુ લશ્કર ઉત્પન્ન કરી રહેવા લાગ્યો. ને જનાઈનપંત અધીન છેલ્લા છ દિન ધેસ્યૌ ઘોસી રહ્યો. પણ ફાવ્યો નહીં. તેથી કોલ્હાપુર જઈ રહ્યો. ત્યાં તેને રાતમાં જઈ સંભાજીએ પકડી કૈદ કરશે. ને પન્હાળે લાગ્યો તે સમાચાર જાણી સર્વે તાઈ બદલાઈ ગઈને ઘણા ખરા સંભાજીને મળી ગયા. એમ પોતાનો પક્ષ વધારી પોતે સન ૧૬૦૬૦ (૧૬૭૦)ના જૂન માસમા તે રાયગઢમાં દાખલ થયો અને રાજારામને કૈદ કરી અડાર માસનો પોતાને રાજ્યાભિષેક કરાવ્યો. ત્યારથી સંભાજી સ્વતંત્ર રાજા કહેવા લાગ્યો.

एक अन्य पत्र की नकल (गुजराती लिपी में लिखा गया पत्र है)

अवध की बेगम प्रथम भाग

बजीर रूसरुद्दीन के मरने के पीछे अवध का नवाब सफदरजंग, देहली के बादशाह का बजीर नियुक्त हुआ था । नसीसम भले अवध के नवाब लोग बराबर वीर कहलाते आए हैं।

नवाब सफदरजंग का लड़का बजीर शुजाउद्दौला अवध का नवाब था ।

सन् 1774 ईस्वी में नवाब सुजाउद्दौला ने रुहेलखंड पर चढाई करने की इच्छा से अंग्रेजो से सहायता मागी थी । धन के लोभ से अंग्रजों ने मदद करना स्वीकार किया । सन् 1774 ई. के आरंभ में अंग्रेजी सेनापति जनरल चेम्पिचल ने अवध आकर रूहेलखण्ड पर चढ़ाई में मदद की ।

रूहेलखण्ड का अपरी अस्सी वर्ष का बूढ़ा हाफिज रहमत खान ने सामने होने की तैयारी की।

सन् 1674 में शाहे आलम और हुसेन खाँ नामक दो भाई फ़ताहार (रूहेलखण्ड) में रहा करते थे, दोनों अफगानी थे । शाह आलम के दो लड़के थे । बड़े का नाम दाऊदखाँ और छोटे का नाम हाफिज रहमतखाँ था ।

दाऊदखाँ कुमाऊ राज का सेनापति था, पर राजीनामा (इस्तीफा) देने से कुमाऊ राजाने उसके हाथ पाँव काट डाले । इससे वह मर गया । दाऊदखाँ के छोटे लड़के अली मुहम्मद ने उसका बैर लेना चाहा ।

अली मुहम्मद रुहेलखण्ड का नवाब हुआ । रुहेलखण्ड में विसूली गाँव से सुआजदौला की सवारी से वहाँ रुहेली स्त्रियों की पालकी लाई गई ।

तब सुजाउद्दौला ने अपने बहनोई सालार जंग बहादुर के साथ हाफिज की कन्या सिवाय दूसरी सब दहेली को कैदी बना इलाहाबाद भेज दिया और हाफिज की कन्या को खास थोड़े सिपाहियों के साथ फैजाबाद में नवाब की खास बेगम साहिबा के पास भेज दिया गया।

अमरसिंह और धर्मसिंह को नवाब सालारजंग के साथ इलाहाबाद जाने की आज्ञा हुई ।

हाफिजजी की स्त्री और कन्या, विसूली थी जुदा पाया ।

अमरसिंह और छत्रसिंह इलाहाबाद में देहली पहुँचाने को जाते थे पर रस्ता में मंदिर होने का बहाना करके फैजाबाद आ गए ।

खुर्द महल रखेल स्त्रियों ना महल ।

धरेजे की रखैल उपस्त्रियों का महल ही खुर्द महल कहलाता है ।

सियारुलमुता खरीन ग्रंथ मां सत्य छे 'अवध तथा कुमाऊ पर्वत के बीच में गंगा नदी

के पूर्व तरफ जो लम्बा चौड़ा देश, पहले फुताहार नाम से प्रसिद्ध था, वह अठारहवीं शताब्दी में रुहेले सरदार अलीमुहम्मद की सरदारी पासवाने के साथ रुहेलखण्ड नाम से प्रसिद्ध हुआ।

नया ग्रंथ

शिवराजभूषण[57]

॥ श्री ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

छत्रपति महाराज शिवाजी तथा भूषण कृत शिवराज भूषण संबंधी याद-बुक

सताराना राजवंश माहेला पुरुषे सन् 1974 मां महाराणी जी द्वारा किया अंग्रेजी अपीलसे उतारा गया वृत्त

वंशावली

सूर्यवंशी राजाओनी वंशावली

1. नारायण	2. ब्रह्मा	3. मरीचि	4. कश्यप
5. श्राध्यदेव (मनु के 11 पुत्रों मे से एक)			6. विवस्वान
7. इक्ष्वाकु	8. विकुक्षी	9. पुरंजय	10. अनेना
11. पृथु	12. व्रिरंधी	13. चन्द्र	14. युवनाश्व
15. शावस्त	16. वृहदस्व	17. कुत्रलयाश्व	18. दुधाश्व
19. हार्यश्व	20. निकुंजी	21. वरहणाश्व	22. कृशाश्व
23. सेनजित	24. युवनाश्व	25. मानधाता	26. पुरुकु त्सु
27. त्रसदस्यु	28. अनरण्य	29. हर्यश्व	30. अरुण
31. निबंधन	32. त्रिशंकु	33. हरिश्चंद्र	34. रोहित
35. चंप	36. सुदेव	37. विजय	38. भरुक
39. वृक	40. बाहुक	41. सगर (सार्वभौम)	
42. असमंजस	43. अंशुमान	44. दिलीप	45. भगीरथ
46. श्रुत	47. नाम	48. सिंधुद्वीप	49. खयुत्तायु
50. ऋतुपर्ण	51. सर्वकाम	52. सुदास	53. कस्मासपाद

54. चश्वक 55. नारीकवच (परशुरामकालीन) 56. दशरथ

57. खैडवीड 58. विस्वसह 59. खड्गांग 60. दीर्घबाहु

61. रघु 62. अज 63. दशरथ (रघुवंशीय)

64. रामचन्द्र 65. कुश 66. अतिथि 67. निशध

68. नभ 69. पुंडरीक 70. क्षेमघनवा 71. देवानिक

72. अनीह 73. पारिजात 74. बलस्थल 75. व्रजनाभ

76. खगण 77. विधृती 78. हिरण्यनाभ 79. पुष्प

80. ध्रुवसंधि 81. सुदर्शन 82. अग्निवर्ण 83. शिघ्र

84. मस्त (कलापग्राम) 85. प्रलुश्रुत 86. संथी

87. अमर्षण 88. महश्वान 89. विश्वसावह 90. वृहद्बल

91. वृहदरण 92. उरुत्रय 93. वत्सवृद्ध 94. प्रतिव्योम

95. भानु 96. दिवाक 97. सहदेव 98. वीर

99. वृहदश्व 100. भानुमान 101. प्रतिकाश्व 102. सुप्रतीक

103. मरूदेव 104. सुनक्षत्र 105. पुष्कर 106. अंतरिक्ष

107. सुतपा 108. अमित्रजित 109. बृहद्राज 110. बरही

111. कृतजंग 112. रणजय 113. संजय 114. शाक्य

115. सुहपोद 116. लांगल 117. प्रसेनजित 118. क्षुद्रक

119. रणक 120. सुरथ 121. सुमित्र 122. शदधनवा

123. महसेन 124. कृतवर्मा 125. शतानिक 126. तीव्रसिंह

127. भीज़सिंह 128. अज (मेवाड़ का मूल वास)

129. सुभानसिंह (चितोड़ के किले का सर्जक) 130. जयसेन

131. पृथ्वीपाल 132. सूरजसिंह 133. महासेन 134. प्रतापसेन

135. सुहगसेन 136. सुमेरसिंह

137. लक्ष्मणसिंह (जो पद्मिनी के लिए लड़ा)

138. असहिंस (उदयपुर रानाओंका मूलपुरुष) 139. सज्जनसिंह

140. दिलीपसिंह 141. सोठवड़कर 142. मौसाजी महाराणा

143. देवराजनी 144 . इन्द्रसेनजी महाराज महादेव (खानवासी)

145. शुमकृष्णाजी 146. रुपसिंहजी 147. भूसिंहजी

148. धपजी महाराज 149. बरहत्तजी 150. खेलोजी 151. करणसिंहजी

152. संभाजी 153. बाबाजी महाराज

154. मालोजी वीठोजी

155. शाहजी महाराज (अहमदनगर वीजापुर वासी)

156. शिवाजी महाराज

गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा की गई शिलालेखों की नकल :

इसमें अनेक शिलालेखों का विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

शाकोटा पाडा में चिन्तामणि पार्श्वनाथ देहेरानी भीत नो लेख :

ओं/ओं नमः । श्रीमद्विक्रम नृपातीत संवत् 1644 वर्षे प्रवर्तमाने शाके 1508 गंधारीय प. जसि आनद भार्याबाई जस मादे संप्रति श्री स्तंभतीर्थ वास्तव्य तत्पुत्र प. वजिया प. राजिआम्यांव1द्ध मात्र मार्या विमलादे लघुभ्राता मार्या कमला दे बद्ध भ्रान मेघजी तड़ार्या मयगल दे प्रमुखज परिवार प्रताम्यां । श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथश्री महावीर प्रतिष्ठा कलीता श्री चिंतामणि पाश्वचैत्यंच कारितं का ताच प्रतिष्ठा सकलमंडला खंडल शाहि श्री अकबर सन्मानित श्री हरिविजय सुरि शयदालंकार हार सुद्रशैः शाहि श्री अकबर पर्यदि प्राप्त वर्स्त्र वादैः श्री विजयसेन सूरिभिः ।

2) कामदेव महादेवना तणाव परनो लेख

3) खंभातनी पूर्वमा वडवानी वाव छे ते वाव नी पूर्व बाजुना गोखलना नो लेख

4) मांगरोणनी सोठडी वावनो लेख

इस लेख का गुजराती भाषांतर भी दिया गया है ।

पत्र 5 पर

'पंडित काशीनाथ पांडुरंग परब रामरो मेणवेल शिवराजभूषण काव्य ते दक्कन कालेना मास्तर जनार्दन बालाजी मोड़क बी.ए. जयपुरना शास्त्री दुर्गाप्रसाद पासे सुधरावी पूनामां ज्ञानप्रश्य छापखानामां शालिवाहन शके 1911 ईस्वीसन् 1997 मां छपावेलो तेनी मारेठी

भाषानी प्रस्तावनानुं गुजराती भाषान्तर नीचे लख्यु छे ।'

शिवराजभूषण काव्य ना उपोदघातना 19-20 मां पद्य उपरथी एम देखाई आवे छे के आ भूषणकवि कस्यपोत्री कनोजियो ब्राह्मण हतो, एना बापनुं नाम रत्नाकर हतुं । यमुना नदी ना काठा उपर त्रिविक्रमपुर करीने एकत शहर हतुं त्यां रहतो हतो । बीजे ठेकाणे थी मणनारी बातमीथी एम समजाय छे के आ त्रिविक्रमपुर ने हाल टीकमपुर कहे छे । आ भूषण कवि ने चिंतामणि, मतिराम तथा जटाशंकर उर्फे निलकंठ एवा त्रण भाई हता । आ चारौ भाइयो घणां विद्वान हता । आमनुं उपनाम त्रिपाठी हतु । एना बाप रत्नाकरे देवीनी आराधना करया थी तेना प्रसादे करी ने आ चार पुत्र थया आ सर्व मां चिन्तामणी ए वडील हतो । ते नागपुरमां सूर्यवंशी राजा भौंसला मकरंदशाह ना हाथ तणे घणां वर्ष हतो, तेणे छन्द विचार पिंगल काव्य विवेक, कविकुल कल्पतरु, काव्य प्रकाश अने रामायण एवा पॉच ग्रंथ रच्या छे ।

शाहजहाँ बादशाहे (सन् 1621 - 1958 सुधी) तेणे घणी मोटी देणगी (ईनाम) आपी कोई कोई ठेकाणे मणिलाल एवुं पण तेणे पोतानुं नाम लख्यु छे । भूषण कवि प्रथम पन्ना ना राजा छत्रसालना हाथ तणे छः मास सुधी हतो, पछी ते शिवाजी महाराज पासे सन् 1664-1890 गयो । अने तेणे अनेक रीति थी पोतानां काव्य माधुर्य करीने तेमनुं मनोरंजन कर्यु त्यारे तेमणे तेमे घणुं द्रव्य, हाथी, घोड़ा वगैरे आप्युं. पछी ते शिवाजी महाराज, हुमायूना पहाड़ सुधी पथराण्यु छे । नहीं ते जोवा मोटा ते डुंगरा मां गयो अने त्यां सुधी तेमनी कीरत थयेली जोई तेमणे घणो संतोष थयो ।

शिवराज भूषण ग्रथं सिवा भूषण कविना भूषण हजारा, भूषण उल्लास, अन`दूषण उल्लास । एवा त्रण ग्रंथो वधारे हता । आना ग्रंथमां रौद्र, वीर, अने भयानक ए त्रण रस उत्तम प्रकारथी साधेला छे । एनो नानो भाई मनिराम आ कुमाऊं ना राजा उदोतचन्द मानसिंह हाड़ा बूंदीना राजा छत्रसाल अने सोलंकी वंशना राजा संभू उर्फ संभाजी (शिवाजी महाराजना पुत्र, सन् 1690 थी 1699 सुधी) ना आश्रय तणे हतो ।

ललित ललाम, छन्दसार अने रसराज, एवा त्रण ग्रंथो मनिरामना प्रति सर्वना नानाभाई निलकंठना मात्र ग्रंथ प्रसिद्ध थया । वृन्दसतसईयाकार प्रसिद्ध कवि वृन्द आनाज वंशमानो छे एम पण कहेवाय छे । शिवराज भूषण काव्य भूषण कविओ विक्रम संवत 1730 एटले शालिवाहन शक 1585 ना वर्षमां बनाव्यु एम आ काव्यना छेवटना ग्रंथ रचनाकाल दीधा

छे । ते परथी स्पष्ट देखाय छे । शिवाजी महाराजनो राज्याभिषेक शालिवाहन शक 1586मां थयो ते पेला एक वर्ष आ काव्य कविओ करेलु छे । कविए आ ग्रन्त मां काव्यमाना अलंकार नुं वर्णन करेलु छे । दाखला माटे जो पद्यो कविओ रच्या छे तेमां शिवाजी महाराजनुं तेमना गुणनुं अने पराक्रमनुं वर्ण करेलु छे । आ काव्यना उपोदघातमां 23 पद्यो छे. अलंकारना लक्षणना 107 पद्यो छे । अने दाखलनाना 181 छे । छेवट ग्रथमाना विषयनी अनुक्रमणिका ना 18 पद्यो रचनाकालनुं 1 पद्य अने उपसंहारनुं एक पद्य छे ते मणीने अेकंदर 311 पद्य आ ग्रंथमां छे । 107 पद्यमां 105 मुख्य मुख्य अलंकारना लक्षणो कविओ आ ग्रंथ मा कह्या छे. दोहा सवैया हरिगीत छप्पय अने कवित्त एवा पाँच वृत्तो आ ग्रंथमां देखाय छे आ पॉच पैकी दोहा अने सवैया ए वृत्तो महाराष्ट्र ग्रंथ अवलोकन करनारने खबर छे । बाकीना त्रण मात्र तेमनां अपरिचित छे । तो पण आ पाँच वृत्तना लक्षणो भूषण कविना भाई चिन्तामणी कविए करेला छन्द विचार ग्रंथ मांथी अने आगड़ आवी छे छैये । ते परथी आ छंदनुं स्वरूप वाचकोना लक्षमां आवशे.

परिशिष्ट -7

शिवराज भूषण काव्यनां अलंकारनुं वर्गीकरण

स्त्री-स्वाभाविक सौन्दर्य जेम सोनाना तथा हीरानां मोतीना घरेणा थी विशेष खुल्ले छे, तेमज स्वाभाविक उत्कृष्ट काव्य अलंकारना योगथी विशेष मनोहर थाय छे । काव्यनां भूषणना माटे कवि बे प्रकारनां अलंकार अेमा नाखे छे । शब्दालंकार अने अर्थालंकार ए बे प्रकार छे । ते पैकी पहेला प्रकारनी एटले शब्दालंकारनी योग्यता बीजा प्रकारना एटले अर्थालंकार ना खेटली नथी । प्रसिद्ध अलंकारकार काव्यप्रकाशकर्ता मम्मरें (सन् 1075 थी सन् 1125) वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक श्लेष, चित्र अने पुनुरुक्त वदाभास एवा प्रकारनां शब्दालंकार अने 61 प्रकारना अर्थालंकार पोतानां ग्रंथमां कह्या छे । रुद्रटें (नवमाशातक) पुनुरुकत्वदाभास सिवाय बाकीना पांच शब्दालंकार अने 66 अर्थालंकार कह्या छे । साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ कविराजे मम्मरनां छः शब्दालंकार सिवाय भाषासम ए एक सातमो शब्दालंकार अने सुमारे 70 अर्थालंकार पोतानां ग्रंथमां कह्या छे । वामने (सन् 775 थी 825) यमक अने अनुप्रास ए बेज शब्दालंकर अने 25 अर्थालंकार पोतानां काव्यमां कह्या छे । तात्पर्य (अर्थात) अलंकारनी संख्या जुदा जुदा अलंकार शास्त्र ग्रंथमां कमी जास्त देखाय छे।

भूषण कविए शिवराजभूषण काव्यमां वर्णन करेला 105 प्रकारनां अलंकार पैकी छंद,

पुनुरुक्त वदामास, यमक, लाटानुदास, अने वक्रोक्ति ए पॉच शब्दालंकार छे ते पैकी छेक, अने लाटानुप्रास ए अनुप्रासनां पेटम्भेद छे, आ ऊपरथी आ ग्रंथ मां मुख्य चारज शब्दालंकार होय एम देखाय छे । एकन्दरे 105 अलंकार मांथी ऊपरनां पाँच शब्दालंकार बाद करिए तो बाकी रहेला 100 अर्थालंकार आ काव्यमां छे । एम स्पष्ट देखाय छे । ए पैकी अक्रमाति शयोक्ति, अत्यन्तातिशयोक्ति, चंचलातिशयोक्ति भेदकातिशयोक्ति, अने रूपकातिशयोक्ति ए पॉच अतिशयोक्तिना पेरम्भेद छे ।

कैत्वापन्हुति, छेकापन्हुति, पर्यास्तपन्हुति, भ्रांत्यापन्हुति, अने हेत्वापन्हुति ए पाँच अपन्हुति ना भेद छे । मालोपमा, अने ललितोपमा ए बे उपमा ना भेद छे । आकृति दीपक अने मालादीपक, ए दीपनां भेद छे । परिकरांकुर, एपरिकर नो मेटम्भेद छे । अने विरोधाभास ए विरोधनो भेद छे । ए सोण अलंकार मुख्य न होय ने पेटाभेद होय एम देखाय छे । आ पेटा अर्थालंकार ऊपरना सो अलंकारमांथी बाद करिए तो बाकीनां ऊपरना सो अलंकार रहे छे । मम्मटना काव्य प्रकाशमां 61 अर्थालंकार छे ते नीचे प्रमाणे छे :

अलंकारोनां नाम :

आ = 61 पैकी

1. विशेषोक्ति, 2. सूक्ष्म, 3. संसृष्टि, 4. हेतुमाला अने 5 उत्तर ए पाँच शिवराजभूषणमां नथी । तेथी मम्मतना 61 अलंकार पैकी 56 मात्र एमा होय छे एम स्पष्ट छे। आ 56 अपला 84 अलंकारमांथी बाद करिये तो बाकी 28 रहे छे । एटला मम्मटना ग्रंथमांना अलंकारथी आमा वधारे छे । परन्तु कामधेनु मित्र, गुरु, प्रश्नोत्तरमाला, भाविक छबी, अने सामान्य विशेष ए पांच शिवाय बाकीना 23 अलंकार ना अंतरभाव आपणे काव्यप्रकाशमां कहेला छे । 61 अलंकार मात्र थाय छे । एम मम्मटनो मत छे । सारांश ऊपरना कामधेनु मित्रादि पाँच अलंकार मात्र मम्मटना ग्रंथमां नथी, अने तेना ग्रंथमां ऊपर कहेला ऊत्तर विशेषोक्ति, सूक्ष्म, संसृष्टि अने हेतुमाला ए शिवराजभूषणमां नथी, सारांश बन्ने ग्रंथोना मुख्य अर्थालंकारनी संख्या सरखी होय एम स्पष्ट छे. काव्यप्रकाशमां देखी छे, शब्दालंकारनुं वर्गीकरण नमूना दाखल आगळ आपीए छीए ।

(यह पृष्ठ संख्या 7 पर समाप्त है । लेख सर्वथा अपूर्ण है । अगले पृष्ठ खाली है । लगता है लेखक ने लेखको पुनर्लिखित रूप प्रतिलिपि किया है किंतु पूरा लेख प्रतिलिपि कर नहीं पाए है ।)

ग्रंथ 4 मां गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा की गई शिलालेखों की नकल दी है ।

साहित्य और काव्याध्यन की दृष्टि से इन शिलालेखों का महत्व नहीं है । ऐतिहासिक राजाओं महाराजाओं से सम्बन्धित लेख ही इनमें दिए गए है । इनमें -

1. शागोटा पाडामां चिंतामणि पार्श्वनाथना देहेरानी भीतनो लेख । (इसमें लेखक विद्वान हरिविजयसूरी को अकबर बादशाह द्वारा सम्मानित कहा गया है)
2. कामनाथ महादेव नां तळाव परनो लेख.
3. खंभातथी पूर्वमां वडवानी वाव छे ते वावनी पश्चिम बाजुना गोखलानो लेख.
4. मांगरोळनी सोठडी वावनो लेख. (इसका गुजराती भाषांतर भी दिया है)
5. मानकोर बाईनी पोळमां मानकरबाईनुं देहेरु अथवा संभवनाथना देहेरामां भोयरु छे ते भोयरामां शांतिनाथनी प्रतिमा छे ते प्रतिमांनी पलौठीपर लखेल छे ते नीचे मुजब -

अ. कवि गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा एकत्र कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएँ -

ग्रंथ 5

साहित्य सम्बन्धी सूचनाएँ - गोविन्द गिल्लाभाई

प्रेंमसंबंधी ग्रंथो का नाम यथा -

प्रेमपचीसी गोविन्द कवि

नेह निर्वाह ग्लवा

नेह निदान नवीन

प्रेम पचासा हरिपाल

प्रेम रत्नाकर देवीदास

प्रेम चन्द्रिका देवकवि

प्रवीनसागर महिरामन

गोविन्द कृत प्रेम संबंधी कविता

साहित्य चिंतामणि

विवेक विलास मां प्रेम संबंधी कविता ना क्रम जोयो ।

इश्क तरंग लाला ज्वालप्रसाद सिंह

प्रेम बिन्दु लाला ज्वालप्रसाद सिंह

प्रेम पचीसी गुलाब कृत

गोपी पचीसी ग्वाल, कवि मथुरा

स्नेह शतक नवनीत चतुर्वेदी मथुरा

गोविन्दगिल्लाभाई ने आत्मपरक सूचनाओं को भी एकत्र करके डायरी में संयोजित किया है । एक डायरी का विवरण प्रसृस्त है -

ग्रंथ 6

चहुआन कवि गोविंद गिल्लाभाई नां जीवन चरित्रनी स्मरमपोथी

इसमें गोविन्द गिल्लाभाई के ग्रंथोकी सूची दी है । यह एक स्वतंत्र आत्मकथापरक ग्रंथ है ।

इसमें प्रारम्भ मैं **डायरी बुक** लिखा है ।

सर्वप्रथम गोविन्द गिल्लाभाई का जन्माक्षर दिया है । इनका जन्म संवत् 1905 मां श्रावण सुदी 11 सोमवार को सिंहोर में हुआ था ।

इनके नथुभाई कानजीभाई लक्ष्मणभाई तीन भाई थे तथा गंगा एवं गोमती दो बहिन थीं । कुल छः भाई बहिन थे ।

सन्तान :- इनकी पत्नी जानबाई थी । इससे पाँच पुत्र हुए तथा चार पुत्रियाँ हुई । इनमें एक देवजी नामक पुत्र तथा चारौ पुत्रियाँ अकाल मृत्यु को (बाल्यकाल में ही) प्राप्त हुई । बाकी चार पुत्र है ।

विद्याध्यन : कक्षा 7 तक ही अध्ययन किया था ।

विवाह : 1919 सवत् में माघ सुदी 5 (वसंत पंचमी) को परमार करसन भाई की पुत्री जानबाई के साथ विवाह हुआं ।

कृतियों के विषय में विस्तृत चर्चा है ।

पृष्ठ 13 पर ।

काशी कवि समाज विशे

वल्लभ वंशीय कांकरोली ना गोस्वामी बालकृष्णजी महाराज बनारस (काशी)में उनके मोटाभाई जीवनलालजी महाराज जो गोपाललाजी मंदिर के मालिक थे, उनसे मिलने के लिए

गए थे । वहाँ वे बहुत समय तक विराजे । इससे वहाँ के विद्वत्समाज से उनका परिचय हुआ और उन्होंने संवत् 1950 माघ सुदी 5 (वसंत पंचमी) के दिन अर्थात संवत् 1951 माघ सुदी 5 को काशी में काशी कवि समाज की स्थापना की ।

इस कविसमाज की ओर से प्रत्येक पखवाड़े समस्यापूर्ति प्रस्तुत की जाती, वे पूर्तियाँ काठियावाड में अर्थात् सिंहोर में गोविन्द कवि के यहाँ भी आने लगी । गोविन्द कविने पूर्तियाँ रचरचकर प्रेषित कीं । वह आपूर्ति संग्रह प्रकाशित होने लगा । उस सबका खर्च स्वयं महाराजश्री देते थे ।

उन पूर्तियों में जिसकी रचना श्रेष्ठ होती, उसे महाराज की ओर से पुरस्कार मिलता था । और समाज के वार्षिकोत्सव में रिपोर्ट में उसके विषय में विवरण प्रकाशित किया जाता था, उसमें कवि समाज की नामावली में गोविंद गिल्लाभाई कवि का नाम दूसरे नम्बर पर प्रकाशित हुआ है । दो बार श्रेष्ठ कविता रचना पर पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है ।

इसके साथ आपने भरतपुर, व्रज, डुंभरगाँव, करौली, खोखलाडेला, आदि की यात्राए की । इसके पश्चात सम्वतवार आपकी जीवनी एवं कृतित्व का विवरण दिया गया है ।

यह विवरण पृष्ठ 24 तक ही है ।

आत्मपरक सूचनाएँ :

पृष्ठ 31 पर कवि गोविन्द गिल्लाभाई के कृतित्व का परिचय है ।

पृष्ठ 37 से कवि गोविन्द गिल्लाभाई के विषय मे विद्वानो के अभिमत तथा प्रशस्तियाँ हैं । फिर ग्रंथों के सार दिए गए है ।

पृष्ठ 63 से ग्रंथ सूची दी है ।

पृष्ठ 65 से गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में संग्रहीत हिन्दी ग्रंथों की सूची दी है ।

इस सूची में 33 ग्रंथों का उल्लेख है ।

पृष्ठ 65 से गोविन्द गिल्लाभाई कृत हिन्दी ग्रंथों के नाम और उनके रचनाकाल के संवत् तथा ग्रंथ की कुल कविता की संख्या और उन ग्रंथ में क्या क्या विषय हैं यह सब नींचे लिखे हैं -

इस सूची में गोविन्द गिल्लाभाई के ग्रन्थों की परिचयात्मक विवरणिका दी गई है । कुल 33 ग्रन्थों का विवरण है ।

पृष्ठ 79 से माधुरी साहित्य पत्रिका में प्रकाशित गोविन्द गिल्लाभाई का विवरण दिया गया है । इसमें माधुरी के अंक का विवरण इस प्रकार है ।

संवत 1978 के श्रावण मास में माधुरी फागुन मास के अंक 8 में पृष्ठ 174 पर कवि गोविन्द गिल्लाभाई के चित्र और चरित्र प्रकाशित हुएजो इस प्रकार है -

इसमें जीवन चरित्र के बाद 32 ग्रंथो का परिचय दिया गया है ।

पृष्ठ 83 पर गोविन्द गिल्लाभाई के काशी नागरी प्रचारिणी सभा के 1981 में ओनरेरी सभासद नामजदी की पत्र प्रतिलिपि दी गई है ।

यह ग्रन्थ यही समाप्त होता है ।

ग्रन्थ - 7

इसी जिल्द में ग्रन्थ संख्या 7 में कवि गोविन्द गिल्लाभाई (व्यक्तिगत पत्र) आवेदन पत्र आदि का संग्रह है ।

लाल चमड़े की जिल्द है व रजिस्टर आकार है ।

इसमें प्रथम पत्र माधुरी के मैनेजर को लिखा गया है । जिसमें रटहकन कवि ने सम्बन्ध में सूचना दी गई है ।

इसी पत्र में लिखा है कि माधुरी में प्रकाशित रस सरस जो आगरा के सूरतमिश्री कृत बतलाया है वह ग्रन्थ वस्तुतः सरस रस है जो लाल कवि कृत है ।

लालकवि का अन्य विवरण भी कवि द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

सरस रस में समाविष्ट कवियों के नामोल्लेख हैं -

1. आललाम, 2. उदयनाथ, 3. कल्यान, 4. गोविन्द्र, 5. केशोदास, 6. गंग, 7. दत्त, 8. दयाराम, 9. भगवत, 10. मतिराम, 11. महाकवि, 12. वीर, 13. लाल, 14. सुजान, 17. सूरतिराम, 16. सेनापति, 17. हठी ।

इसमें सूरत किजा का त ग्रंथो का उल्लेख किया गया है ।

इसमें दूसरे नाम मैं प्रवीणसागर के विषय में लेख है ।

पृष्ठ 3 पर

काठियावाड के समस्त खवास समुदाय की अपील प्रतिलिपि की गई है ।

खवास हितकारिणी सभा काठियावाड़ का छपा पर्चा भी है ।

एक प्राचीन पत्र संलग्न है ।

पृष्ठ 21 पर गोविन्दगिल्लाभाई कृत विश्वदर्शन किंवा वाणीविलास ग्रंथ के रूढ शब्दों के उदाहरण दिये हैं -

कच्छ के कवियों के विषय में कुछ जानकारी अलग से दी गई है ।

इसमें कवियों की लिस्ट है ।

जैसे कच्छ के कवि -

1. कनककुँवर, 2. कुँवर कुशल लखपत जससिंधु, 3. ऊनडजा (लाखर गाँव के जाडेजा गरालिया), 4. देवासाहब (हमला महतव के प्रख्यात महात्मा), 5. हम्मीरजी रायघणपुरनी दरबार (श्री नर अयाची चारण), 6. साधो गढशीशामां खडिया चारण, 7. पंचाणजी मोरसरन रावल ।

इसी तरह मुजफर के कवियों का उल्लेख है । यहाँ ये ग्रंथ संग्रह समाप्त होता है ।

ग्रंथ -

व्यक्तिगत निजी संग्रह/रजिस्टर आकार/काली स्याही/स्फुट पत्रादि/विविध विषय प्रथम रजि. 44 पृष्ठ, पुनः 5 पत्र 10 पृष्ठ, पुनः स्वविषय तथा साहित्य विषय, 51 पृष्ठ, पुनः स्फुट पृष्ठ विवरण प्रथम दोहा दिया है :

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द विषै दोहा :

जिनश्री गिरधरदास कवि, रचे ग्रंथ चालीस ।
ता सुत श्री हरिचन्द कौं, को न नवावै सीस ॥

पुनः श्री शिवसिंह सरोज के कवित की अकारादि नामावली : इसमें 1000 कवियों का अकारादि क्रम से (पृष्ठ 16 तक) उल्लेख हैं ।

पृष्ट 17 पर :

शिवरसिंह सरोज में जिन कवियों की कविता नहीं है, उन कवियों के नाम उल्लिखित है । इनमें कुल 135 कवियों के नाम दिए हैं ।

पृष्ठ 19 पर :

शिवसिंह सरोज के अलंकार, कवियों के ग्रन्थ तथा उनके नामों की सूची दी है। इसमें कुल 333 कवियों का रचना सहित उल्लेख है।

पृष्ठ 31 पर :

शिवसिंह सरोज में आए हुए ग्रंथो की आकारादि नामावली (ग्रंथावली)

इसमें कुल 553 ग्रंथों का उल्लेख है।

पृष्ठ 40 पर :

शिवसिंह सरोज का पुनरावलोकन है इसमें विषयवस्तु का क्रम दिया है - इसमें भाषाकोष के ग्रन्थ, भाषा पिगल, भाषा शृंगार नायका भेद, नवरस के ग्रंथ 35, अलंकार के ग्रंथ 32, काव्यग्रंथ साहित्य 32, संग्रह ग्रंथ 20, व्यंग्य के ग्रंथ - 3, चित्रकाव्य के ग्रंथ 3, दूषणग्रंथ 2, दूती विषे ग्रंथ 2, भाषाभूषण की टीका के ग्रंथ 4, कवि प्रियाकी टीका 5, रसिक प्रिया की टीका 4, रसराज की टीका 3, सतसई नामक ग्रंथ 7, बिहारी की टीका 25, नखशिख 27।

बिहारी सतसई की टीकाओं की सूची :

1. अनवर चन्द्रिका/शुभकरन
2. अमर चन्द्रिका/सूरतिमिश्र
3. साहित्य चन्द्रिका/कलभट्ट
4. लाल चन्द्रिका/लाल बन्दीजन बनारसी
5. उपसतैसाय (कुंडलिया में)/गंगाधर
6. प्रबंध घटना/गोपाल शरन
7. हरि प्रकाश/हरिचनरदास
8. कवित बंध/कृष्णकवि
9. कृष्णलाल की टीका/कृष्णलाल
10. कुंडलिया बंध टीका/चंद कृत
11. बिहारी टीका/नवनीत चौबे
12. बिहारी टीका/रामबख्स
13. बिहारी टीका/जुल्फेकार
14. बिहारी टीका/ईसुप सखा
15. बिहारी टीका/रघुनाथ
16. कानविन चित्र चन्द्रिका - सरदार
17. संस्कृत टीका/(शृंगार सप्तसती) इसमें संस्कृत के दोहे भी हैं/परमानन्दजी
18. बिहारी टीका/ठाकुर
19. रसकौमुदी/रसिक बिहारी
20. बिहारी विहार (कुंडलियों में)/अम्बिका दत्त व्यास
21. बिहारी टीका/रामकृष्ण
22. बिहारी टीका/(कुंडलियों में)/पं. गोरखराम
23. बिहारी टीका (सतसई शृंगार) कुंडलियों में/बाबूहरिश्चंद्र

24. बिहारी टीका/लल्लूजी लाल

25. बिहारी टीका/मानसिंह जैमी, उदयपुर

बिहारी सतसई की संस्कृत टीकाएं - पृष्ठ 47

1. वि.सं. संस्कृत टीका (अज्ञात)
2. आर्यागुप्त/पंडित हरिप्रसाद कृत
3. शृंगार सप्त ततिका/परमानंद
4. जुल्फकार कृत सं.टी./दिल्लीपति जहाँहार शाह के दीवान अमीरुल उमराव सप्तजंग
5. प्रबन्ध घटना/राजागोपाल शरण कृत
6. अनवर चन्द्रिका/नवाब अनवरखाँ के नाम से शुभकरन कवि ने सं. 1779 में रची ।
7. साहित्य चन्द्रिका/करणभट्ट सं. 1737 वि.
8. रघुनाथ कृत टीका/काशी के बन्दीजन काशीराज के पास
9. रसचन्द्रिका/नवाब ईसवीखा 1809 में
10. हरिप्रकाश/हरिचरण दास कृत
11. लालचन्द्रिका/लल्लूला लालचंद कृत
12. कामबिन चित्र चन्द्रिका/काशीबाग सरदार कविकृत
13. बिहारी टीका/युसुफ खाँ कृत
14. बिहारी टीका/राम रामवक्ष
15. बिहारी टीका/वैद्यक टीका/छोटू रामकृत
16. बिहारी टीका (देवकीनंदन टीका)/ठाकुर कृत स. 1831
17. बिहारी टीका/प्रभुदयाल पांडे कृत सं. 1953
18. बिहारी रत्नाकर/रत्नाकर कृत
19. अमर चन्द्रिका/सूरतिमिश्र
20. बिहारी टीका कृपणकवि
21. बिहारी टीका पठान सुलतान के कविनचंदकृत
22. उपसतसैया/कवि गंगाधर कृत
23. रसकौमुदी/बाबा जानकीप्रसाद अयोध्या

24. सतसई शृंगार (अपूर्व)/हरिश्चंद्र कृत

25. बिहारी समेरु (खंडित)/बाबा सुमेरसिंह

26. बिहारी टीका/जोरखराम कृत

27. बिहारी टीका/अम्बिकादत्त व्यास कृत

28. संतसई संस्करण/ग्रियर्सन साहब

29. बिहारी टीका रणछोडजी दीवा/जूनागढ

30. बिहारी टीका/कल्याण कवि कृत

31. बिहारी टीका/जैन मानसिंह कृत

एक पत्र प्रभाकर ग्रंथ विषै है ।

अन्य प्रेम प्रभाकरनी कविताना क्रम विषै 5 पत्र है ।

नया पत्र

संग्रह ग्रंथों के नाम

कवि चरित्र के लिए । जिन ग्रंथों में अनेक कवित की कविता है वह संग्रह ग्रंथो के नाम नीचे लिखते है -

कुल 92 ग्रंथों को संदर्भ है ।

प्रेमप्रभाकर ग्रंथ की विषय सूची है ।

काशीकवि समाज की पूर्ति चारौ भाग में अधिक फुरकर नं. १ से २० तक में से निकला हुए :

कुल 111 कवियों के नामोल्लेख है ।

काशीकविक समाज की समस्यापूतिज्ञ के पाचो भागो के कवियों के नामोल्लेखः

चौथे भाग के कवि

कुल 55 कवि है ।

तृतीय भाग के कवि

कुल 50 कवि है ।

सम्पूर्ण कवियों की सूची (37 कवि है)

द्वितीय भाग में 50 कवि हैं ।

काव्यसंग्रह के कवियों की अकारादि क्रम से सूची :- (90 कवि हैं)

हनुमंत भूषण के कवि

मनोरंजन भूषण के कवि

अधौगीत शतक के कवि

काव्यसंग्रह पंचाग के कवि

शृंगार चन्द्रिका के कवि

सुन्दरी तिलक के कवि

भड़ौआ संग्रह के कवि

विज्ञान मार्तण्ड के कवि

मनोज मंजरी के कवि

षट्ऋतु हजारा के कवि

वीरोल्लास के कवि

नखशिख हजारा के कवि

सुजानसरोज के कवि

रमकुसमाकर के कवि

कवि व चित्रकार का पूर्तिपत्र के कवि (417 कवियों का उल्लेख)

ब्रजभाषा के फुटकर कवित्त संग्रह (सम्पादक गो. गि.) के कवि

भक्तमाल की टीका में कवि उल्लेख

252 वैष्णव की वार्ता में कवि

लखनऊ बनारस बम्ब्रई के सूचीपत्र में कवि

काव्यकला के कवि

साहित्य सिंधु के कवि

अनेक काव्यसंग्रहों में समाहित कवियों की सूचियाँ दी हैं ।

अन्त में कुछ संग्रह ग्रंथों की सूचियाँ हैं ।

इस प्रकार इस ग्रंथ में हजारों कवियों का उल्लेख किया गया है ।

अनुसंधान के लिए यह ग्रंथ अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

काव्य संग्रह[58]

सवैया भेद/पिंगल प्रकरण (अपूर्ण)/कवि गोविन्द गिल्लाभाई/रजिस्टर आकार/कुल पृष्ठ 49/प्रथम पत्रा

गोविन्द ग्रंथमाला ना ग्रथो मां ज्या शब्दालंकारो आव्या छे तेनी विगत :-

पत्रा प्रथम

॥ पिंगल प्रकरण प्रारंभ ॥

॥ सवैयाछन्द वर्णन ॥

वर्ण के सवैया छन्द 22 अक्षर से 26 अक्षर तक के होते हैं ।

छन्दावपिंगल में २१ से २६ तक कहे हैं ।

इक्कीस ते छब्बीस लगि, वरन सवैया साजु ।
इक हक गन बाहुल्य करि, बरन्यों पन्नग राजु ॥

इन्होंने 17 भेद सवैया छन्द के भेद प्रस्तुत किए हैं । सबके स्वरचित उदाहरण लक्षण प्रस्तुत किए हैं ।

सवैया हैं -

चकोर मत्तगयंद, दुर्मिल, किरीट, भुजंग, चन्द्रकला, मदिरा, मानिनी, लच्छी, आभार, मुक्तहरा, मंजरी, अलसा, मनहरन, नीलचक्र, कलाधर, जलहरन, अनंगशेखर, कृपान, सुधानिधि, डमरू (ये कवित्त भेद हैं)

पत्र 21 पर

दंडक वर्णन :

पत्र 41 से अनुप्रास वर्णन है ।

पत्र 49 पर ग्रथ अपूर्णवस्था में समाप्त है ।

202 बंधसंख्या

ग्रंथ

प्रवीणसागर के अंत की बारह लहर अनुक्रमणिका आगे प्रवीणसागर की तिहतखी तुहर से पाठ प्रारम्भ है । प्रारंभिक कथन द्रष्टव्य है -

काठियावाड देशान्तर्गत राजकोट के ठाकुरसाहब ने सात मित्रों ने मिलकर संवत 1968 में एक आशक माशूक का सर्व विद्यामय **प्रवीणसागर** नामक ग्रंथ बनाना शुरु किया। और 72 लहरें (अध्याय) तक बनाए। वहाँ राजा का देहांत हो गया, तातें ग्रंथ अपूर्ण रह गया, वह विक्रम संवत 1945 में हमने अंत की (12) बारह लहरें बनाय के ग्रंथ पूर्ण किया। और बाकी गुजराती भाषा में गोविंद सुबोधिनी नामकी टीका रची, यह नीचे लिखते हैं -

पत्र 157 पर प्रवीण सागर की 12 लहरे समाप्त हो जाती हैं। लिखा है -

संवत 1968ना श्रावण वदी 89 ने मंगलवारें आ **प्रवीणसागर** ग्रंथनी प्रथम संवत 1815मां लखेल प्रति ऊपरथी बीजी प्रति सुधारीने घरमा राखवामाटे लखी छे। श्रीकृष्णमस्तु

पत्र 158 पर :

राजकोटना दरबार श्री मेहरामणजी के जेमणे प्रवीणसागर ग्रंथ लख्यो छे तेमना संबंध मां जे मने हकीकत मळी आवी छे ते नीचे मुजब छे।

(मेहरामणसिंह का विवरण दिया गया है)

पत्र 161 पर चित्रकाव्य प्रारंभ होता है -

मुकुट प्रबंध चित्रकाव्य

इसी तरह अष्टदशकमबंध, नवदल कमबंध, मुष्टिका प्रबंध, हल की कूड़ि, माला प्रबंध, चामर प्रबंध, धनुष प्रबंध, खड्ग प्रबंध, अश्व प्रबंध

पृष्ठ 168 पर ग्रंथ समापन है।

ग्रंथ का नाम : गोविन्द हजारा/कर्ता-गोविन्द गिल्लाभाई/आकार-रजिस्टर आकार/लिपिकार-स्वयं कवि/कुल पृष्ठ-251

प्रथम अनुक्रमणिका दी गई है। यह 13 पृष्ठों में है।

पृष्ठ 14 पर गोविन्द हजारा में सम्मिलित कवियों के नाम की सूची हैं। इसमें 141 कवियों का उल्लेख हैं।

गोविन्द हजारा में कुल छः प्रकरण है। यह एक लक्षण ग्रंथ है।

1. प्रथम प्रकरण में गोविन्द गिल्लाभाई के 141 तथा अन्य कवियों के 32 इस प्रकार कुल 173 छन्द हैं।
2. दूसरे प्रकरण में गोविन्द गिल्लाभाई के कुल 142 दूसरों के 112 कुल 254 छन्द हैं।

3. तीसरे प्रकरण में कवि के स्वयं के 46 दूसरों के 151 कुल 203 छन्द हैं।

4. चौथे प्रकरणमें कवि एक 66 दूसरों के 21 कुल 81 छन्द हैं ।

5. पाँचवे प्रकण में कवि के 60 दूसरों के 78 कुल 138 छन्द हैं ।

6. छठे प्रकरण में कवि के 171 तथा दूसरों के 74 कुल 245 छन्द हैं ।

इस प्रकार ग्रंथ में कुल छन्द कवि के 627 तथा अन्यों के 478 कुल 1101 छन्द समुहीत हैं ।

प्रारंभ इस प्रकार है -

॥ मंगलाचरण विशै कवित्त ॥

मंगल के प्रयोजन कोविद करत चार ।
एक निरविघ्न ग्रंथ पूरन के काज है ।
दूसरे कविन्द्र कुल रीत अनुसार पुनि,
तीसरों बताइबौ सु आसथा इलाज है ।
विनयललित निज विश्व में बतान चौथा,
कारन कहत ऐसे केते कविराज हैं ।
गोविंद सौं तीन विधि प्रथम नमस्कार,
आशिष औ वस्तुनिरदेश ही दराज है ।

अन्तिम छन्द :

बिमल विलास देस काठिया सु वाड़ तामें,
सुंदर सिहोर पुर ओपत अपारा है ।
बाहि में वसत हम स्वजन सहित सदा,
गीलाभाई नंद नाम गोविंद हमारा है ।
संवत उन्नीस सौ पिचत्तर शासन में
सावन सुकल पक्ष पूर्ण सोम मारा है ।
गोविंद करत तब संकलित सर्व करी,
पूरन प्रकाश कियौ गोविन्द हजारा है ।

विशेष विवरण इस ग्रंथ का अन्यत्र दिया जा चुका है । अतः अनावश्यक विस्तार देना यहाँ समीचीन नहीं है ।

यह ग्रंथ पूर्ण है तथा पाठभेद की दृष्टि से अन्यन्त महत्वपूर्ण है । अब यहाँ गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा सम्पादित ग्रंथों के विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं :

अमरकोश[59]

अमर कोश (गुजराती भाषांतर)

लिपिकार : गोविंद गिल्लाभाई

अनुवादक : गोविन्द गिल्लाभाई

आकार : रजिस्टर आकार

लिपि : गुजराती

गुजराती का यह एक महत्वपूर्ण शब्दकोश है । कविने प्रख्यात संस्कृत शब्दकोश अमरकोश के शब्दों को गुजराती में रूपांतर किया है जो एक विरल प्रयोग है । अब तक गुजराती भाषा में शब्दकोश के संदर्भ में इतना प्रमाणिक और गंभीर कार्य संभवतः नहीं हुआ।

प्रारंभ के कुछ अंश द्रष्टव्य हैं :

प्रथम कांड यथा स्वर्ग वर्ग

स्वर्गना नाम : 1. स्व, 2. स्वर्ग, 3. नाक, 4. त्रिहिक, 5. त्रिक्षहिशासय, 6. सुरलोक, 7. द्यो, 8. द्यौ, 9. त्रिविष्टपं, (त्रिपिष्टपं - त्रिसिष्टपं)

देवताओना नाम :-

अमर - निर्ज्जर, देव, त्रिदश, विजुध, सुर, सुपर्वा, सुपर्वत, सुमना, सुमनस, त्रिहिवेश, दिवौका, दिवौकस, दिलौका, आदितेय, हिविषद, हिविषत, द्युषत, घुसत, लेखा, अदितिनंदन, आदित्य, ऋभु, अरूप्ना, अमर्त्य, अमृत्या, घस, वहिभुजी, ऋतुभुज, गीर्धाणा, दानवीर, दानवाट्य, वृन्दाटक, देवता आदि ।

यह ग्रंथ अपूर्ण है । कुल पृष्ठ 150 तक लिपिबद्ध है । सप्तम वर्ग पूर्ण है, किन्तु अष्टम वर्ग प्रारंभ करके छोड़ दिया है ।

150 पृष्ठों तक भी जो सामग्री लेखक ने तैयार की है गुजराती साहित्य के भंडार के लिए तथा गुजराती अध्येताओं के लिए वह अन्यत्य महत्वपूर्ण है ।

चूँकि यह ग्रंथ मूल गुजराती में ही है अतः इसके विस्तृत विवेचन की अपेक्षा नहीं

है ।

चूँकि गोविन्द गिल्लाभाई हिन्दी के महान कवि थे और यह रचना उन्हीं की है इसलिए यह ग्रंथ उल्लेखनीय अवश्य है ।

ग्रंथ-गोविन्द गद्य साहित्य/कुल पृष्ठ 148/कर्ता - गोविन्द गिल्लाभाई/लिपिकार-स्वयं रचयिता/आकार-रजिस्टर/लिपि - गुजराती

यह ग्रंथ सम्पूर्ण गुजराती लिपि में लिखा गया है । ग्रंथ काव्य प्रकाश के चौथे उल्लास से प्रारंभ होता है । इसमें सर्व प्रथम रस विवेचन प्रस्तुत किया गया है । प्रारंभिक अंश ध्यातव्य है -

॥ रसविवेचन प्रारंभ यथा -॥

नाट्यशास्त्रना करता भरतमुनि कहे छे के - विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्रस निष्पत्तिः आवा सूत्रनो सामान्य अर्थ एवो छे के विभाव एटले अतिसूक्ष्म रुपे रहेल चित्रनी वासनात्मक वृत्तिरुपी इत्यादि स्थायी भावोने जेओ आस्वाद योग्य करी आपे छे ते । अनुमान एटले रसनी अभिव्यक्ति थया वधी थनारा अथवा रति आदि भावोनां अनुभाव ठरावनार, अने व्यभिचारी एटले विशेष करी इत्यादि भावोने फुरतो संभार करनार ते एम त्रणेनी साथे संबंध थवाथी रसनी निस्पत्ति थाय छे ।

इस प्रकार के 3-4-5 तथा 6 कुल मिलाकर 4 पृष्ठ है ।

आज गोविन्द गिल्लाभाई कवि के गद्यसाहित्य संग्रह की तालिका थी गई है ।

फिर हिन्दी भाषा का अव्यय कोश दिया है । अनेकाक्षरी कोश पृष्ठ 25 दिया है । पृष्ठ 41 से गोविंद अनेकार्थ प्रकाश दिया है । पृष्ठ 83 से अथ पिंगल मत्ते शुभाशुभ वर्ण विचार दिया है । पृष्ठ 87 से हिन्दी के आभूषणों के नाम की सूची दी है । पृष्ठ 90 पर उपमा लक्षण है । पृष्ठ 91 पर अंकअभिधान मंजरी है । पृष्ठ 96 पर एकसे सौ तक अक्षर भी गणतरी है। पृष्ठ 101 पर पिंगल ग्रंथो में दंडकभेद है, पृष्ठ 102 पर स्त्रियों के सोलह शृंगार का वर्णन है । पृष्ठ 105 पर पूरुषों के 16 शृंगार है । पृष्ठ 111 पर साहित्य दर्पण प्रथम परिच्छेद काव्यस्वरूप निरूपण का गुजराती रूपांतर दिया है । पृष्ठ 119 उदयपुर के रावजी कविराज माधवसिंह वख्तावरजी के लिखे भाषा के ग्रंथो की सूची है । इसमें 52 ग्रंथों का उल्लेख है ।

कुछ अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के ग्रंथों की अनेक सूचियाँ दी है जो महत्वपूर्ण है । पृष्ठ 130 पर स्त्री अंगों की उपमानों की सूची है । पृष्ठ 131 पर कामसूत्र की अनुक्रमणिका

है । पृष्ठ 135 पर अर्थालंकार विषै विवेचन है । पृष्ठ 139 पर छत्रीस राजकुल के नाम हैं । अन्य राजकुलों की सूचियाँ हैं ।

अन्त में कुछ नायिकाभेद की चर्चा है । मंगलाचरण विषै अपना मंतव्य देकर ग्रंथ समापन किया गया है ।

यह ग्रंथ विशेष रूप से गोविन्दगिल्लाभाई का कोशग्रंथ है । जिसमें अनेक विषयों की विस्तृत शब्दावलियाँ दी गई है । कुछ स्फुट सूचनाएँ भी महत्वपूर्ण हैं ।

काव्य निरूपण[60]

संस्कृत ग्रंथधारे

ग्रंथ नाम-काव्य निरुपण/ग्रंथकार-गोविन्द गिल्लाभाई/लिपिकार-गोविन्द गिल्लाभाई/ कुल पृष्ठ-37/आकार-रजिस्टर

प्रारम्भ :-

अथकाव्य निरूपण

शिवसरोज ग्रंथनी भूमिकामां काव्यलक्षणना दोहा कह्या छे । ते नीचे मुजबः

काव्य विलास ग्रंथे मते काव्य लक्षणं

॥ दोहा ॥

गुणयुत सब दूषन रहित शब्द अर्थ रमणीय ।
स्वल्प अलंका त काव्य को, लक्षण कहि कमनीय ॥

इसी प्रकार -

काव्य प्रदीपे मते

साहित्य दर्पण मते

काव्य प्रकाश ग्रंथे

रसरहस्य काव्य प्रकाश मते

रसरहस्य काव्य प्रकाश मते

रसरहस्य ग्रंथे काव्य लक्षणं

अलंकार कलानिधि ग्रंथे

रसिकानन्द ग्रंथे

भाषा तिलक ग्रंथे

शारदाकृत साहित्य सुधाकर ग्रंथे

मडनकृत काव्य रत्नावली ग्रंथे

ग्रन्थान्तरे काव्य लक्षणं

चिन्तामणि कृत ककुिलकल्तरु ग्रंथे ।

हरिचरण दास कृत सभी प्रकाश ग्रंथे ।

सूरतिमिश्र कृत साहित्य परिचय ग्रंथे

रसगंगाधर ग्रंथे

नवीन रत्नाकर कृत ग्रंथे

गोविन्द कृत वक्रोक्ति विनोद ग्रंथे

(संस्कृत के आधार पर तुलनीय)

काव्यफल किंवा प्रयोजन

विष्णु पुराणे,

अग्नि पुराणे

रसपीयूष ग्रंथे

भाषातिलक ग्रंथे आदि

पृष्ठ 1 से काव्य के कारणों का वर्णन है ।

पृष्ठ 12 से काव्य शरीर सामग्री

पृष्ठ 16 से अलंकार अपेक्षा

पृष्ठ 18 से वक्रोक्ति अलंकार लक्षण

पृष्ठ 23 से वक्रोक्ति के उदाहरण

पृष्ठ 31 से श्लेषालंकार

पृष्ठ 37 पर श्लेषालंकार भेदवर्णन ।

संस्कृत ग्रंथों में काव्यलंकार, काव्य प्रदीपिका, काव्यादर्श, वाग् महालंकार हिन्दी भाषा ग्रंथों में अलंकार कलानिधि, रसरहस्य, लखपति जससिंधु, कविप्रिया मुख्य रूप से यह

अलंकार ग्रंथ है, जिसमें संस्कृत के अलंकारियों तथा हिन्दी के आचार्य कवियों के मतों का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया है ।

कहीं कहीं कवि ने संस्कृत श्लोकों का हिन्दी काव्यानुवाद भी दिया है ।

अलंकार अध्ययन के लिए यह एक उपयोगी ग्रंथ है किन्तु इसका मनन करने के लिए और इसे समझने के लिए संस्कृत साहित्य का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है ।

विशिष्ट सम्पादित ग्रंथ : साहित्य चिन्तामणि संग्रह[61]

आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई ने जिन विशिष्ट ग्रंथो का सम्पादन किया है तथा जो सम्पूर्ण रूप से सम्पन्न है एवं कवि की सम्पन्न मेधा को प्रमाणिकता के साथ ज्ञापित करते हैं उनमें साहित्य चिन्तामणि ग्रंथ प्रमुख है । इसका विस्तृत विवरण ध्यातव्य है -

ग्रंथ संख्या 207 प्राप्य विद्या मंदिर, बड़ौदा

पृष्ठ 61 से 147 तक

ग्रंथ का नाम -साहित्य चिन्तामणि संग्रह

ग्रंथ संयोजक-गोविन्द गिल्लाभाई

लिपिकार-गोविन्द गिल्लाभाई

कुल छन्द-1215

कुल पृष्ठ-275

आकार-रजिस्टर

अनुक्रमणिका के चार पृष्ठ है ।

तत्पश्चात इस संग्रह में समाविष्ट कवियों की सूची है । कुल 207 कवियों का उल्लेख है । इसमें गोविन्द गिल्लाभाई के स्वरचित कवित्त सर्वाधिक हैं ।

विषय परम्परित और रीतिकालीन है । जिसमें स्फुट विषय ही अधिक है ।

कवित्त अध्यात्मक है तथा कुछ समस्यापूर्ति के कवित्त भी हैं । कवियों में कुछ नाम इस प्रकार है :-

अगर, अत्ता, अंबादत्त, अंबुज, अनन्य, अनीस, अलमत्त, अली, आनंदघन, आलम, ईश्वर, उदयमनि, उदेराज, उदेश उधौ, उधौराम ऐदिल, ओधव, औसेरी, कबीर, कल्यान, कविराज, कादर, काशीराम, क्रंदम, क्रमंच, कृपा, कृपाराम, केशव केशवदास,

केशो, केशोराम, केहरी, खेम, खेमकरण, गंग, गंगादत्त, गजानन्द, गद, गिरिधरदास, गीध, गिरिधारन, गुणवंत, गुलाबचन्द्र, गुपाल, गुलाल, गोकुल, गोप, गोविन्द, गोवरधन, घासीराम, चतुर, चंद, चन्द्रकला, जगजीवन, जदुनाथ, जमाल, जसराज, जसुराम, जीवन, जीवाभक्त, जयदेव, जेष्टलाल, जोध, जोवराज, टीकाराम, टोडर, ठाकुर, तत्ववेत्ता, तुलसी, तेज, तोष, त्रिकम, दत्त, दयानिधि दयाराम, दयासूर, दामोदर, दास, दीप, दूलह, देह, देवकल्यान, देवीदास, द्विजराम, धनीराम, धर्मसिंह, धुरंधर, नगीच, नन्द, नंदन, नंदलाल, नरोत्तम, नरहरी, नवल, नवललाल, नागर, नाथ, नायक, नारायन, निपट, निरंजनी, पुरान, परिमारकुंड, प्रधान, वंशगुपाल, बालकृष्ण, बुधसेन, बेनी, बेताल, ब्रह्म, बीरबल, भगवंत भगवान, भरमी, भद्र, भवानी, भानु, भारथ, भीम, भीमक, भुवनेश, भूपति, भूषण, मनंसा, मनिलाल, मल्ल, मस्तान, महीजन, माखन, माथुर, मिथिलेश, मुरलीधर, मोतीराम, मून, मोहन, मोहरमृगेन्द्र, युगराज, गुलकिशोर, रघु, रघुनाथ, रघुराम, रनघोर, रत्न रविराम, रसखान, रससिंधु, रसरासि, रसिकबिहारी, राम, रूपुलाल, वजैकुमार, वल्लभ, विजैभूप, विप्रप्रसाद, विसुनाथ दुबे, विश्वनाथ, ब्रज गोकुल, ब्रजचन्द्र, ब्रजनिधि, वृन्द, शंकर, शीतल, शिवकरण, शिवदास, शिवराम, शिवनाथ, शिवसिंह, शुकदेव, श्यामलाल, श्रीपति, सकल, संत, संतन, संभु, सरदार, साधुराम, सागर, साधुलाल, सुरत, सूरदास, सूरकिशोर, सूरज, सेन, सेनापति, हनूमान, हरख, हर्षतीमहत, हरि, हरिकेश हरिचंद, हरिमल्ल, हिरदेश, हेम, हेमनाथ तथा ज्ञानि।

- कुल 207 कवियों का उल्लेख है।

प्रस्तुत सूची में अनेक कविगण प्रसिद्ध है, अनेक अल्पज्ञात हैं तो कुछ अज्ञात भी हैं। ग्रन्थारम्भ में विषयानुक्रमणिका इस प्रकार है -

विषयानुक्रमणिका :-

मंगलाचरण, स्तुति, विनय, महिमा, भक्ति, याचना, ग्रन्थप्रयोजन, साहित्यलक्षण, साहित्य प्रशंसा, नीतिविनोद, नीति वर्णन, नीतिप्रशंसा, विद्याप्रशंसा, सुकाव्य, कुकाव्य, कविलक्षण, कुकविप्रशंसा, कुकविनिंदा, कविविषै, संस्कृतभाषा प्रशंसा, निंदाच, हिन्दीभाषा प्रशंसा तथा निंदा, पंडित प्रशंसा, सुभाषित, सुवक्ता, व्याकरकी प्रशंसा तथा निंदा, गुणप्रशंसा, गुणवान प्रशंसा, मूर्ख, विषै दुर्जन विषै, गुनगाहक, सज्जन, दुर्जन, विषै, सपूत, कपूत, धन-प्रशंसा, निंदा, धनवान, प्रशंसा, निंदा सम्पति, प्रशंसा, निंदा।

सत्संग विषै, कुसंग विषै, प्रेम प्रशंसा, प्रेमकरन; विधि, नेहनिवाहन, मित्र की चिट्ठी, नायक नायिका, उद्धव गोपी, प्रेमनिन्दा, एकांगी प्रेम, सुमित्र वर्णन, कुमित्र, कपटीमित्र, मूर्खमित्र, स्वार्थ-परोपकार, दान, जन्मोत्सव, यश, दया, धर्म, अधर्म, पाखंड, भक्त, मोक्ष, सत्य, असत्य, विवेक, सन्मान, सार गहिवो, उद्यम, रोजगार, कर्म, प्रतिकूल दैव, फल, विधिप्रशंसा, निन्दा, उपालम्भ, धैर्य, उन्नति, स्वभाव, जातिस्वभाव, सुस्वभाव, कुस्वभाव, जातिबल, जातिभूषण, बाल अवस्था, तरुणावस्था, वृद्धावस्था, संप, कुसंप, व्यवहार निपुण, सर्ववस्य करन, विनयविशै, सुखदायक, दुखदायक, चतुरविशै, चतुराई विशै, चतुर, चतुराई, व्यर्थ व्याधि, असंभव, अयोग्य, सुपारी बिना पान, धिक्कार, हितशिक्षा, मन, यौवन, काम, कामी, स्त्री, पतिव्रत, स्त्रीगुन, अवगुन, स्त्रीअंग, स्वभाव, छिनालस्त्री, छिनालचरित्र, स्त्रीकटाक्ष, परस्त्रीसंग, गनिकासंग, पंडितप्रति, स्त्रीवचन, महिमान प्रति, कुमाचार्य प्रति, गृहस्थआश्रम निन्दा, प्रशंसा, दीनता बड़ाई,महत्त, निन्दा, जीभ, वचन, लाज, दानी, भलपन, सदाचरन, दुराचरन, नमकहराम, अधम कभी उत्तम नहीं होता, सावधान, विस्वास, गणक और गणिका, त्याग, निश्चित, परपीड़ा, काम, सर्व समान न होय, काल, हिम्मत, टांग, चतुर, अमल, राजमल, कारभारी, सभा, सभाचतुर, सुराजा, कुराजा, सोमसरदार, लोकसेवा, जनानियाँ, सप्रधान, कुप्रधान, मुन्शी, वकील, सुवैद्य, कुवैद्य, सुब्राह्मण, कुब्राह्मण, भीख, रिश्वत, कचहरी, खुशामदखोर, ढंग, लवार, चोर, चुगलखोर, चिकनिया, शरम, बेशरम, मरद, नामरद, चंचल, ईर्श्यालु, अहंकार, क्रोध, संतोष आशा, परआशा, तृष्णा, लोभ, लोभी, लक्ष्मी और लोभी सूम और दाता, कलियुग, बनिक, मनस्वभाव/मननिंदा, मच्छर, खटमल, मदिरा, अफीम, भाँग, तमाकू, हुलास, हुक्का, दीप, लाठी काष्ट ।

अन्योक्ति वर्णन -

विविध अन्योक्ति भेदोपभेद

कुल विषय 147

अन्त में कविने पुष्पिका में निम्नांकित वर्णन किया है -

साहित्य चिन्तामणि सुमन, गूँथी ग्रन्थ समोद ।
प्रथम भाग पूरन कियौ, निरमल नीति विनोद ॥
नीतिनिपुण नर हौनं कौ, कीने नीति विनोद ।
तावें ताकों सकल जन, शखो धरिन मोद ॥

सीखे नीति विनोद के, निपुण नर होय ।
जस पावै वह जगत में, छल न सकै पुनि कोय ॥
के ते कविन पुरातनी, केते अधुना लीन ।
केते कवित बनाइ कैं, हमने धरे नवीन ॥
यामै हौवै चूक तौ, लीज्यो सुकवि सुधार ।
विनत बलित कर जोरि कै, गोविंद कहत गुहार ॥
देश काठियावाड़ में, सुन्दर ग्राम सिहोर ।
वामें बसत सदाय हम, कुटुंब युक्त कर ठौर ॥
संवत शर षट, नंद शशि, सांवन माहि समोद ।
गोविंद नै पूरन कियौ, निरमल नीति विनोद ॥

संवत 1969 सन् 1912

अंत में कवियों के कितने छन्द संग्रह में हैं इसका उल्लेख किया गया है । ग्रंथ से प्रथम चार छन्द संलग्न हैं । जो पत्रा 199 में छूट गए हैं ।

ग्रन्थारम्भ इस प्रकार है -

॥ अथश्री साहित्य चिन्तामणि ग्रंथः ॥

प्रथम भाग नीति विनोद

॥ मंगलाचरण दोहा ॥

सिद्धि सदन इभ वदनवर, गनपति मंगल मूल ।
साहित्य संग्रह कनर में, सदा रहो अनकूल ॥

॥ शारदा स्तुति - कवित्त ॥

मंगल करन महा दारिद दरन देखो, पाप के हरन जग तारन तरन हैं ।
अमर मरन असरन के सरन तुम, विशद वरन चारौ फल के फरन हैं ।
धरनि धरन आदि करत जे सुमरन, तिनके दरन दुख जाहिं को परन हैं ।
गोविंद कहत ऐसे शारदा चरन मेरे, भाव के मरन सर्व सिद्धि के करन हैं ।

अंत में पुस्तिका हेतु लिखा है

॥ दोहा ॥

सुवन तेज मन लीज, सरन सर बेधत चतुरबिन ।
जागति औगति आगि, मध्य त्रिया बिन आप ॥
नत गंगे मुथकुंद गति, रज मुख मांग तकतिय बिन ।
याद लई जिय संग, निकर आदि जिन आप ॥

इसमें आगे इसमें चित्रकाव्य परम्परा के छन्द संग्रहीत हैं । इनमें अश्वगति, जालिबंध, धनुर्बध, त्रिपदी भेद, गोभूमिका, कपाटबंध आदि हैं ।

पृष्ठ 7 पर अथ कलाप्रवीनोक्त श्लेष अभिनयद सखे धोक्त

पृष्ठ 9 पर अथ रससागर पूरन प्रेमदशा वर्णन

पृष्ठ 11 पर रससागर मितचरचा प्रसंग यथा

85 पर अन्तिमांश

बिहुर नदीश प्रवीन, सागर सिद्ध मिलन बदिकाश्रम ।
द्वै सप्तति अभियान, पुरन प्रवीन सागर ते लहर ॥

इति श्री प्रवीन सागर ग्रंथे भंगी बदिकाश्रम

गमनं सिद्ध मिलनो नाम अष्टषष्ठी तीमो लहेरं समाप्तं ॥ (पुष्पिका नहीं हैं ।)

कविन के चरित्र[62]

आकार-रजिस्टार

प्रतिपृष्ठ-30 पंक्ति

प्रतिपंक्ति-12 शब्द

रचनाकार-गोविन्द गिल्लाभाई

लिपिकार-गोविन्द गिल्लाभाई

कुल पृष्ठ 42+1

ग्रन्थारम्भ

॥ गणेशाय नमः ॥

काठियावाड़ देशान्तरगत गोहिलवाड प्रान्तस्थ निवासी चौहान कवि गोविंद गिल्लाभाई संग्रह इति ।

भाषाकविन के टुंक जीवन चरित्रो

1. लखनेश, लक्ष्मण प्रसाद पाण्डे रसतरंग ग्रंथ
2. लखपति - (पहले विज्ञप्ति में 14 पंक्तियाँ लिख कर काट दी गई हैं) फिर लिखा है

कच्छ के महाराजा रावश्री लखपतिसिंहजी

कच्छ देश के महाराज श्री देशलजी को ईस्वी सन् १७०७ मे एक कुमार जन्मे । उनका नाम लखपतिसिंह रखा गया । वह जब ३४ वर्ष के हुए तब उनके पिता की हयाती में वे ई. 1741 में गद्दी पर विराजमान हुए ।

वे बहुत उदार तथा विषय विलासी थे । उनको कविता और गायन का बहतु शौक था और स्वयं भी कविता करते थे । उन्हींने ई.स. 1752 से 1761 तक में (अर्थात संवत् 1808 से 1817 तक में) भुज नगर में कविता सीखने के लिए ब्रजभाषा पाठशाला स्थापना की थी और जैन साधु कनक कुशल को भट्टार्क की पदवी देके ब्रजभाषा की कविता सिखाने के लिए अध्यक्ष नियुक्त किए और खर्च के लिए दो तीन हजार की वार्षिक उपज का एक रेहा नामक ग्राम बख्शीश दिया । वह अद्यापि पर्यन्त उनके शिष्य खाते हैं । और शाला का खर्च चलाते हैं ।

भट्टार्क श्री कनककुशल के शिष्य कुँवर कुशल महापंडित थे, उन्हीं के राव लखपति के नाम से सर्व साहित्यमय एक वृद्ध ग्रंथ 'लखपत जससिंधु' नामक बनाया है । वह बहुत उत्तम और देखने योग्य है । वह हमारे पास लिखा हुआ है ।

राव लखपतसिंह जू खुद भी कवि थे । उन्होंने लखपति शृंगार/लखपति मान मंजरी/सुतररंगिनी, मृदंग कहोरा, रागसागर, आदिक ग्रंथ बनाए है ।

ये महाशय ईस्वीसन 1817 में स्वर्गवासी हुए ये तब उन्हीं के साथ 16 रानियाँ सती होकर जलमरी थीं ।

यह कविता में अपना नाम लखधीर रखते थे ।

3. लखपतिराम :

राशि मौलि ग्रंथ रचना की । उसमें शिव पार्वती के विवाह के पद है ।

4. लघुकेशो :

जोधपुरा के देवीप्रसाद की सूची में है ।

5. लघुदास :

साहित्यसिंधु में उनकी कविता है ।

6. लच्छू : लक्ष्मणदास, लक्ष्मणप्रसाद पाण्डे

इन्हींने रसतरंग नाम का उत्तम ग्रंथ बनाया है । और किसी स्थान पर लखनेश भी नाम कविता में रखा है (देखो प्रथम नाम)

7. लच्छिदास - अयोध्या निवासी विद्यामान

8. लच्छिराम - करुमा भरण नाटक बनाया है ।

9. लक्ष्मीनाथ (लक्ष्मीनाथ)

महाराजा लक्ष्मी विलास ग्रंथ रचा

10. लक्ष्मीनारायण - भरतपुर के राव

उत्सव विलास, (इसमें बारह मास के उत्सव के पद है)

11. ललित : कानपुर निवासी मनोरंजन संग्रह में उनकी कविता है ।

12. ललित किशोरी : आरा जिला निवासी, गोस्वामीश्री ललित किशोरीजी अभिलाषमाधुरी ग्रंथ

13. लल्लूभाई : भरतपुर निवासी वैश्य भाषाभूषण ग्रंथ पर बहुत ग्रंथन के कविन के कवित्त उदाहरण में बढाच के संवत् 1833 में अलंकार मंजरी नामक ग्रंत किया है ।

14. लादुनाथजी - जोधपुर के महाराजा, ये मानसिंह के गुरु थे । ये कविता करते थे । उनके बताए ग्रंथ अद्वैत, पचीसी, अदभुत बत्तीसी ।

15/1. लाल : (संवत १७९४) आगरा निवासी, सरसरस नाम का ग्रंथ 1794 में संकलित किया है । उसमें नायिकाओं के बहुत से भेद हैं । नायिकाओं के नवीनभेद बताने में सुरतप्रिया आदिक कितनेक और कवि की सम्मति लेंके बहुत नवीन भेद बताए हैं ।

परिमाण में इतने सारे भेद अब तक किसी और ग्रंथ में हमने नहीं देखें । किन्तु रामसिंह मुखार्विन्द मकरंद ग्रंथ में ये सब हैं । रसप्रबोध ग्रंथ में भी हैं । ये तीन ग्रंथो में विशेष भेद देखने में आए हैं । यह ग्रंथ मेरे पास लिखा हुआ है । किंतु कीड़े खा जाने से अब नहीं रहा । ग्रंथरचना की जानकारी के लिए यह दोहा द्रष्टव्य है -

सत्रहसौ चौरानवे, संवत् शुभ वैशाख ।

भयौ ग्रंथ पूरन सु यह, छठ शशि पुषसित पारख ।

इति श्री लालकवि संचित सरसरस ग्रंथे रसनिरुपणो नाम अष्टमो विलास ।

15/2 लाल : प्राचीन कवि, बूँदी कोटा के, पहले महाराज छत्रसाल जी के आश्रम में थे ।

16/3 लाल : बन्दीजन बनारसी, चेतसिंह जी के पास था ।

17/4 लाल : बिहारीलाल त्रिपाठी, टीकमपुरवाले

18/4 लाल : उन्होंने चाणक्य राजनीति भाषा में किया है ।

19/4 लाल : लल्लूलालजी गुजराती, आगरा निवासी, जिसने प्रेमसागर ग्रंथ गद्य में लिखा है ।

20/7 लाल : बुन्देला, छत्रसालजी के पास था । जिसने छत्रप्रकाश ग्रंथ बनाए हैं।

21/8 लाल : छत्रसाल बुन्देल के ज्येष्ठ पुत्र हृदयशाह ने पन्ना के राज्य की स्थापना की उनके साथ लाल कवि रहता था ।

22/8 लाल : जयदेव कवि ने कविता में अपना नाम सर्वठौर लाल रखा है, और एक अमृत मंजरी नाम का नायिका भेद का अति उत्तम ग्रंथ बनाया है । उसके बारह प्रकाश (अध्ययन) हैं । वह हमारे पास लिखा हुआ है । ग्रंथ में प्रकाश (अध्याय) के अंत में लिखते हैं -

इतिश्री मत्कवि जयदेव विरचितायां अमृत मंजर्या संयोग श्रृंगारे षट्ऋतु कथनं नाम द्वादशमो प्रकाशः समाप्तः॥

अमृत मंजरी ग्रंथ की कविता नीचे लिखते हैं -

॥ पावस ऋतु सवैया ॥

साँवरि पातरि देह सनेह, संवारे है नैन सु तीछन भाले ।
साँवरे बार घुटे लपटे तनु, साँवरे अग्र उरोजन छाले ॥
साँवरे ये रति कंज कली सु, भमली बिलसे मिलि प्रेमहि पाले ।
ख्याल कछू कवि लाल कह्यौ, लखि कैं इक बाण रसालबगाले ॥

ग्रंथांत का दोहा - (कवि वचन)

॥ दोहा ॥

उपयोगी भोगीन कौं, कह्यौ सुरस श्रृंगार ।
छमिजहु तुक परी सुकवि, करनन बुधि अनुसार ॥

23/9 **लाल** : महोली के महाराज कुमार खड्गमल सिंहजी बहादुर कविता करते थे और रसिकविनोद ग्रंथ बना के छपाए हैं । वह हमारे पास है ।

24/10 **लाल** : महाराज कुमार ज्वाला प्रताप सिंहजी सिहरौली महाराज के प्रथम नंबर के भाषा तथा निवास कोटा, जिला, मिर्जापुर के सूर्यवंशी क्षेत्र उनके बिना ये ग्रंथ सब छपे है :- 1. पांवन पचीसी, 2. पावन प्रेम तरंग, 3. वसंत विनोद, 4. लाल विनोद, 5. बैरन वसंत, 6. रजरंजन, 7. इश्क तरंग, 8. विरह बिन्दु, 9. प्रेमबिन्दु, 10. श्रीराम त्रय स्तोत्र, 11. स्वप्न सुन्दरी

25. **लाल गिरिधर** : वैसवारा निवासी

26. **लाल गुपाल** : जोधपुर निवासी, देवीप्रसाद की सूची

27. **लाल चंद** : जोधपुरके वि.प्र. प्रतापसिंह के गुरु ।

28. **लाल चंद** : जैन साधु, इसने छिनाल पचीसी, ग्रंथ चौपाई में बनाया है । हमारे पास लिखा हुआ है ।

29. **लालजी** : मित्र (काशीराज सूची) कोकसार ग्रंथ

30. **लालजी** : पंडित लखनऊ के कृत ज्ञानपीचीसी, सभाप्रकाश, अन्य दो ग्रंथ इनके अतिरिक्त निम्नांकित कवियों का विवरण और है -

31. **लालू** - पावस प्रमोद वाले

32. **लालमणि** - लखनऊ के अछूत रामायण विनय विलास

33. **लालन** - पावस प्रबोध संग्रह में कविता है

34. **लालनदास** - दलमरू वाले

35. **लाला** - बनारस के रस मूला ग्रंथ

36. **लाला** - हुकुमनागर वाले पाठक

37. **लाला मुकुंद** - बनारस के मुकुन्द विलास

38. **लोकनाथ** - दुबे

39. **लोकनाथ** - बनारस निवासी, नाथ छाप श्रीनाथ संग्रह, नाथसरोज, वंशीराग माला

40. **लोकनाथ** - चौबे (लखनऊ के) राधिका सुषमा तथा कोककला ग्रंथ

41. वजहन : अज्ञात

42. बजेकुमार - अज्ञात, (काशोदरा उपलब्ध)

43. वनद - कविरत्न माला में कविता है

44. बंदन - काशी निवासी पाठक

45. बंदी - अज्ञात

46. बनसू - कविरत्न माला में कविता है

47. वनरायन - प्रदान छन्दोनिधि पिंगल

48. वल्लभ - किशनगढ़ निवासी

49. वल्लभ - काठियावाड़ में जूनागढ़ के नागर ब्राह्मण

50. विजयहर्ष - जैन साधु, सुरसुन्दरी, प्रबंध ग्रंथ रचा है ।

51. बर कविवर - केवल कविता छन्द प्राप्त है ।

52. वल्लभ - ध्यातव्य शिवसिंह सरोज

53. वल्लभ - किशनगढ़ निवासी वृन्द कवि के सुपुत्र

54. वल्लभ - काठियावाड़ में जूनागढ़ के

55. वल्लभ - गूढ शतक ग्रंथकर्ता

56. वल्लभ - दुमराच निवासी मनोज मंजरी तृतीय कलिका में देखो ।

57. वल्लभ रसिक - कविता प्राप्त है मात्र

58. वरवै सीता - अज्ञात

59. वंशगोपाल - वंदीजन, जालवन निवासी

60. वंसरूप - अज्ञात

61. वहाव - अज्ञात

62. वाजिद - अज्ञात

63. बाजेय - अज्ञात

64. वादेराय - अज्ञात

65. बंदीजन - मलमऊ वाले

66. **वामन** - गोस्वामी वामनाचार्यजी गिरि मिर्जापुर निवासी विद्यमान है का ग्रंथ है । पंचायत पचीसी, इंदिराष्टक, परवत्याष्टक, आदि

67. **वारन** - भूपाल वाले रसिकविलास ग्रंथ

68. **वलनदास** - अज्ञात

69. **वासुदेव** - बम्बई वैंकटेश्वर प्रेम में छपा,

70. **वारिद** - बम्बई के काव्य सग्रह में कविता

71. **विक्रम** - विक्रमशाही राजा विजैबहादुर

72. **बुंदेला** - टेहरीवाले कृत हरिभक्ति विलास

73. **विक्रमसिंह** - बनकोट वाले कवि व चित्रकार ।

74. **बिजै** - राजा विजैबहादुर बुदेला हैं टेहरीवाले ।

75. **विजैभूप** - भड़ोवा संग्रह, दूसेर खण्ड में कविता है ।

76. **विजयसिंह** - श्रीमान गोडेन्द्र शिरोमणि स्योपुर बड़ौदाधीश कृत विजय रस चन्द्रिका का ग्रंथ किया । कवि व चित्रकार में देखो ।

77. **विजयहर्ष** - जैन साधु थे, अन्यत्र प्रख्यात रहे हैं । सुरसुन्दरी प्रबंध काव्य रचा था ।

78. **विठ्ठल** - अज्ञात

79. **विठ्ठलनाथ** - गोकुलस्थ गुसाई, श्री वल्लभाचार्य के सुपुत्र संस्कृत के अनेक ग्रंथों के रचयिता, पद रचयिता एवं वचनामृतों के कर्ता ।

80. **विठ्ठलविपुल** - गोकुल निवासी श्री स्वामी हरिदास के शिष्य कीर्तन पद कर्ता

81. **विद्रुप** - अज्ञात

82. **विद्यादास** - अज्ञात

83. **विद्याधर** - इनकी कविता अलंकार रत्नाकर में समाविष्ट है ।

84. **विद्यानाथ** - अंतरवेद के प्रसिद्ध कवि थे .

85. **विनयसमुद्र** - ये जैन साधु थे, बीकानेर निवासी थे, सिंहासन बतीसी ग्रंथ के सृष्टा

86. **विन्दादत्त** - हफीजुल्लां खां हजारा में इनकी कविताऍ संग्रहीत है ।

87. **विनोदी लाल** - ये कवि व चित्रकार थे मासिक पत्रिकाएँ में प्रकाशन है ।

88. **विप्रप्रसाद** - भड़ोवा संग्रह, में इनकी कविताएँ संग्रहीत हैं । प्रथम खण्ड में देखें ।

89. **विरंजी कुँवरी** - सती विलास की रचयिता छपा हुआ हमारे पास है ।

90. **विष्णुदत्त** - काशीराज सूची , रामदत्त के पुत्र ठाकुर जैगोपालसिंह चैमलपुर के आश्रित, राजनीति चन्द्रिका ग्रंथ के कर्ता ।

91. **विष्णुदास** - लखनऊ के साधू महात्मा, रुकमणी मंगल ग्रंथ के कर्ता ।

92. **विष्णुराम** - गुजरात के आमोद गाँव के निवासी, प्रेम प्रस्ताव, ग्रंथ के कर्ता।

93. **विशराम** - अज्ञात

94. **विशादराम** - काशीराज सूची, नाम माला ग्रंथ रचा

95. **विश्वनाथ** - बंदीजन, तिकई जिला रायबरेली के निवासी । विद्यमान है ऐसा लिखा है ।

96. **विश्वनाथ** - अताई, बंधेल खण्डनिवासी सुन्दर कवि है ।

97. **विश्वनाथ** - महाराज विश्वनाथ सिंह, बांधव नरेश ने बीजक कबीर की टीका-1, तथा 2 आन्द रघुनन्दन नायक 3. उत्तम काव्य प्रकाश यह 3 ग्रंथ रचे । कोई रीमा के महाराज कहते है ।

98. **विसंभर** - हिन्दी कवित्त के प्रख्यात सृष्टा रहे हैं ।

99. **विश्वंभर** - अज्ञात

100. **विश्वंभर नाथ** - लखनऊ निवासी थे, जातक चन्द्रिका ज्योतिष ग्रंथ रचा

101. **विश्वेसुर** - अज्ञात

102. **वीर** - दाऊदादा के नाम से प्रख्यात । बाजपेयी थे । मंडिला निवासी थे । ब्रजभाषा में काव्य रचा ।

103. **वीर** - बीरबल नाम से प्रख्यात कायस्थ थे । दिल्ली निवासी सम्राट अकबर के कृपापात्र

104. **वीर** - वारसमासा में कवित्त सवैया रचे ।

105. **वीरचंद** - सिंहोर के निवासी थे । कंसारा जाति के थे । इन्होंने सारा भारत चन्द्रावली छन्द में रचा है ।

106. **वीरभद्र** - रसमंजरी ग्रंथ के रचयिता ।

107. **वीरमाण** - जोधपुर निवासी देवी प्रसाद को सूची में समाविष्ट ।

108. **वेदनिधि** - शृंगार सुधाकर में, इनके छन्द है ।

109. **वैरीलालजी** - जयपुर राज्यान्तर्गत दोषा नगर के समीप धौलार गाँव के ठाकुर थे । रावत, वैरीलाल जी के पद में एक शिवभक्ति सागर नामक ग्रंथ रचने का उल्लेख है ।

110. **वैष्णवदास** - काशीराज की सूची, भक्तिरस बोधिनी की टीका । (अग्र. नारायण देखो)

111. **बृन्द** - ये जाति के भोजक (सेवक) प्रथम मारवाड़ में मेड़ता गाँव के रहनेवाले थे । वह दिल्ली में बादशाह सलामत के साथ रहते थे । वहाँ से किसनगढ़ के महाराजा रायसिंहजी अपने पिता रूपसिंहजी का इतिहास छन्दोबद्ध रचने के लिए इन्हें किसनगढ़ ले आए । महाराज रायसिंह ने बड़ा सरकार किया । इनके वंशज आज भी किसनगढ़ में विद्यमान हैं । बृन्द कवि के पुत्र वल्लभ वल्लभ के जयलाल आजकल किशनगढ़ के राजकवि हैं । अच्छे विद्वान भी हैं । बृन्द के ग्रंथों के नाम 1. वृन्दविलास यह वृन्द सतसई के नाम से भी प्रख्यात है । 2. भाव पचासिका, 3. वृन्द विलास (सटीक, इसमें 700 दोहे यमक के हैं) 4. पवन पच्चीसी आदिक हैं ।

112. **वृन्दावनदास** - करौली के वास सपोट गाँव के निवासी । अग्रवाल वैश्य संवत् 1948 में इनके ग्रंथों के नाम 1. रुघुवर यश चन्द्रावली, 2. हरि इच्छा वेली, 3. अन्य भी ।

113. **वृन्दावन** - ब्राह्मण थे, सरोता, जिला रायबरेली विद्यमान है ।

114. **व्रज** - गोकुल के प्रख्यात ब्रजकवि ।

115. **व्रज** - माधव विलास ग्रंथ के प्रसिद्ध सृष्टा कवि ।

116. **व्रजचंद** - महाकवि कालिदास का त श्रृंगार तिलक भाषा में लिखा, वह

हमारे पास लिखा हुआ है ।

117. **व्रजचंद** - लखनऊ निवासी, महाराजा काशीराज के आश्रित । रामसुधा ग्रंथ के रचयिता ।

118. **व्रजचंद** - आपने हृदयाभरण ग्रंथ दोहों में लिखा है ।

119. **व्रजदास** - अज्ञात

120. **व्रजनंद** - जोधपुर निवासी देवीप्रसाद की सूची में विवरण हैं ।

121. **व्रजनाथ** - अज्ञात

122. **व्रजनिधि** - जयपुर के महाराजा प्रतापसिंहजी ने संवत 1852 में इनसे भर्तहरि शतक भाषा में बनवाया था जो हमारे संग्रह में विद्यमान है ।

123. **व्रजपति** - प्रसिद्ध कीर्तनकार थे ।

124. **ब्रजभूषण** - उद्धव गोपी शतक के रचयिता ।

125. **ब्रजमोहन** - अज्ञात

126. **व्रजराज** - अज्ञात

127. **व्रजराय** - उद्धवगोपीशतक के कर्ता

128. **व्रजलाल** - अज्ञात

129. **व्रजलाल भट्ट** - काशी के निवासी, कविराज काशी के सूची में दर्ज । मान कवि के पुत्र म. उदितनारायसिंह के आश्रित । छन्दरत्नाकर पिंगल ग्रंथ के कर्ता ।

130. **ब्रजवासी** - ब्रजविलास के अमर सृष्टा ।

131. **ब्रजवासी दास** - प्रबोध चन्द्राकर नाटक के कर्ता, काशीराज कवि की सूची में देखिए ।

132. **ब्रजवासी दास** - वृन्दावन वासी थे ।

133. **व्रजवासी दास** - लखनऊ के ।

134. **व्रजेश** - मनरंजन संग्रह में पत्र 67 126 में देखें ।

136. **व्यास** - स्वामी हरिराय शुकल, उडधा (ओरछा) वाले ।

137. **व्यासजी** - अज्ञात

138. **व्यासजू** - गोविंदनंदघन काव्य संग्रह में आपकी कविताएँ सम्पादित हैं ।

139. **व्यासनंदन** - भक्तमाल की टीका में उल्लेख

140. **शंकर** - नाथुराम शंकर हरदुवागंज जि. अलीगढ़ निवासी विद्यमान हैं । प्रसिद्ध कवि

141. **शंकर** - दीक्षित कवि विज्ञान बोध ग्रंथ के रचयिता (लखनऊ की सूची में देखें)

142. **शंख** - अज्ञात

143. **शंभु** - छत्रपति शिवाजी के पुत्र मरहठा । सितारागढ के महाराज । इनके रचे नखशिख के ग्रंथ लेखक के पास हैं, दूसरे भी नायिकाभेद की कविताएँ-हैं । ये महाशय कविता में अपना उपनाम शंभु रखते थे ।

144. **शंभुनाथ** - मिश्र ब्राह्मण असोथर नरेश भगवंतराय के पास ।

145. **शंभुनाथ** - बंदीजन, शुकदेव के शिष्य, 1. अलंकार दीपक व 2. रसतरंगिणी ग्रंथों के कर्ता । ये ग्रंथ हमारे पास हैं ।

146. **शंभुनाथ** - त्रिपाठी । दैदियाखेर वाले ।

147. **शंभुराज** - अज्ञात

148. **शशिनाथ** - (देखिए सोमनाथ पृष्ठ 15 पर) सोमनाथ के नाथ से प्रख्यात सोमनाथ कवि कभी कभी कतिवा में अपनी छाप शशिनाथ रखते थे । इन्होंने महाराज प्रतापसिंह की आज्ञा से संवत 1798 मे एक रसपीयूष निधि नामक अदभुत सर्व साहित्य का ग्रंथ बनाया था । उसके वाईस स्तरंग (अध्याय) है । हमारे पास है ।

149. **शामलदासजी** - उदयपुर के राज्याश्रित चारण थे ।

150. **शालिग्राम** - लाला मुशदाबाद निवासी वैश्य थे । ग्रंथ 1. मोरध्वज नाटक, 2. लावण्यवटी सुदर्शन, 3. गोपीवियोग की 12 कडी.

151. **शाह** - जोधपुर निवासी देवीप्रसाद की सूची में इनका उल्लेख है ।

152. **शाहुहूसैन** - जोधपुर निवासी थे । देवीप्रसाद की सूची में इनका उल्लेख है।

153. **शितिकंठ** - इनका ग्रंथ बम्बई में छपा था । इनका उल्लेख काव्य रत्नाकर में द्रष्टव्य है ।

154. **शिवगुलाम** - इनका रचा हुआ माधव विलास प्रख्यात है ।

155. **शिवकेश्वर** - इनका दूसरा नाम हरिसुकवि था । सहरोलीतवे मे कोटा के निवासी थे । इनका रचा हुआ नायक विरह वीर पच्चीसी, ग्रंथ प्रसिद्ध है ।

156. **शिवचंद** - इन्हें सेवक या भोजक भी कहा गया है । इनका रचा प्रतापपचीसी ग्रंथ गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में है ।

157. **शिवदत्त** - विवरण नहीं मिलता ।

158. **शिवदत्त** - स्वामी छाप से इनका उल्लेख लखनऊ की सूची में दर्ज है । इनका रचा हुआ हरिहर सगुणा निर्गुण पदावली ग्रंथ प्रसिद्ध है ।

159. **शिवदास** - ये लखनऊ के निवासी थे, इनका रचां हुआ सुधासिंधु ग्रंथ प्रख्यात है ।

160. **शिवदास** - इन्हें राय भी कहा गया है । इनका रसविलास ग्रंथ प्रख्यात है।

161. **शिवनरेशसिंह** - ये कवि थे तथा चित्रकार भी थे । मासिक पत्रिका में विवरण ज्ञातव्य है ।

162. **शिवनाथ** - लखनऊ के निवासी थे । इनका रसवृष्टि ग्रंथ लखनऊ से छपा था जो गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में है ।

163. **शिवपाल** - इनकी रची हुई रसिक मंजरी प्रख्यात है ।

164. **शिवप्रसाद** - ये ब्रह्मभट्ट थे । जालौन निवासी थे । ये कवि एवं चित्रकार थे ।

165. **शिवप्रसाद** - कविराज शिवप्रसाद के नाम से प्रख्यात थे । ये रामनागर निवासी थे । मथुरा प्रसाद के पुत्र थे इनके रचे ग्रंथो के नाम 1. लक्ष्मीश्वर भूषण, 2. छंद महोदधि, 3. ऋतु प्रकाश, 4. सियवरविलास, 5. हनुमन नाटक, 6. गोपीश्वर विनोद तथा 7. तुलसीकृत रामायण की टीका ।

166. **शिवराज** - ये शिवराज सागर नाम से प्रख्यात थे । इनका रचा प्रेम कलिका ग्रंथ प्रसिद्ध है ।

167. **शिवराम** - ये ब्राह्मण थे, सीतमढ़ी के रहनेवाले थे । इनका रचा तख्त विलास ग्रंथ प्रसिद्ध है । नायिका भेद भी इन्होंने लिखा है ।

168. **शिवराज 2** - ये मिश्र ब्राह्मण थे । लखनऊ की सूची में दर्ज है । इनका लिखा अनुराग लतिका ग्रंथ प्रसिद्ध है ।

169. **शिवराज** - शृंगार सुधाकर तथा पावस भूषण काव्य संग्रहों मैं इनकी कविता संग्रहीत है ।

170. **शिवराम** - ये नायक थे । भवैया वृत्ति से संलग्न । इन्हें भावकार (अदाकारा) अभिनेता कहा जाता था । षटगुन राग विलास नामक इनका ग्रंथ प्रसिद्ध है । ये नागर ग्रहस्थ थे । देशाद की रचना इन्होंने छगनलाल के नाम से की है । जो हमारे पास है ।

171. **शिवलाल** - ये डौडिया खैर वाले थे । दुबे ब्राह्मण थे ।

172. **शिवलाल** - काशीराज की सूची में इनका उल्लेख है । ये पाठक ब्राह्मण थे। अभिप्राय दीपिका इनका ग्रंथ है । दूसरा ग्रंथ मानमयंक है ।

173. **शिवशंकर** - हफीजुल्लाखॉ हजारा में आपकी कविताएँ संग्रहीत है ।

174. **शिवसहाय** - ये दीक्षित ब्राह्मण थे । कवि एवं चित्रकार थे ।

175. **शिवानन्द** - ये महात्मा थे लखनऊ वाली सूची में इनका उल्लेख है । शिवाराम सरोज ग्रंथ इनका रचा हुआ है ।

176. **शीतल** - ये लाल कवि के पिता थे, ये त्रिपाठी ब्राह्मण थे तथा टिकमापुर वाले नाम से प्रख्यात है ।

180. **शीतलराम** - ये बन्दीजन थे । इन्हें वौदी कहा जाता था ।

181. **शुकदेव** - ये मिश्र, ब्राह्मण थे । दौलतपुर जिला रायबरेली के रहने वाले थे।

182. **शुकदेव** - ये अंतरवेद वाले प्रख्यात कवि थे ।

183. **शुकदेव** - आध्यात्म्य प्रकाश ग्रंथ के रचयिता थे । ये ग्रंथ गो.गि. के संग्रह में प्राप्त है ।

184. **शुकदेव** - इनका रचा हुआ राग माला ग्रंथ गो.गि. संग्रह मं विद्यमान है ।

185. **शुभ** - इनकी कुछ कविताऍ सुधासार ग्रंथ में संग्रहीत है ।

186. **शुभकरण** - ये नवाब अनवरखाँ के आश्रित थे । अनवर चन्द्रिका नाम से इन्होंने बिहारी सतसई की टीका काव्यानुवाद में की है ।

187. **शुभसागर** - इनके विषय में कुछ स्पष्ट उल्लेख नही मिलता । किंतु दो समस्यापूर्ति के सवैया गोविन्द गिल्लाभाई के सग्रह में मिलते है । जो नीचे लिके है यथा :

सुन्दर जौवन नारी सुलच्छन, दच्छन भेद सुहासन चंगी ।

कंत अटारौ अंनग के कारन, वारन को नरिजा इक अंगी ।
बालक खीर पयोधर मागत, मानो हि तान दवे सुभसागर ।
ये विधि चीर फट्यौ नवरंगी ।।1।।
सुन्दर रूप सरूप सुनागरि, चातुरि रंगसी रूप लह्यौहै ।
कोकम करिनिकारिम चंद में, पंख मकध्वज मोह रह्यौ है ।
दंत कलीनि प्रक्षलित देखत, छाप कै चुंबन लाल गह्यौ है ।
देखि विचित्र कहै सुमसागर, यौ अधरा पर अंक भयौ है ।।2।।

188. **शेख** - ये आलम कवि की मासूका प्रसिद्ध रंगरेजिन थी । इसे आलम की उपस्त्री कहा गया है ।

189. **शेरसिंह** - मारवाड़ के जोधपुर का निवासी था । राठौड़ था । इनका रचा ग्रंथ है - रामकृष्णाय

190. **शेरसिंह** - कवि व चित्रकार नाम ग्रंथ में विवरण दिया है । इनका ग्रंथ है कर्णवास ।

191. **शेष** - नखशिख हजारा में इनकी कविता संलग्न है ।

192. **शोभ** - ये भरतपुर के महाराजा वदनसिंह के पुत्र सूर्यकमल के पुत्र नवलसिंहजी महाराज के नाम से नवलास चन्द्रोदय नामक ग्रंथ के रचयिता थे । यह ग्रंथ संवत् 1828 में शोभ ने रचा था । उदाहरण -

।। दोहा ।।

महाराज नवलेश कैं, सदा धर्म सौ प्रीति ।
कही शोभ सौं करि कृपा, बरनि देहु रसरीति ।।
रसग्रंथन में गाइयैं, रससिंगार रसराज ।
सो अवलंबित नायका, बरन्यौ वही समाज ।।
वसु तनु बसु विधि वत्स यह, श्रावन सुदि गुरुबार ।
सरबस सिद्धि त्रयोदशा, मयौ ग्रंथ अवतार ।।

193. **शोभन** - ये वृन्दावन के गोस्वामी थे । शिशिर सुषमा ग्रंथ द्रष्टव्य है ।

194. **शोभनाथ** - मनरंजन काव्य संकलन में इनकी कविता है । (पत्र १९३ में)

195. **श्याम** - इनका विवरण शिवसिंह सरोज में देखिए ।

196. श्याम - ये काठियावाड के जामनगर के निवासी थे । इनका पूरा नाम श्यामजी बारौट था (ये राव भाट थे) इन्होंने अन्योक्ति विलास नामक ग्रंथ रचकर प्रकाशित कराया था । इनका कविता का एक उदाहरण द्रष्टव्य है

शाखा के समूह कौं वढाइ कै बड़ाई पाइ, और समुदाय वरु ताकौ गर्व जार्‌यौ तैं ।
शीतल सघन छाया अचल अनूपम सौं, आतव सकल जन तन कौं निवार्‌यौ तैं ।
श्यामकवि कहैं सब भॉति सौ सुभग अति, महिमा महान जग पूरन पसार्‌यौ तैं ।
स्वच्छ कीरति में परत्यक्ष क्यों कलंकरुप, एरे वटवृक्ष यह तुच्छ फल धार्‌यौ तैं ।

197. स्याम - इनका पूरा नाम घनश्याम था । इनकी कविता उधौ गोपी शतक में है ।

198. स्यामनाथ - ये तिवारी ब्राह्मण थे । कवि व चित्रकार में विवरण ध्यातव्य है ।

199. स्यामलाल - ये जानी नाम से जाने जाते थे । भरतपुर उत्तर प्रदेश के निवासी थे ।

200. स्यामलाल - लखनऊ वाली सूची में इनका विवरण ध्यातव्य है । स्याम रामायण ग्रंथ इनका प्रसिद्ध है ।

201. श्यामलाल - अज्ञात

202. श्यामलाल - अज्ञात (कणि कौड़ा निवासी जहॉनाबाद वाले)

203. श्यामरी सखी - जोधपुर की देवी प्रसाद की सूची में विवरण है ।

204. स्यामलदासजी - ये उदयपुर के चारण थे ।

205. स्यामसखा - काशीराजकी सूची में देखिए

206. स्यासुन्दर - कवि (लखनऊ के सूची में) महेश्वर सुधाकर ग्रंथ देखो. पत्र 340-350

207. स्यामसुन्दर - पर कवि व चित्रकार मैं द्रष्टव्य ।

208. स्यामसुन्दर - विज्ञान मार्तण्ड में तथा भड़ौवा संग्रह में इनकी कविताएँ संग्रहीत है ।

209. स्यामसेवक - मिश्र, लखनऊकी सूची में वसंत बहार और ग्रीष्म गरम में

210. **श्रीकर** - अज्ञात

211. **श्री कवि** - अज्ञात (विजयानंद भी) षट ऋतु हजारा में कविताएँ मनोज मंजरी की तृतीय कलिका में भी ।

212. **श्रीधर** - अज्ञात प्राचीन

213. **श्रीधर** - राजा सुखसिंह चौहान थे

214. **श्रीधर** - मुरलीधर

215. **श्रीधर** - राजपूताने वाले

216. **श्रीधर** - लखनऊ की सूची में मनोविनोद में कविताएँ ।

217. **श्रीपति** - गुजरास्थ, औदीच्य ब्राह्मण, पिता पुरुषोत्तम, संवत् 1720 में सैयद हिम्मत खाँ के आश्रय में संस्कृत वैदिक ग्रंथ माधवनिदान का हिन्दी में काव्य अनुवाद किया । उसका नाम हिम्मत प्रकाश रखा । कवि कीर्ति कौमुदी में द्रष्टव्य पत्र 24 पर ।

218. **श्रीयति** - कवि व चित्रकार में द्वितीयखंड में पत्र 18 में ध्यातव्य

219. **श्रीपतिराय** - षटऋतु में इनकी कविताएँ सम्मिलित है ।

220. **श्री हरि सुकवि** - शिवकेश्वर (श्रीहरि सुकवि) सिंहरौली कोटा के विरह बत्तीसी ग्रंथ के कर्ता ।

221. **श्लेषचन्द** - पटियाला के कवि व चित्रकार में कविताएँ

222. **सखीसुख लाल** - ब्राह्मण नटवरवाले कविद्र के पिता

223. **संग्राम** - अज्ञात

224. **संग्रामसिंह** - अज्ञात

225. **संत** - रीमा के कविराज कवि नचिकेता में कविता है ।

226. **संतन** - वोडकी जिला फतैपुर ये जाति के ब्राह्मण थे ।

227. **संतन** - ब्राह्मण गाँवमउ, जिला कानपुर के कनपुरिया

228. **संतोषसिंह** - देखिए काशीराज की सूची में ये पटियाला के थे । वाल्मीकि रामायण ब्रजभाषा में लिखी ।

229. **संमत** - अज्ञात

230. **सदना** - भक्तिमल की टीका में देखो

231. **सदानन्द** - मनरंजन संग्रह में पत्र १८८ में इनकी कविता संग्रहीत है ।

232. **सदाशिव** - अज्ञात

233. **सनेही** - प्रसिद्ध ब्रजकवि

234. **सबलसिंह** - अज्ञात

235. **समरसिंह** - अज्ञात

236. **सरजू** - अज्ञात

237. **सरदारसिंह** - अज्ञात भक्तमाल की टीका में देखिए

238. **सरदार** - बनारस में रहे । मूल रामपुर वाले, इनके ग्रंथ शृंगार संग्रह, मानस रहस्य, रामरागरत्नाकर, साहित्य सरसी, रामकथा कल्पद्रुम, षटऋतु प्रकाश, कुंडलिया रामायण रामरसरंग, व्यंग्यविलास, वाल्मीकि रामायण का सुंदर कांड-10 का भाषानुवाद, सुखविलास, (रसिक प्रिया की टीका) काशीराज प्रकाशिका (कवि प्रिया की टीका) साहित्य लहरी, (सूरदास के पदों की टीका) ये सभी प्रकाशित हैं । इनके रचे नवीन ग्रंथ साहित्य सुधाकर, दूषन प्रकाश शब्दनिर्णय, हनुमत भूषण, रामभूषण, लीला रहस्य, राम जस ब्रजयंत्र, मनुस्मृति, तर्कसंग्रह भाषा, तर्कप्रकाश (न्यायमुक्तावली भाषा) विहारी की टीका सूरदास के फुटकर पदों की व्याख्या ।

239. **सरदारसिंह** - जोधपुर के देवीप्रसाद की सूची में इनका विवरण दिया है ।

240. **सरवेश** - अज्ञात

241. **सरस्वती** - सुधासार ग्रंथ में देखो हमारे पास संग्रह में है ।

242. **सर्वजीत** - काशीराजकी सूची में विष्णुपद लिखे है ।

243. **सरूपदासजी** - उदयपुर तरखा के दौलतगढ के देया अटक के चारण थे किंतु साधु होके अपना नाम सरूपदास के स्थान पर सरूपदास रखा । बहुत परिश्रम से विद्याभ्यास करके कुशल विद्वान हुए । उन्हें रतलाम के महाराजश्री बलवंतसिंहजी ने अच्छे कवि जानकर अपने निकट रखा क्योंकि महाराजा बलवंतसिंहजी स्वंय भी एक अच्छे कवि थे । सरूपदास कृत ग्रंथ पांडव यशेन्दु चन्द्रिका, वृत्ति, बोध, विज्ञान विलास, दृष्टांत, दीपक, हृदय नैनांजन, पाखंड, प्रदूषण, तर्कबोध आदि ।

244. **सविता** - अज्ञात

245. **सहचरी शरन** - विनय पत्रिका ग्रंथ के कर्ता

246. **सरजराय** - ये बनिया थे । पैदापुर (सीतापुर के निकट) के निवासी थे ।

247. **सदासहाब** - मनरंजन संग्रह में इनकी कविता संग्रहीत है ।

248. **सागर (प्राचीन)** - इनकी कविताएँ गोविंद गिल्लाभाई के संग्रह में है । एक कविता इस प्रकार है :-

कुबजा करी सो कहू उर में न करी लाज
राज पायौ ताते हम जोग की कहत हैं ।
उग्रसेन वसुदेव, देवकी की सकुचन
पंचन में बैठत कैं दुरे ही रहत हैं ।
जादौ हू की जात मै कंपात की चलत नाही
किधौं के बिदुर को पत लिए बहत हैं ।
सागर कहत उधौ जाने तुम निरंजन,
दासी की कुबात हरि दास ज्यौ हसत हैं ॥

249. **सागर** - जोधपुर के देवी प्रसाद की सूची में

250. **सागर** - काठियावाड़ के जदुवंशी जाडेजा । राजकोट स्वस्थान के ठाकुर श्री हरि रामनजी साहब, उन्हीं ने सर्वसाहित्य और सर्व विद्यामय एक आशिक मासूक का प्रवीणसागर नाम का वृहद गंथ बनाया है । उनकी 84 लहरे हैं ।

251. **सामत** - कवि गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में इनकी कविताएँ हैं । ये औरंगजेब के आश्रित थे । उदाहरण -

कारे कारे कज्जल से, बद्दल सजल भरे,
गाजत नगारे किधौं, लागत डरारे हैं ।
दामिनी कृपान बग पंचम निसान सजि,
बानन शिचान वृन्द, अति अनियारे हैं ।
पौन चतुरंग चढ्यौ विरह हरोस आगे,
नखतन सामंत कवि आंनि दलभारे हैं ।

कीजियै सहाय कान्ह छत्रि कौ धरम जानि,
अबला पै आनि दलमदन हकारे है ।।

252. **सार** - आप मारवाडी भाषा के कवि थे । अज्ञात

काव्य नमूना :-

वडा जिके छण जाण, बडा जे विषय विरत्ता ।
बड़ा जात आपणी, बडा ने पाहने रत्ता ।
बड़े खमे खदिया, बडा संभासण सूना ।
बरा बनेद थोड़ो की, पछे निरवाह का पूराण ।
बड़ा जिके मान नहूँ, थण खाण दान जाचण बड़ा ।
वय बडा, कवि सार कहे, श्रुणु बड़ा ते नर वडा ।

253. **सारंगधर** - ये बंदीजन कवि थे ।

254. **सारंगधर** - ये काठियावाड़ में जूनागढ़ के नागर ब्राह्मण थे ।

255. **साहब** - मनरंज संग्रह में पृष्ठ 162 में आपकी कविताएँ संकलित है।

256. **सिंघु** - इनकी कविताओँ के उदाहरण अलंकार आशय संग्रह मे है ।

257. **सिवानन्द** - प्रसिद्ध हास्य अश्लील (भड़ौव) संग्रह में आपकी रचनाएँ है । हास्य व्यंग्य एवं अश्लील प्रधान हैं ।

258. **सुकवि** - अज्ञात । किंतु इनके काव्योदाहरण गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में उपलब्ध है । यथा -

मदमय मस्त दरबार दरवाजे खरो,
जकर्‌यौ जंजीर ऐड़ तोरियें तराक दै ।
मारी ॲधियारी सारी मानों घन घटा कारी,
न्हान दरार छूटे सपन्यौ झराक दै ।
सुकवि समुद्र पै भसुंडि पाय तर दाबि,
खेंच बिंव दंत करि करक्यौ कराक दै ।
सबल कुबल पीड बस वसुधा में जाकौ,
जसुदा के लाल ताहि पटक्यौ पडाक दै ।।

259. सुखराम - ये ब्राह्मण थे चौहत्तरी, गोविन्द गिल्लाभाई के समय में विद्यमान थे ।

260. सुखानन्द - अज्ञात । इनके काव्योदाहरण गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में थे। यथा छबि कवित्त -

मोतिन की जोति रस सो संवारी साँचे भरि,
बाके परि बहु दिसु शक सुधि राशि सी ।
शित शित बाल प्रात, असित असित पात,
तास बास पास गहे सोना लीक कसी सी,
नैन में समाय जाय छूटे कुम्हलाय जाय,
फूँकि मैं फरकि जाय सुधारस असी सी ।
सुखानन्द प्यारी वृषभानु की कुमारी देखि,
और नारि नाहिं उरबसी उर वसी सी ।

261. सुखानन्द - ये लखनऊ के थे इनकी कविताएँ षट ऋतु वर्णन में संग्रहीत हैं ।

262. सुजान - प्रसिद्ध कवि (प्राचीन)

263. सुजान - वास्तविक नाम कुँवर फकीरचंदजी करौली वाले । इनके ग्रंथो के नाम 1. सुजान विलास, 2. विरह पचीसी (अरिल्ल में), 3. बारह मासा, 4. षट ऋतु । कविता में इन्होंने अपनी छाप सुजान रखी थी । ये सभी ग्रंथ गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में हैं ।

264. सुजान - नाम बलराम पांडे । गोविन्द गिल्लाभाई के समय विद्यमान थे, वलियाकार ताबे हल्दी निवासी, उसने सुजान सरोज नामक ग्रंथ लिखा था । कवि चरित्र में कवित्त है ।

265. सुन्दर - कवि बन्दीजन थे । असनी वाले थे ।

266. सुंदरदास - काठियावाड़ के निवासी थे । आप मनोहर स्वामी के चचेरे भाई थे । आपके हरियश सिंधु अवतार चरित्र तथा विविध रस माला नामक ग्रंथ है ।

267. सुबुधि - अज्ञात

268. सुभद्रादेवी - मुरादाबाद निवासिनी प्रसिद्ध मंचीय कवियित्री, झांसी की रानी की रचयिता, (कवि व चित्रकार में इनकी कविताएँ सम्पादित हैं)

MEHTA LIBRARY
University of Baroda

269. **सुमति गोपाल** - जोधपुर निवासी थे । देवीप्रसाद की सूची में इनका उल्लेख है ।

270. **सुमति प्रवीन** - इनकी कविताएँ हफीफुल्ला खाँ हजारा में प्रकाशित हैं ।

271. **सुमेर** - अज्ञात

272. **सुमरेश** - मनोज मंजरी में आपकी कविताएँ संकलित है । देखिए मनोज मंजरी चौबी कली ।

273. **सुमेरसिंह** - अज्ञात

274. **सुमेर हरि** - अज्ञात

275. **सुलतान** - आपने काव्यप्रकाश नामक एक छोटा-सा ग्रंथ रचा था । वह गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में है ।

276. **सुलतान** - अज्ञात

277. **सुलतान पठान** - रसिक मंजरी में आपकी कविताएँ संग्रहीत है ।

278. **सुलतान सिंह** - सुर तरंग (रागमाला) ग्रंथ आपका रचा हुआ है ।

279. **सुवेश** - भड़ौआ संग्रह में आपकी कविताएँ संग्रहीत हैं । प्रथम खंड में देखिए ।

280. **सुशील** - काव्य रत्नाकर ग्रंथ जो बम्बई में छपा था उसमें आपकी कविताएँ संग्रहीत है ।

281. **सूर** - भक्तमाल सटीक में इनकी कविताएँ देखी जा सकती है ।

282. **सूरकिशोर** - अज्ञात

283. **सूरज** - शृंगार सुधाकर में आपकी कविताएँ सम्पादित हैं । देखिए पत्रसंख्या-332

284. **सूरदास** - सूरसागर के रचयिता प्रसिद्ध महाकवि सूरदास

285. **सूरदास** - सूरदास मदन मोहन नाम से देखिए भक्तमाल में ।

286. **सूरतमिश्र** - ये आगरा निवासी थे इनके निम्नांकित ग्रंथ है - 1. साहित्य परिचय, 2. रसरत्न, 3. अलंकार माला, 4. काव्यसिद्धान्त, 5. नखशिख, 6. अमर चन्द्रिका (बिहारी की टीका), 7. जोत वर प्रकाश (रसिक प्रिया की टीका) 8. भक्ति विनोद, 9. कवि

प्रिया की टीका, 10. वेताल पचीसी, 11. रस रत्नाकर, 12. रसग्राहक चन्द्रिका

287. सूर्यमल - आप बूँदी राजस्थान के निवासी थे । जाति के चारण थे, आपने वंसयादकर नामक ग्रंथ रचा था ।

288. सूर्यलाल - आप गोस्वामी थे । फतहगढ निवासी थे । (कवि व चित्रकार में देखो)

289. सूरसिंहजी - काठियावाड़ निवासी थे । पालीतदान के ठाकुरसाब थे । संवत् 1842 में आप स्वर्गवासी हुए । हिन्दी भाषा में आपने कविता की है । देखिए हिन्दी भाषा फुटकर संग्रह ।

290. सेवक राम - अज्ञात

291. सेवादास - आप पंजाबी साधु थे । आपने कुन्डलिया छन्द में एक ग्रंथ रचा है । इसमें 35 अंग (अध्याय) हैं ।

292. सोम - अज्ञात किंतु इनकी कविताएँ गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में है । एक उदाहरण ध्यातव्य हैं -

आनत की ओप बनि देखे चुपरेट मुख,
ऐसी तौ रंभा सुनी, मनौ सुखसाई हैं ।
बेसर बिराजे देह नील पट नीकौ लागै,
लेहगा की लाल लखि लहर सी आई है ।
सैन कहै नागरी के नैननि मै बसै विस,
रसना सौ रसाल अमृत सराई है ।
तीखे ताकि मारे जाहि, विहँसि जिवावै ताहि,
मारिवे जिवाइवे कौ विधिना बनाई है ।

293. सोमनाथ -- (पृष्ठ 91 पर) देखो पत्र 14 में शशिनाथ आप मथुरा के चौबे थे । संस्कृत में महापंडित थे । आपके रचे ग्रंथ - रसपियूष निधि, व्रजेन्द्र विनोद (भागवत दशमस्कंध काव्यानुवाद), सुजान विलास (सिंहासन बत्तीसी), रामकलाधर (रामायण), ध्रुव विनोद (ध्रुव चरित्र), शशिनाथ विनोद (महादेवजी का विवाह), रास पञ्चाध्यायी, आप कविता में अपना उपनाम शशिनाथ भी रखते थे । इसलिए शशिनाथ को ही सोमनाथ जानना ।

294. स्कंधगिरी - आपका रसमोदक ग्रंथ प्रसिद्ध है । यह गोविन्द गिल्लाभाई के

संग्रह में था ।

295. **हठी** - राधा सुधाशतक के रचयिता । यह ग्रंथ गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में था ।

296. **हठी** - अलंकार आशय ग्रंथ में आपकी कविताएँ संग्रहीत है ।

297. **हनूमान** - आप कवि बंदीजन थे । बनारस के निवासी थे ।

298. **हनूमान** - विजय मुक्तावली नामक ग्रंथ के कर्ता (भारत सार मास) भई इन्हे कहा जाता है ।

299. **हरदेवजी** - आपने छन्दपयोनिधि ग्रंथ रचा था ।

300. **हरिदास** - काठियावाड में जोधावारा में खदड़पुर ग्राम के साधु थे । संवत् 1883 में आप स्वर्गवासी हुए । आपने हरिविलास ग्रंथ रचा था । वह गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में था।

301. **हनुमान** - लखनऊ निवासी, नखशिख ग्रंथकर्ता

302. **हम्मीर** - हम्मीर पिंगल ग्रंथ आपका रचा है । आप काठियावाड़ के चारण थे । इनका ग्रंथ गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में था ।

304. **हम्मीर** - काठियावाड़ में । रावल जाति में हुए । हरियश नाम माला ग्रंथ रचा है ।

305. **हरख** - काठियावाड़ के सिंहौर के निवासी थे । हरर्वजी, मेहता जाति के थे । कपोल वैष्णव थे । आगे हर्षजी मेहता ना से भी ज्ञापन है ।

॥ नीति के कवित्त ॥

हंसिवौ न हाँसी अति रचिवौ न फाँसी कित,
बसिवौ न बास जित चोर छल घात है ।
धातु कौ धमनो, वर्षा कौ कामनौ कभि
अधरात जमनौ न सुख जो चहात है ।
नारिन की नौकरी जु सौवत सुनारन की,
मूरख की म्होवतन हरष सुहात है ।
काढियै न कोप कहु बौलियै विचार बैन,
बैन की कटारी मांस सैन मारे जात हैं ।

॥ समस्यापूर्ति कवित्त ॥

सुधा की जो संपत्ति छिनार धरी ओदन में,
मूसिकै मरीचिका दई है दसनादि कौं ।
जस रूप जोन्ह पै अन्हाई अंगलार लई,
पाइ पद पुनरभव मंडल मरियाद कौं ।
पोषन सकति लई वाचक विमोचन में,
भयौ गुनहीन हर्ष फॉदि के सवाद कौं,
वृषभानु नंदिनी विगेयो वारनिधिसुत,
चंद से कलंक सिर फरन फरियाद कौं ।

(हर्षजी मेहता और हरष दोनों एक हैं)

305. **हरषू** - बम्बई से प्रकाशित काव्य रत्नाकर में इनकी कविताएँ समाविष्ट हैं ।

306. **हरदयाल** - (लखनऊ की सूची में) साहक्तावली । भर्तुहरि शतक, वैराग्य शतक भाषा, दो ग्रंथ रचे ।

307. **हरदयाल** - अज्ञात

308. **हरदास** - मनोज मंजरी, दूतीकली तथा माधव विलास में इनकी कविताएँ संकलित है ।

309. **हरदेव** - जाति के वैश्य थे, आपका रचा हुआ ग्रंथ छन्द पयोनिधि पिंगल है ।

310. **हरदेव** - अज्ञात

311. **हरदेश** - साहित्य सिन्धु तथा काव्यसंग्रह पचांग में आपकी कविताएँ संग्रहीत है ।

312. **हरि** - कवि व चित्रकार संकलन में आपकी कविताएँ हैं ।

313. **हरिचरनदास** - आपके रचे हुए ग्रंथ 1. कविवल्लभ, 2. सभाप्रकाश, 3. द्युतिभूषण, 4. अनेकार्थ, 5. करणाभरण, 6. चमत्कार चन्द्रिका, 7. भाषाभूषण की टीका, 8. तुरकी प्रकाश, 9. रामायणसार, 10. काव्यचन्द्रिका, 11. रसविचार । इनका विशेष विवरण मिश्र बन्धु विनोद में देखा जा सकता है ।

314. **हरिऔध** - प्रसिद्ध हिन्दी के आधुनिक कवि । प्रियप्रवास के रचयिता ।

315. **हरिकर्ण** - अज्ञात, किंतु इनकी कविता के नमूने मिलते हैं यथा -

सजि कैं सिंगार मान मंदिर में ठाडी भई,
शशि कौ उदोत, मानौ कदम लतान में ।
तारे-से झलमलात आभूषन प्यारी जू के,
बीजुरी चमकै भरि भादौ की घटान में ।
संग की सहेली सब, कुंजन मे ठाड़ी भई,
लाल को निहार काशमीरी बंगलान में ।
कहै हरिकर्ण यों नवेली नायकान बीच,
आज अलबेली कौ मिजाज आसमान में ॥

316. **हरिचन्द** - आप प्रसिद्ध हिन्दी के कवि थे । बाबू बनारसी गोपालचन्द्र के पुत्र थे । आपको भारतेन्दु बाबू भी कहते थे ।

317. **हरिचन्द** - बरसाने वाले

318. **हरिचन्द** - आप बन्दीजन थे । चरखारी के रहनेवाले थे ।

319. **हरिजन** - आप ललितपुर के निवासी थे । आपके पुत्र सरदार कवि प्रख्यात हुए हैं ।

320. **हरिजू** - हफीजुल्लाखाँ हजारा में आपकी कविता समाविष्ट है ।

321. **हरितोष** - आपको तोषहरि भी कहा जाता था ।

322. **हरिदास** - अज्ञात

323. **हरिदास** - अज्ञात

324. **हरिदास** - संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान कविराज नाम से प्रसिद्ध बूँदी निवासी । कवि और चित्रकार में कविता संग्रहीत है ।

325. **हरिदास** - बाँदावाले । आप बंदीजन थे ।

326. **हरिदास** - टटी सम्प्रदाय वाले स्वामी हरिदास वृन्दावन वासी ।

327. **हरिदास** - काठियावाड़ में गोधावारा में सदरपुर गॉव के साधु । ये संवत् 1883 में स्वर्गवासी हुए । इन्होंने हरिविलास ग्रंथ रचा था । गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में यह

ग्रंथ है ।

328. **हरिदास** - आप राजपूताने के साधु थे । इनके रचे ग्रंथ इस प्रकार - 1. ब्रह्मस्तुति (मोतीदास छन्दों में), 2. मूलमंत्रयोग (दोहा में), 3. नाममाला (दोहा में), 4. नाम निरूपण, 5. निरंजन लीला, 6. साधुपाल (दोहा में), 7. निराकार वंदना, 8. निरपख योग, 9. प्राणपत्र योग, 10. उत्पत्ति अहेतु योग, 11. वीररस वैराग्य, 12. मनचरि योग, 13. मनहठयोग, 14. मनप्रसंग, 15. व्याहतो योग, 16. मोहरमल योग, 17. हंसप्रबोध, 18. बड़ी तिथि योग, 19. चौपदी, 20. सुरनसमाधि, 21. निवृत्ति प्रवृत्ति योग, 22. मायाछन्द योग, 23. फुटकर पद, 24. छप्पन, 25. पीछे कुंडलिया छन्द हैं, 26. पच्चीस अंग, 27. चौदह अंग का एक ग्रंथ, 28. पीछे साखी 314 पचास अंग का एक ग्रंथ है ।

329. **हरीप्रसाद** - मथुरा निवासी चौबे गंगापति मिश्र के पुत्र थे । ग्रंथ भाषातिलक 17 के शैफा में ग्रंथ बनाया । ताके 16 विरंचन (अध्यायः) किए हैं । कविता में नाम गंगापति ही रखा है । यह ग्रंथ गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में है । ग्रंथ बहुत अच्छा है । ग्रंथ भाषा तिलक।

330. **हरिलाल** - कृतित्व 1. ब्रजविहार, 2. ब्रजविनोद

331. **हरखू** - बम्बई मे छपा । काव्य रत्नाकर में इनकी कवित है (पृष्ठ 29)

331. **हरदयाल** - लखनऊ वाली सूची में । सारकरवली मर्तहरिशतक तथा वैराग्य शतक के भाषा में दो ग्रंथ किए ।

332. **हरदयाल** - अज्ञात

333. **हरदास** - मनोज मंजरी में कविता है, हलीकली । वैराग्या शतक तथा माधवविलास मैं भी है ।

334. **हरदेव वैश्य** - छंदपयोनिधि पिंगल इनका ग्रथ है ।

335. **हरि** - कवि व चित्रकार में इनकी कविता सम्पादित है ।

336. **हरिचरनदास** - हरिचरनदास कृत ग्रंथ नाम - 1. कवि वल्लभ, 2. समाप्रकाश, 3. युति भूषण, 4. अनेकार्थ, 5. करूणाभूषण, 6. भागवत प्रकाश, 7. चमत्कार चन्द्रिका, 8. भाषाभूषम की टीका, 9. मोहन लीला, 10. तुरकी प्रकाश, 11. रामायण सार, 12. काव्य चन्द्रिका, 13. रसविचार । (विशेष सूचनार्थ देखें मिश्र बंधु विनोद)

337. **हरिऔध** - निजामाबाद वाले अयोध्यासिंह हरिऔध विद्यमान है । 1. प्रिय प्रवास, 2. रजकलश

338. **हरिकर्ण** - इनके विषय में हम कुछ नहीं जानते । इनकी कविता हमारे संग्रह में है । वह देखिए -

॥ कवित्त ॥

साजि कै सिंगार मान मंदिर में ठाडी मई,
शशि को उदोत मानो, कदम लतान में ।
तारे-से झलमलात आभूषण प्यारी जू के,
बीजुरी चमकै भरि भादौ की घटान में ।
संग की सहेली सब कुंजन में भाजि गई,
लाल को बिहार काशमीरी बँगलान में ।
कहैं हरिकर्ण यौं नवली नायिकान बीच,
आज अलबेली कौं मिजाज आरसमान में ।

339. **हरिचंद** - बाबू बनारसी गोपालचन्द्र जी के सुपुत्र भारतेन्दु बाबू विद्यमान प्रख्यात हिन्दी ब्रजभाषा के कवि व साहित्यकार ।

340. **हरिचंद** - बरसाने वाले ।

341. **हरिदेव** - ये वणिक थे । वृन्दावनवासी थे ।

342. **हरिनाथ** - महापात्र बंदीजन असनी वाले ।

343. **हरिनंददास** - इनकी कविता कवि व चित्रकार में है ।

344. **हरिप्रसाद** - अज्ञात

345. **हरिब्रह्म** - अज्ञात

346. **हरिभक्त** - भक्तमाल की टीका में देखिए ।

347. **हरिलाल** - अज्ञात

348. **हरिलाल** - मथुरा के चौबे । हरिलाल कृत ग्रंथ - ब्रजबिहार, ब्रजविनोद

349. **हरिसिंह** - कच्छ में । खान कोटरा जाम के जाड़ेजा ठाकुररामदास के

शिष्य । इन्होंने ज्ञानकटोरी नामक ग्रंथ रचा है । यह ग्रंथ हमारे पास है ।

350. **हरिसिंहजी** - काठियावाड में भावनगर दरबार के मायात और बरल गॉव के ठाकुर साहब । संवत् 1915 में जन्म संवत् 1558 के पोष सुदी 3 शुक्रवार के दिन काशी में स्वर्गवास । ये महाराजकुमार राजकोट किंग्स कॉलेज में अँग्रेजी गुजराती पढ़े । फिर संगीत में गाना बजाना सीखा । रागरागिनीकी पहिचान थी । काव्य कला का विधिवत ज्ञान प्राप्त किया। चित्रकला में रविवर्मा के समान चित्रांकन । धर्मशास्त्र वेद विद्या में पारंगत । सभा में धर्मचर्चा ही प्रमुख । भावनगर में प्रथम थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना इन्होंने की और आप उसके प्रेसीडेन्ट बने । वर्तमान काल में काठियावाड़ में ये सर्वाधिक सक्षम गुणगाहक थे । क्योंकि इन्ही के पास कवि कोविद और गवैये आते थे । आप कविकोविदों को चाहने वाले रावल श्री हरिसिंजी जैसे कोई नहीं हुए । सभी कलाकारों का यहाँ स्वागंत होता था । इन्होंने श्रीमद भगवतगीता का पद्य में भाषांतर किया था । तथा संगीत शकुन्तला नाटक ये दो ग्रंथ रचे थे । तथा फुटकर काव्य कवित्त, सवैये, पद और समस्यापूर्ति आदि बहुत रचे थे । इनका संग्रह हमारे पास है । क्योंकि ये महाशय मेरे (गोविन्द गिल्लाभाई के) इष्टदेव थे । और इन्हीं के साथ मेरे ज्येष्ठ पुत्र जयसिंह कासी मे स्वर्गवासी हुए हैं ।

351. **हरिवंश** - अज्ञात

352. **हरिवंश गुसाई** - गोविन्दानन्द घन ग्रंथ में आपकी कविताएं संग्रहीत है ।

353. **हवी** - आपकी कविताएँ गोविन्दानन्द घन में संग्रहीत है ।

354. **हरिसहाय गिरि** - आप मिरजापुर के थे । रामाश्वमेघ आपका ग्रंथ है ।

355. **हरिसुमेर** - सुमेरसिंह । इनकी कविता रसिक मंजरी में है ।

356. **हरिसूरी** - जोधपुर वाले । देवीप्रसाद जी की सूची में ।

357. **हरिहरप्रसाद** - (लखनऊ सूची) बाबू हरप्रसाद सीताराम शृंगार प्रदीप ग्रंथ

358. **हर्षद राय** - अहमदाबाद निवासी । विद्यामान है । जन्म सं. 1810 में । ग्रंथ- 1. षडनागर संवाद शतक, 2. नागर बत्तीसी, 3. बैद्यजननी, 4. राजनीति, 5. रासप्रबंध, 6. हर्षद सुमासित, 7. रंग बत्तीसी, 8. भैरव प्रताप बावनी, 9. अंगदविष्टी, 10. शूर पंचासिका, 11. तत्वदर्शन, 12. आत्मबोध रत्नावलि, 13. बेदान्त । आदि ।

359. **हर्षराम** - इनकी कविता काव्य रत्नाकर में संग्रहीत है ।

360. **हर्षजी मेहता** - वल्लभी सम्प्रदाय के मानने वाले कपोल जाति के वैष्णव

दामजी मेहता के पुत्र । भावनगर के महाराज (प्रथम सिंहोर पीछे भावनगर) ठाकुर श्री बखतसिंहजी उर्फ आताभाई के पास कामदार थे । इनका जन्म संवत् 1822 मे हुआ था और संवत् 1893 मे वैकुन्ठवासी हुए । ये महाशय अच्छे कवि थे । उनके रचे ये ग्रंथ हैं - 1. भक्तमुकुट मणि (चौरासी वैष्णव की कथा कविता में की है), 2. काशी प्रकाश (काशी की यात्रा), 3. द्वारका प्रवास (द्वारका की यात्रा), 4. महोत्सव ग्रंथ (श्रीनाथजी में सं. 1878 के वर्ष में उत्सव भया उसका वर्णन), 5. वरदायक स्तोत्र (इसमें इनके गुरुश्री विठ्ठलनाथजी की स्तुति है), 6. नित्यपद अंदाज से 100, 7. उत्सव के पद अनुमान से100 8. दशमस्कंध पूर्वाद्ध के छप्पय 228, 9. श्रीकृष्णचरणार्विद के कवित्त 169, 10. फुटकर कवित्त अदांज से 200 (इनकी कविता देख पत्र 28 में) ।

361. हंस - भक्तमाल की टीका में उल्लेख है ।

362. हंसराज - काशीराम की सूची में । महाभारत भाषा-1, सनेहसागर-2.

363. हाफिज - हफीजुल्लाखाँ । बन्नापुर निवासी । कविता में नाम हाफिज ।

364. हामिद - इनकी कविताएँ विज्ञान मार्तण्ड में है ।

365. हितध्रुव - ध्रुव किंवा हितध्रुव । हितहरिवंश सम्प्रदाय के शिष्य महाभक्तराज हुए हैं । वृन्दावन में रहते थे । वह संवत् 1681 तक वर्तमान थे । बहुत से ग्रंथ रचे है । इनके 50 ग्रंथों का उल्लेख मिलता है कुछ प्रकाशित भी है ।

1. वृहद वामपुराण, 2. सिद्धान्त विचार, 3. भक्तमाया वली, 4. रंगबिहार विनोदलीला, 5. ब्रजलीला, 6. भजनशत, 7. मनशिक्षा, 8. वृन्दावन शत, 9. आनन्दाष्टक, 10. भजनाष्टक, 11. भजन कुंडलिका, 12. अनुगलना, 13. प्रेमलता, 14. रहस्यलता, 15. आनंदलात, 16. आनंद दशा विनोद, 17. ख्याल हुलास, 18. प्रीति चौबनी, 19. युगल ध्यान, 20. प्रेमावली, 21. प्रियाजी की नामावली, 22. रसमुक्तावली, 23. सभा शृंगार, 24. दानलीला, 25. रसानंदलीला, 26. रसहीरावली, 27. रस रत्नावली, 28. रतिमंजरी, 29. रहस्यमंजरी, 30. नेहमंजरी, 31. सुखमंजरी, 32. नृत्यविलास, 33. मानलीला, 34. बनविहार लीला, 35. रसविहार लीला, 36. मनशृंगार, 37. हितशृंगार, 38. रंगहुलास, 40. शृंगार स्तंभ ।

375. हिम्मतखाँ - साहित्यसिन्धु ग्रंथ में इनकी कविताएं है । उदाहरण :-

॥ अंग सुगंध कवित्त ॥

प्यारी कौपरस, पौन पौन कियौ जा वन में,
ता वन के नन्दन कौ चन्दन द्रिछात है ।
केतकी, चमेली, चम्पा, रामवेल चेरी याकी,
भनज महल के पनारे तर्ग रहे पानि,
अलिकुल आनिजहाँ, सवै मंडरात है ।
ताकौ बास पाप कै दुरैगे कैसे हिम्मत खाँ,
जाकी तन वास ते सुवासवासी जात है ।

376. **हीराचन्द** - काठियावाड में मोरबी स्वस्थान के दशा श्री माली बनियाँ, वर्तमान काल भए । उनके ग्रंथ के नाम 1. पिंगला दर्शन, 2. हीरा शृंगार ।

377. **हीरालाल** - ये करौली के सनाढ्य ब्राह्मण थे । इसी ने रूपनगर के राजा सरदारसिंह (नागरी दासजी के पुत्र) की प्रशंसा से एक सरदार सूचना नामक ग्रंथ रचा था।

378. **हीरासिंह** - कवि व चित्रकार संग्रह में इनका विवरण प्रकाशित है ।

379. **हाकिम** - नाथूराम वैश्य हरबुजागंज में विद्यमान है ।

380. **हुलास** - अज्ञात

381. **हुसैन** - इनके विषय में विवरण प्राप्य नहीं है । किंतु गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में इनकी कुछ कविताएँ हैं । उदाहरण द्रष्टव्य है -

॥ सवैया ॥

राति अध्यारी सिधारी हुसैन,
बिहारी मिलाप कौं संग न साथी ।
कीच के चंपति सर्प लग्यौ अरु
सर्प घसीटत एक पगा थी ।
जोर जंजीर जर्‌यौ जकसौं मनौ,
छूटि चल्यौ मनमन्थ कौ हाथी ।

यह सवैया अधुराही प्राप्य हुआ है ।

382. **हेम** - इनकी कविताएँ गोविन्द गिल्लाभाई के संग्रह में मिलती हैं । एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

॥ ईश्वर स्तुति कवित्त ॥

सिद्धि अरु साधनकौ संतन महंतन कौं,
जब लगि जीवै तबलौ जीविकाहि चाहिये ।
भूख लगै, प्यास लगै, शीत लगै, धाम लगे
मोपे तौ मिटै नाहि मिटि तौ मिटाइयै ।
देहु सो तो देहु ना ता यहै तन लेहु तुम,
जिन दुख देहु चित अंत न दुलाइयै ।
हरि कौ भिखारी हेम, और का पै मागै भीख,
यह भीख मागौ जो पै भीख न मंगाइयै ।

383. हेमहुति - अज्ञात

384. हेमहंस - अज्ञात

385. हृदैराम - कासीराज की सूची में इनका उल्लेख है । ये कृष्णदास के पुत्र थे। जहाँगीर काल के थे ये । इन्होंने हनूमानाष्टक भाषा ग्रंथ रचना की थी । इनकी कविताएं, शृंगार संग्रह, सुधासार, मनरंजन संग्रहों में हैं ।

386. क्षत्रधारी - काशीराज की सूची में इनका उल्लेख मिलता है । इन्होंने वाल्मीकी रामायण का पद्यानुवाद किया है ।

387. क्षेमकरण - हफीजुल्लाखाँ हजारा में इनके कवित्त संग्रहीत हैं । षटऋतु हजारा में भी इनके कवित्त है ।

388. क्षेमराज - काशीराम की सूची में इनकी कविताएँ सम्पादित है । फतेह प्रकाश इनके काव्यग्रंथ सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

389. ज्ञानदेव - भक्तमाल टीका में इनका विवरण दिया है ।

390. ज्ञानरंजन - जोधपुर वाली देवी प्रसाद की सूची में इनका उल्लेख है ।

391. ज्ञानी - इनके कवित्त प्राप्त होते है । एक सवैया छन्द देखिए -

॥ कर्म ॥

कामिनी कर्त चल्यौ परदेस,
फिरी करनाटक, लाहौर आयौ ।

बूँदी सौ कोटा बड़ी गुजरात,
फिरी मुलतान में उज्जैन धायौ ।
आतुरवाद धने मन इच्छत,
ज्हाज चढी नर वंदर जायौ ।
ज्ञानि कहै करि लक्ष उपाय,
भाग बिना कर कौडी न पायौ ।

इति सम्पूर्ण ।

ग्रन्थ 209 में पत्रा 36 से बढारा (अधिक के) अन्य कवियों के ब्यौरे दिए गए हैं। जो इस प्रकार हैं -

1. गोपालकवि-वृन्दावन निवासी-जाति के राव (भाट) - खड्गराय उर्फ प्रवीन कवि के पुत्र ।

गोपाल कवि के ग्रंथ :

1.	दूषण विलास	2.	भूषण विलास	3.	ध्वनि विलास
4.	रस सागर	5.	भाव विलास	6.	दंपत्ति विलास
7.	पंचाध्याई	8.	दूसरी पंचाध्याई .	9.	काव्य प्रश्नोत्तरी
10.	षटऋतु	11.	चीर हरण लीला	12.	दानलीला
13.	मानलीला	14.	वनभोजनलीला	15.	वेणुगीत
16.	दशम कवित्त	17.	अकलनामा	18.	नखशिख
19.	गुरु कौमुदी	20.	जमुनाष्टक	21.	गंगाष्टक
22.	ब्रजयात्रा	23.	वृन्दा विपिन विलास	24.	मान पचीसी

अष्टादश ग्रन्थ में एक कवित्त में इनकी छाप मिलती है, तथा इनकी रचनाओं का उल्लेख है उदाहरण :

दंपत्ति विलास रससागर द्वमय पंच-
ध्याई, काव्य प्रश्नतर षटऋतु मीने हैं ।
चीर हरन लीला, दान लीला मानलीन वन-
भोजन की लीला बेसी वेणुगीत चीने हैं ।
दसम कवित्त अक्लनामा नकशिख गुरु-

कौमुदी, जमुना गंग, अष्ट का नवीने हैं ।
ब्रजयात्रा औ वृन्दाविपिन विलास आदिक
अष्टादस ग्रन्थ ये गुपाल कवि कीन्हे हैं ।

इसमें केवल 18 ग्रन्थों की ही रूपरेखा है किन्तु गोविन्द गिल्लाभाई ने इनके 24 ग्रंथों का उल्लेख किया है ।

रस सागर ग्रंथ का रचनाकाल एक दोहे में दिया है -

अठारह सौ सत्तासिया, जेठवदी रवि तीज ।
कवि गुपाल बरनन कियौ, रससागर कौ बीज ॥

इसके अनुसार इनका मुख्य ग्रन्थ रससागर अठारह सौ सत्ताईस में जेठवदी तीज रविवार को लिखा गया था ।

2. गोस्वामी श्री चन्दलालजी : ये वृन्दावासी थे । इन्हें दयानिधि गुरु के नाम से जाना जाता था, इनके विषय में अधिक विवरण प्राप्त नहीं होता ।

इनके रचे हुए 5 ग्रंथों का उल्लेख मिलता है -

1. भावना पचीसी 2. समय पचीसी
3. भागवत पचीसी 4. अभिलाष बत्तीसी
5. वृन्दावन माला

इनमें प्रथम चार ग्रंथ छोटे हैं । पचीसी पच्चीस छन्द का और बत्तीसी बत्तीस छन्द का ग्रंथ है ।

वृन्दावन माला इनका मुख्य और वृहद् ग्रन्थ है ।

इनके अन्य ग्रन्थ भी रहे होंगे किन्तु उनका विवरण प्राप्त नहीं होता ।

ये वृन्दावन के गोस्वामी थे । पुष्टिमार्गीय गोस्वामियों से उनका कोई संबंध न था ।

3. मोती कवि ; ये धीर सिंह राजा के आश्रित रहे होंगे क्योंकि उन्होंने धीर सिंह राजा के नाम से 'धीर रस सागर' ग्रन्थ की रचना की थी ।

यह भी हो सकता है कि ये स्वयं ही धीर सिंह राजा हों और कवि भी रहे हों तथा इन्होंने स्वयं अपने नाम से ही धीर रस सागर को रचा हो । इस विषय में विशेष सूचना उपलब्ध नहीं होती । गोविन्द गिल्लाभाई ने उन्हें मोतीराम कवि ही माना है ।

इनकी कविता के उदाहरण :

॥ सोरठा ॥

सब ग्रामन सिर मौर, गगवानो सुभ स्थान है ।
बसे विप्र तो ठौर, अपने कर्म निरत सदा ॥
विप्रन मध्य धनेश, भोजराज तिहि नाम है ।
प्रगट्यौ मनौ द्विजेस, धीर सिंह ताकौ तनय ॥
मोती कवि सो तो सेन, कीन्हौ हेत अपार ।
ताकी आपस पाय कै, रच्यौ ग्रंथ रस सार ॥
अष्टादश शत वर्ष जिमि, बीस रु साल बख्यानिं ।
पौषवदी तिथि त्र्योदसी, शनिवासर उर अनि ॥

4. दीप सिंह जी : दीपसिंह जाति के (धावई) गूजर थे (मारवाड़) । ये करौली के निवासी थे । संवत् 1936 में स्वर्गवासी हुए ।

इनके रचे ग्रंथों की सूची इस प्रकार है ।

1. दीप सागर 2. जगन्नाथ ध्यांन मंजरी
3. करुणा पचीसी 4. ध्यान संचासिका 5. ज्ञान शतक

इनके अन्य ग्रन्थों का उल्लेख प्राप्त नहीं होता ।

इनके विषय अन्य सूचना भी उपलब्ध नहीं होती ।

5. कुँवर धीर सिंह जी : कुंवर धीर सिंह को उपनाम 'सुजान' कवि के नाम से भी जाना जाता था । इनके ग्रन्थ हैं -

1. सुजान विलास
2. विरह पचीसी

सुजान विलास का रचना काल ज्ञापित करता हुआ दोहा -

संवत् दिगदेवी मुजा, दो दस दो उरधार ।
भादैर सुदि शिव नैन तिथि, भुवसवतार विचार ॥

इनके विषय में अन्यत्र कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती । हिन्दी साहित्य के इतिहास में जिन सुजान कवि का उल्लेख है वे इससे सर्वथा पृथक् हैं । गोविन्द गिल्लाभाई ने इनके

केवल दो ही ग्रंथों का उल्लेख किया है ।

6. हरिदास : भक्त शिरोमणि हरिदास जी रामचन्द्र के परम भक्त अमृतसर निवासी क्षत्रीय वंशीय गुलाबसिंह जी के पुत्र तथा रामकुमारी माता के बेटे थे ।

संवत् 1848 के कार्तिक महीने में आपका जन्म हुआ था । आपको महाराजा रणजीत सिंह ने आमंत्रण दिया था किन्तु ये वहाँ नहीं गए । इनके रचे 32 ग्रंथ का उल्लेख मिलता है किंतु जो ग्रंथ प्राप्त हैं उनकी सूची इस प्रकार है -

रामरहस्य	प्रश्नोत्तरी	राम ललाम
सार संगीत	मानक चन्द्र चन्द्रिका	दशरथी दोहावली
जमक दमक दोहावली	गुढ़ागूढ़ार्थ दोहावली	एकादसस्कंध भागवत
कौशलेश कवितावली	गुरु कीर्ति कवितावली	कुसुम क्यारी
दसमस्कंध कवितावली	महीम्न कवितावली	नानक नवक
रास पंचाध्यायी	कवित्त कादम्बिनी	रघुनाथ सहस्रनाम
ब्रजयात्रा	पद रत्नावली	

इनके विषय मे अन्य विवरण नहीं मिलता । ये रामाश्रयी कवि थे ।

7. जीवराम : ये चिटानवे के महंत थे । श्री जीवराम उर्फ श्रीयुगल प्रिया इनकी छाप थी । इन्होंने रसिक प्रकाश भक्तमाला ग्रंथ छप्पय छन्द में रचा है । इनका अन्य विवरण प्राप्त नहीं है । गोविन्द गिल्लाभाई ने इनकी एक ही रचना रसिक प्रकाश भक्तमाल का उल्लेख किया है ।

8. वसुदेवजी : पंडित वसुदेवजी का कोई भी परिचय प्राप्त नहीं होता । इन्होंने जीवराम कृत रसिक प्रकाश भक्तमाल पर कविता में ही टीका रची है । गोविन्द गिल्लाभाई ने इनका उल्लेख इसी संदर्भ में किया है ।

9. कवि पद्माकर : पद्माकर ने ग्वालियर के महाराजा दौलतसिंह जी के नाम से 'आलिजाप्रकाश' नामक ग्रन्थ रचा था । यह आलिजा प्रकाश गोविंद गिल्लाभाई के संग्रह में उपलब्ध था । अनुशीलन से ज्ञात होता है कि यह ग्रंथ 'जगत विनोद' की नकल है । मात्र प्रथम आदि अंत के पाँच-पाँच दोहा अलग दिए हैं । स्पष्टीकरण के लिए वह अंश ध्यातव्य हैं -

ग्रंथारम्भ-

नृपकुलवर्णन

॥ दोहा ॥

महाराज माधव तमय, नृपमनि दौलत राय ।
साहिब सिन्ध्या कुल कलश, दया दान दरियाव ॥
सोवत सेज छनिन्द की, तब तै सुचित गुविंद ।
जग ज्यावन जब ते भयौ, दौलत राव नरिन्द ॥
दौलत आलीजांह नृप, हुकम कियौ नहि नेहु ।
आली जांह प्रकाश यह, सरस ग्रंथ करि देहु ॥
दौलत आली जाह कौं, हुकम पाय सविलास ।
कवि पद्माकर करत हैं, आली जाह प्रकास ॥

ग्रंथ के अन्त में लिखा है -

महाराज माधव तनय, नृपमनि दौलत राय ।
साहिब सिन्ध्या कुल कलश, दया दान दरियाव ॥
सोवत सेज छनिन्द की, तब तै सुचित गुविंद ।
जग ज्यावन जब ते भयौ, दौलत राव नरिन्द ॥
दौलत आली जाह कौं, सहि अति हियै हुलास ।
कवि पद्माकर करत हैं, आली जाह प्रकार ॥

'जगत विनोद' में और 'आलीजाह प्रकाश' में फेर है, अन्तर है । वह ऊपर उद्धृत कर दिया है ।

इसके अतिरिक्त बाकी सब कुछ एक जैसा ही है ।

बन्ध 209 में 'ब' विभाग में जिन कवियों के विवरण दिए हैं, ध्यातव्य हैं :

1. **अकबर :** (गुजराती लिपि में हिन्दी)

अकबर शाह का जीवन चरित्र जग प्रख्यात है । विवरण निजीहालत में ।

अकबर नामा में

आईने अकबरी में

तवकात अकबरी में

तवारीख अबदुल्ला दरबदादनी में

आदि जो जो ग्रंथ फारसी में भाषा में हैं और उनका अंग्रेजी में अनुवाद भी हो गया है । जैसे हिन्दी, बंगाली, मराठी और गुजराती आदिक अनेक देसी भाषाओं में भी हिन्द के बादशाहों की तवारीख बनाई है । मदरसों में बालकों को पढ़ाई जाती है । जिसे सब लोग जानते हैं । इसलिए यहां कुछ जरूरत नहीं है । किन्तु यह महाप्रतापी बादशाह हिन्दी भाषा के कवि थे, इसलिए हम इनको कवि श्रेणी में गिन के इनका कुछ हाल कवि तरीके से लिखना चाहते हैं ।

दिल्ली का राजा छूटने के बाद हुमायुं की बेगम हानिदा के पेट से अकबर शाह का जन्म हुआ । सिन्ध में अमरकोट गाँव में आपका जन्म हुआ था । ता. 14 अक्टूबर सन् 1542 के दिन थे हुए । फिर माँ बाप के साथ साथ काबुल गए । वहाँ से सन् 1555 के जुलाई मास में आकर फिर दूसरी बार दिल्ली का राजा हुमायु और अकबर ने प्राप्त किया । इसके बाद ता. 24 जनवरी सन् 1556 के दिन हुमायुं बादशाह जन्नतनीसीन हुए । उस समय अकबर तेरह वर्ष चार महीने के थे । उन्हीं ने श्री मुहम्मद जलालुद्दीन अकबर शाह नाम धारण करके दिल्ली की गद्दी पर बैठे । और अपने पिता के विश्वासपात्र वजीर बेहरामखान, को खानखानान की पदवी देकर मुख्य वजीर बना दिया । और अपना ईलाही नाम से संवत् चलाया ।

अकबर शाह ने अनेक देशों में अच्छे अच्छे पंडितों और मौलवियों को बुलाकर अपना आश्रय दिया और समयानुसार उनसे धर्मचर्चा करते रहे । इलाही वर्ष दसवें में सन् 1575 में राजमंदिर के बाग में एक बड़ा इबादत खाना बनाया जिसमें बैठने के लिए मार भाग (एवान) दिया था । एक खण्ड में बड़े बड़े सैयदों के बैठने के लिए तो दूसरे में पंडितों (उपला) के लिए । तीसरा खण्ड शेख लोगों के लिए और चौथा खण्ड कवि लोगों के लिए बनाया था । उसमें हर शुक्रवार की रात में आकर बादशाह बैठते थे और बार बार हर खण्ड में जाकर सबसे मुलाकात करते थे । और सबको यथायोग्य उपहार आदि भी देते थे ।

बादशाह की धर्म पर आस्था जान कर देस परदेस से बहुत से साधु-सन्यासी और फकीर आदि भी आते थे, उन सभी को खाने पीने और रहने के लिए दो अन्न क्षेत्र बनाए गए थे । हिन्दु साधुओं के लिए जो क्षेत्र था उसका नाम 'धर्मपुर' रखा गया था, उसमें शिवरात्रि पर बहुत से जो भी महात्मा आते थे उन सभी के साथ बादशाह बहुत स्नेह से बात करते थे। और अनेक धर्मो का, धर्म पुस्तकों का भाषान्तर भी फारसी में करवाते थे । इनमें महाभारत, रामायण, गीता, उपनिषद आदि कितने ही ग्रन्थ हिन्दू धर्म के भी थे ।

सभी धर्मों का रहस्य जानके आपने एक नया धर्म चलाया था । उसका नाम 'तोहिद

इलाही' रखा गया था । इसलिए कितने ही धर्माध मुसलमान उनसे बहुत जलते थे । और बादशाह की निन्दा भी करते थे ।

बादशाह को अपने धर्म पर अनास्था और नए धर्म को चलाने के कारण उनके निज शेख-फैजी और अबुल फाजल जो बड़े विद्वान थे उनके सहयोग से हुआ होगा । क्योंकि ये दोनों भाई सूफी (वेदान्ती) मत के महा पंडित थे ।

अकबर की सभा के सभी सभासद महा पंडित और कवि थे उनमें शेखफैजी, अबुल फाजल, राजा बीरबल, राजा मानसिंह, राजा टोडरमल, तानसेन, पं. जगन्नाथ (पंडित राज), गंग, बेहराम खान के पुत्र खानखांना अब्दुल रहीम, अब्दुल कादर बदायुंमी आदि मुख्य थे । ये अकबर के नवरत्नों में गिने जाते थे ।

अकबर के दरबार में बहुत से कवि आते जाते रहते थे उनमें कितने ही प्रसिद्ध थे उनमें गंग-नरहर आदि मुख्य थे । उस समय हिन्दी भाषा में कौन-कौन कवि कविता करते थे उनके नाम निम्नलिखित सवैया में उल्लिखित हैं -

पुरबी प्रसिद्ध धुरंदर ब्रह्म, सुधारस अमृत अमृतवानी ।
गोकुल, गोप, गुपाल गनेस, गुनी गुनसागर गंग जुज्ञानी ॥
जोध जगन्नाज में जगदीस, जगामग जैत जगन्त हे जानी ।
कोर अकबर सैन कथी, इतने मिलि कै कविता जु बखानी ॥

यह सिवाय सूरदासजी, उनके पिता बाबा सायदासजी, गुसाई तुलसीदास जी, केशवदासजी, होलराय, करन, आलम आदि अनेक कवि उस समय में थे, अकबर शाह अपने कविमंडल में बैठ कर निरंतर काव्य चरचा करते थे और बहुत बार काव्य पूर्ति के लिए आप स्वयं एक पद बनाकर अन्य कवियों का पूरा करने के लिए देते थे । जैसे कि-(समस्या पूर्ति)

- शंभु कौं पूजन नागिन आई ॥
- डूबत हस्ति हथेरी के पानी ॥
- कहि कारन हालत डोल में पानी ॥
- लाला - दर - सीता - दाग - जु - दरद ॥

इत्यादि अनेक समस्यापूर्तियाँ अकबर के समय की प्रख्यात हैं । और उनकी अच्छे चमत्कार के साथ गंग - बीरबल आदि कवि पूर्तिकार करते थे । और अकबर शाह स्वयं भी अच्छी कविता करते थे । इनका रचा कोई ग्रन्थ तो नहीं है किन्तु फुटकर कवित्त कितने ही

मिलते हैं, इनमें-से थोडे से यहाँ नमूने के तौर पर लिखे हैं -

यह सिवाय 'अकबर' के नाम से किंवा आज्ञा से फारसी और संस्कृत में कितने ही ग्रंथ बने हैं, उनमें संस्कृत भाषा में रचे ग्रंथों के नाम इस प्रकार हैं :

1. फारसी प्रकाश (व्याकरण) बिहारी कृष्णा पास कृत ।
2. फारसी प्रकाश (कोष) कृष्णदास कृत ।
3. शृंगार दर्पण - नायिका भेद, अंलंकार शृंगार रस में ।
4. प्राकृत समसेतु मूल कालिदास कृत, उसकी टीका-अकबर कृत-पत्र 276

2. अजान कवि : (अजान कवि का जन्म संवत् 1919 में और संवत् 1962 में स्वर्गवास हुआ था । अर्थात अगस्त 1905 में)

यह महाशय शाहबाद जिले के डुमराव राजधानी के रहने वाले थे और जाति के ब्राह्मण थे ।

इनका असली नाम नकछेदीराम तिवारी था । किंतु कविता में अपना उपनाम 'अजान' रखा था । यही नाम प्रख्यात हुआ ।

नकछेदीराम ने बहुत से फुटकर कवित्त बनाए हैं । किंतु अपनी कविता बनाने का चरचा छोड़कर प्राचीन कवियों की कविताओं का संग्रह करके छपवाने में विशेष ध्यान देते थे। इन्होंने अच्छे-अच्छे ग्रंथ संग्रह करके छपवाए हैं उनके नाम इस प्रकार हैं :

मनोज मंजरी	भड़ौआ संग्रह	वीरोल्लास
विज्ञान मार्तण्ड	सरस चन्द्रिका	दोरी गुलाल
कवि कीर्ति कला निधि	लच्छीराम कवि की जीवन चरित्र	
पद्माकर कवि का जीवन चरित्र		

और व्यंग्य हजारा तथा अजान संग्रह । इन दो ग्रंथों का संग्रह कर रहे थे, वह पूरा हुआ कि नहीं मालूम नहीं हो सका । सं. 1963 के श्रावण मास में उनका अकस्मात निधन हो गया । हिन्दी के कवियों में बहुत सी हानि पहुंची है क्योंकि इन महाशय का विचार भाषा कवियों की कविता का उद्धार करना था और कवि कीर्ति कलानिधि नामक एक बड़ा कवि चरित्र लिख रहे थे । वे इसे 16 भाग में पूरा करना चाहते थे वह जो पूरा हो गया होता तो बहुत से कवियों का उद्धार हो गया होता ।

नकछेदी का आखिरी समय का लेख पद्माकर जी का जीवन चरित्र है । वह छपजाय

तो अच्छी बात है और उनके संग्रहीत ग्रन्थों में

1. मनोज मंजरी तथा

2. भड़ौआ संग्रह बहुत अद्‌भुतचमत्कारी ग्रन्थ सभी के देखने योग्य है । कवि ने अपने निवास स्थान के विषय में भडौआ संग्रह में प्रथम खण्ड में ही लिखा है ।

॥ दोहा ॥

सहाबाद के मध्य इक राजधानी हुंमराव ।
कवि अजान तिहिं मेरहत, जपत सदा हरि नाम ॥
काहू ते विगार हैं, काहू ते न बनाव ।
मोते सब समभाय हैं, हो सब ते समभाव ॥
चंद्र वेद ग्रह के दिनी, संवत विक्रमभूप ।
पौष पूर्णिमा वौं भयौ, संग्रह ग्रन्थ अनूप ॥

(संवत - 1941)

3. अनन्त कवि : संवत् 1692 में ये वर्तमान थे । इनका रचा एक ग्रन्थ 'अनन्तानन्त' मिलता है । अन्य विवरण प्राप्त नहीं होता ।

4. अनन्य कवि : विश्व सिंह सरोज में 4 अनन्य कवि हैं । उनमें नं. 15 वाले अनन्य कवि का संवत् 1790 लिखा है । दूसरे नं. 30 को अक्षर अनन्य नाम से अभिहित किया है । इनका संवत् 1710 है । तीसरे नं. 31 वाले का संवत नहीं लिखा परन्तु दुर्गापाठ भाषा बनाने वाला लिखा है । और चौथे नं. 36 वाले को अनन्यदास कहा है । चकंदवा जिला गौड़ा के रहने वाले, पृथ्वी राज चौहान के पास सं. 1225 में थे । उन्होंने अनन्य योग नामक ग्रंथ की रचना कर दी ।

जोधपुर निवासी मुंशी देवीप्रसाद जी ने अनन्यदास को कायस्थ और बीकानेर का निवासी बताया है । क्योंकि बीकानेर के महाराजा रामसिंह जी सं. 1618 से लेकर 1664 तक जीवति थे । इनके छोटे भाई पृथ्वीराज जी थे, ये अकबर बादशाह की सभा के सभासद थे, 'खुम्भणी बेला की महाग्रंथ जिन्होंने रचा था ।

यह ग्रन्थ पृथ्वीराज के लिए अनन्य दास ने रचा था । दूसरा नाम अनन्य प्रकास था ।

गोविन्द गिल्लाबी के अनुसार अनन्य दास जी के 3 ग्रंथ प्राप्त होते हैं :

1. अनन्य योग

2. विज्ञान कोश तथा

3. सुन्दरी चरित्र

(दुर्ग पाठ भाषा में है ।)

इन ग्रन्थों में पुष्पिका नहीं है तथा अनन्य कवि के विषय में भी कुछ विवरण नहीं मिलता ।

पृथ्वीराज नाम के अनेक राजा हुए उनमें से एक का निश्चित रूप में निर्णय नहीं किया जा सकता ।

गोविन्द गिल्लाभाई के अनुसार जयपुर के महाराजा चन्द्रसेन के पुत्र पृथ्वीराज सं. 1559 से 1584 तक गद्दी पर विराजमान थे, वही इनके आशयदाता रहे होंगे ।

ये साधूमहात्मा कृष्णदास दयाहारी के शिष्य थे इनके समय के साधु और जोगियों का बोलबाला था, जादूटोना की अनेक किंवदंती इनके नाम के साथ जुड़ी हैं । ये ही अनन्य दो के आश्रयदाता थे ।

इनके तीनों ग्रंथों के उदाहरण द्दष्टव्य हैं -

राजभोग का मंगलाचरण प्रारंभ :

॥ सवैया ॥

आतम ज्ञान सु ज्ञान यहै,
परमातम ध्यान सु ध्यान सुरेश्वर ॥
वेद विधान विधान वहै,
सत पात्रहिं दान सुदान धनेश्वर ।
अन्तर भक्ति सु भक्ति कहै,
गति अंतर की परखे परमेश्वर ॥
वेद प्रधान 'अनन्य मनै यह,
भेद सुनो पृथ्वीचंद नरेश्वर ॥

(राजयोग के अन्त की काव्य पंक्तियाँ)

॥ पद्धरी छन्द ॥

जो राजयोग यह सधै राज ।
तो मन वंछित सब होय काज ।
अरु कर्मा लिप्ता कबहु न होत ।
जग जीवन मुक्त सदा उदोत ।
सुखमार्ग यह पृथ्वीचंद राज ।
या सम आन-न-मन इलाज ।
यह ज्ञान भेद अरु वेद साखि ।
'अक्षर अनन्य' सिद्धान्त भाषि ॥

॥ दोहा ॥

राजयोग सिद्धान्त यह जान राय पृथ्वीचन्द ।
या सम नहीं मत दूसरौ, खोज शास्त्र बहु छंद ॥
जो चाहौ संसार सुख, अरु सिद्धान्त प्रकाश ।
तौ साधौ सरवज्ञ यह, राजयोग इतिहास ॥

॥ इति राजभाग सम्पूर्णम् ॥

अथ विज्ञान वोध के ग्रन्थ के अन्त की कविता - यथा -

॥ कविता ॥

विद्यानाम पठन कौ नाहीं, नहिं पोथी न पुराना ॥
जैसे को तैसे मन समुझौ, यहै विदित विज्ञाना ॥
अक्षर अनन्य कहत यह गाथा, यह गुरु गुरु अर्चा ॥
पृथ्वीचन्द नृप राज जानियैं, यह सम और न चर्चा ॥

॥ इति विज्ञान बोध समाप्त ॥

अथ सुन्दरी चरित्र दुर्गा पाठ की कविता यथा -

॥ मंगला चरन दोहा ॥

सुन्दर पद गुरु नाथ के, सुन्दर गुरु उपदेस ।
सुन्दर चरित भवानि के, सुन्दर सुरथ नरेस ॥

टीका : इस दोहे में 'सुन्दर परमुहनाथ के' पद से ज्ञात होता है कि - अनन्य जी नाथ बापा के शिष्य रहे होंगे क्योंकि नाथ को गुरु माना है ।

॥ कवित्त ॥

बढयौ महिषासुर प्रचंड बलवंड महा,
जाकि छाक मुनि कै विधाता धक परयौ है ।
डाहत गुरु कोटन गिरावत गिरिभगक सों,
खुदत खुरनि धरा शेष सक पम्यौ है ।
सातों द्वीप दपट समुद्र दहि चाभाकर,
सुर शशि तारने को पलक परम्यौ है ।
'अक्षर अनन्त' जाहि आवता सुनन कान,
देवन समेत मागि द्वन्द्र अकपम्यौ है ॥3॥

॥ सवैया ॥

लहि आचस धाय रिसायसुरी, गलि गर्जिपरी भक रुंडनि में ।
जित ही तित दैयत आनि अरै, तिन ही तिन मारहिं मुंडनि में ।
'मन' अक्षर व्योम महा रिपु छै रति, पैरति शोणित कुंडनि में ।
बल के हरि ज्यों दस केलि सै, अरि कुंजनि पुंज प्रति मुंडनि में ।

॥ कवित्त ॥

धरकि धरकि धिर धरन धरनि धर,
कारिब कमठ कमलिनि दस चचकति ।
त्रात नगर ठग भगत जगत गिरि,
भगत नयन मच शूर सब बचकवि ।
'अक्षर' अमर अकबक सकपक परि,
धक पक विधि शेष वधुवज बचकति ।
चलति जु प्रबल निशुंभ सु पूथल दल,
अल थल विकल सकल महि मचकति ॥

॥ कवित्त ॥

वृहद विष्णु कद्र, इन्द्र चन्द्रादिक देख देह,
कीट हू पतंज मंग अंग इति थाप है ।
सबके सरीर यक माई समान जानि,
सबही में आतमा समान पुनि आप है ।
देखियै प्रत्यक्ष भिन्न करणी 'अनन्य' भवै,
सके सिर मौर एक कीट पद चाप है ।
जैसी जहां भक्ति तैसी तहाँ शक्ति दिधि,
बान ये हैं श्री भवानीजू की भक्ति को प्रताप हैं ।

॥ ग्रन्थ समाप्ति दोहा ॥

श्री भवानी सुभ लक्षनी, परम सुन्दरी जानि ।
ताकौ सुन्दर चरितय यह, 'अक्षर अनन्य' बखानि ।

<u>युगल अनन्य कवि</u> :

शृंगार को काव्यकर्ता देखो - कवि वचन सुधर पत्र 19 में

5. औध - (अयोध्याप्रसाद) : अयोध्याप्रसाद हरिऔध के संदर्भ में प्राथमिक जानकारी दी गई है । यथा - इनका असली नाम अयोध्याप्रसाद बाजपेयी था । सांतनपुर जिला राजबरेली के रहने वाले थे । संस्कृत और भाषा के पण्डित । इन्होंने वन्दानन्द पिंगल /साहित्य सुधार सागर, रामकवितावली आदि ग्रंथ रचे हैं । ये अयोध्या में बाबा रघुनाथ दास जी महंत के पास तथा चंदापुर में राजा जगमोहन सिंह जी के पास रहा करते थे ।

6. अहमद : इनके शृंगार के दोहे प्रसिद्ध हैं । ये संवत 1670 में वर्तमान थे । विशेष विवरण ज्ञात नहीं है ।

7. अदित राय : काठियावाढ़ जूनागढ़ में विप्रव्यास जाति के ब्राह्मण थे । बसनजी के यहाँ कहर राय तथा अदितराम दो पुत्र हुए थे । आदित के छोटे लड़के थे । बचपन से ही गायन विद्या में रुचि थी । गायन व वादन विद्या में प्रवीण हो गए । जामनगर निवासी गोस्वामी ब्रजनाथ जी तथा जामनगर के महाराज श्री दयाजी ने इनकी कला से प्रसन्न होकर इन्हें अपने पास रखने का आग्रह किया । इन्होंने इनकी आजीविका का वन्दोबस्त भी कर

दिया, संवत् 1907 में जामनगर में आप वर्तमान थे । इनके केशव लाल और लक्ष्मीदास नाम के दो बेटे हुए तथा तीन पुत्रियाँ हुई । संवत् 1936 में आप स्वर्गस्थ ।

आदित्यरामजी संगीत में प्रसिद्ध हुए हैं । जब बृजनाथ गोस्वामी जो सितार लेकर गाने बैठते थे तब आदित्यराय जी मृदंग पर उनकी संगत करते थे ।

काव्यकला मे भी आप प्रवीण थे । संगीत विषय आपने 'संगीताहित्य' नामक ग्रंथ रचा था । कविता में कहीं कहीं आपने अपना नाम 'आदित्य राम' और कहीं कहीं 'रविराय' रखा है । यह ग्रंथ उनके पुत्र लक्ष्मीदान ने प्रकाशित कराया था ।

भूमिका में उन्होंने कवि के विषय में विवरण लिखा है ।

8. आलम : अकबर काल में आलम हुए हैं । ये प्रथम सनाढ्य ब्राह्मण थे, एक मुसलमान रंगरेजिन के इश्क में फंसकर मुसलमान हो गए । गोविन्द गिल्लाभाई ने आलम और रंगरेजिन के इश्क की कहानी लिखी है । वह कवित्त जो 3 चरण में आलम ने तथा 1 चरण रंगरेजिन ने लिखा था सि प्रकार है -

आलम कृत अंश

प्रेमरगमगे जगमगे जागे जमिनी के,
जोवन की जोति जगि जोर उमगत हैं ।
मदन के माते मतवारे ऐसे घूंमत हैं,
झूमत हैं झुकि झुकि झांपि उघरत हैं ।
कहैं कवि 'आलम' निकाईइन नैननि की,
पांखुरी पदम पै भंवर थिरकत हैं ।

रंगरेजिन कृत अंश :-

चाहत हैं उड़ि बैठ कौ देखत मयंक मुख,
जानत हैं रैनि ताते ताहि में रहत हैं ।

आलम कवि कृत कामकंदला माधवानल नामक आशिक-मासूक का एक ग्रन्थ गोविन्द गिल्लाभाई को प्राप्त हुआ है ।

9. इंदु कवि : इनका पूरा नाम बालमुकुन्द लाल जी था और ये मथुरा के रहने वाले थे । 'इन्दु' इनका उपनाम था । विशेष विवरण ज्ञात नहीं हो सका है ।

10. उद्धव : काठियावाड़ इलाके के झालावाड़ प्रांत मे लखतर गाँव के रहने वाले थे । झालावाड़ी सम्प्रदाय के उच्च ब्राह्मण हैं । इनका नाम औघड़भाई तथा पिता का नाम - फूलजीरावल है । कविता में 'उद्धव' उपनाम रखा है । इनका जन्म संवत 1897 वैषाख सुदी - 4 शुक्रवार को हुआ था । भाषा पर इनका अधिकार है । आप लखतर परवार के पास रहते हैं । लखतर दरबार की करुणा सिंह जी नाम से एक 'कर्णजी ज्ञानमणि' नामक ग्रंथ रचा है। यह ग्रंथ 1993 में पूरा हुआ था । भाट चरणों की अलोचना करते हुए उन्होंने एक छोटा सा ग्रंथ 'कुकवि कुणए' रचा है ।

11. उदय माण : उदयमाण मारवाड़ में जोधपुर के पास मथनियां गांव के रहने वाले थे । ये जाति के चारण थे । ये गोविन्द गिल्लाभाई के समय मे वर्तमान थे ।

12. उम्मरदान : मारवाड़ जोधपुर के पास रहने वाले हैं । ये भी जाति के चारण थे । गोविन्द गिल्लाभाई के समय में वर्तमान थे । काठियावाड़ के छोटे माटे राजघरानों में आया जाया करते थे । कविता में अपना उपनाम 'मीर' रखा था । संवत् 1960 तक आप विद्यमान थे ।

13. कान्ह : कान्ह नाम के 5 कवि हुए हैं । ये कान्ह गुजरात के रांधनपुर गाँव के निवासी थे । ये एकाश्री ब्राह्मण थे । नीति के विविध-विषयों पर कुंडलियाँ लिखी हैं । दीनदरवेश के समय में ये वर्तमान थे । क्योंकि सिद्धपुर के मेले में दीनदरवेश और कान्ह में आपने सामने कुंडलियाँ पर लेने की प्रतिस्पर्धा हुई थीं ।

14. कल्याण : कल्याण नाम के बहुत से कवि हो गए हैं । गोविन्द गिल्लाभाई के पास जो कल्याण कृत कवित्त मिलते हैं । उनके कर्ता के विषय में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता ।

गोविन्द गिल्लाभाई के अनुमान के अनुसार - ये डाकोर के साधु कल्याण दास ही थे । और डाकोर वाले कल्याणदास संवत 1851 में विद्यमान थे । ये महाप्रतापी साधु थे । इनका आखाड़ा डाकोर में आज भी प्रख्यात हैं ।

छन्द भास्कर तथा रसचन्द आदि ग्रन्थ इनके रचे हुए हैं ।

15. करनेश (कर्ण सिंह जी) : काठियावाढ़ हलाके के झालावाड़ प्रान्त में लखतर स्थान के राजासाहब राणा भी करणसिंह जी सूर्यवंशी झाला राजपूत थे ।

कर्णजक्त दर्पण नामक ग्रन्थ की इन्होंने रचना की थी ।

इनके अतिरिक्त इस ग्रन्थ में जिन कवियों के संक्षिप्त विवरण हैं उनके नामोल्लेख निम्न प्रकार से हैं -

16. कमाल	17. कर्णप्रिय	18. करसनदास
19. कालीदास	20. किसन	21. कुबार
22. किसोर	23. कुन्दन	24. केसवदास
25. केसरी सिंह	26. केसवदास	27. केवलराय
28. कृष्णा	29. कृष्णादास	30. कृष्णलाल
31. गद्य	32. गदाधर	33. गोप
34. गिरधर	35. गिरधर लाल	36. गिरधर
37. गिरधारी	38. गुनदेव	39. गुमान
40. गुलाब	41. गोविन्द गिल्लाभाई	42. गंग
43. गंगदास	44. चौरामल	45. ग्वाल
46. घासीराम	47. चन्द दरदाई	48. चन्द्रकला
49. छितिवाल	50. जमाल	51. जनकर्ण
52. जसुराय	53. जसवंत	54. जीवाराम
55. युगल किसोर	56. जेष्ठलाल	57. जेष्टाराम
58. जेमल	59. टोडरमल	60. ठाकुर
61. तानसेन	62. गो. तुलसीदास जी	63. तोष

ये प्रयाग (इलाहबाद) के सिगरौर गांव के रहने वाले थे, ब्राह्मण इनके पिता का नाम चतुर्भुज शुक्ल था, 'सुधानिधि' नामक नवरस पूर्ण एक ग्रन्थ रचा था, यह ग्रंथ सं. 1791 में रचा गया था -

64. त्रिकम

65. दयाराम

66. ददुदयाल

67. दीहल

68. दीनानाथ

69. दीनदरवेश

दीनतरवेश कर विवरण विस्तार में दिया है यथा-

ये गुजरात के पालनपुर राज्य के ताबा के गांव के रहने वाले थे । जाति के कहार थे ।

अंग्रेज सरकार की सेना में नौकर थे । इसलिए जहाँ सेना जाती थी वहीं इनको जाना पड़ता था । किसी लड़ाई में इनका एक हाथ कट गया था, नौकरी से निकाल दिए गए, तब बड़नगर में वाणनाथ नामक बाबा के पास दीक्षा लेकर साधू हो गए और नाम 'दीनदरवेश' रख लिया ।

इन्होंने भजन, झूलण और कुंडलियाँ अधिक लिखी हैं । कुंडलियों में इन्हें प्रसिद्धि मिली । इन्होंने 'दीनपरकाश' और 'भजन भड़ाका' दो ग्रंथ रचे थे । ये मायावर थे । इनमें शीघ्र कुंडलियां बनाने की अदभुत शक्ति थी ।

कवियों से शास्त्रार्थ इनके बहुत हुए थे । गुजरात के संत कवियों में इनका उल्लेख था ।

ये उपदेश भी कविता में देते थे । जिन्हें सुनने विद्वानलोग एकत्र हुआ करते थे।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने सम्पादन कार्य में अदभुत तथा महत्वपूर्ण साहित्य सामग्री का संकलन एवं संयोजन किया था । वह जितने कुशल कवि एवं साहित्यकार थे उतने ही सक्षम संयोजक एवं संपादक भी थे ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. स्वसम्पादित शिवराज शतक के अंतिम पृष्ठ पर सं. 1972 में सरस्वती प्रेम भावनगर से प्रकाशित
2. स्वसम्पादित गोविन्द ग्रन्थमाला प्रथम भाग, पृष्ठ 443 सं. 1967 राजकोट से प्रकाशित
3. स्मरण पोथी पृष्ठ - 7, 8, 21, 23 तथा 24 में
4. गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा - पृष्ठ 109
5. ये सभी ग्रंथ महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय की बडौदा की प्राच्य विद्यापीठ शाखा में उपलब्ध हैं ।
6. हिन्दी साहित्य कोष पृष्ठ 595.
7. गोविन्द गिल्ला भाई की डायरी (प्राच्य विद्यापीठ-बड़ौदा वंध 101)
8. मिश्र बन्धु, विनोद भाग-1, पृ.-6
9. राय-खिताब है उनकौं, रायराय कहत हैं जैसे हिन्दी में राजराज (पद है) कहत हैं ।
10. प्राच्य विद्यापीठ, हिन्दी पाण्डुलिपि विभाग, म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा - बंध संख्या -105
11. वही बंध संख्या - 107
12. वही बंध संख्या - 108
13. वही
14. वही
15. वही
16. वही, बंध संख्या - 109
17. वही
18. वही
19. वही
20. वही
21. वही, बंध संख्या 110
22. वही, बंध संख्या 111

23. वही, बंध संख्या 121

24. वही, बंध संख्या 122

25. वही, बंध संख्या 125

26. वही, बंध संख्या 124

27. वही, बंध संख्या 126

28. वही, बंध संख्या 128

29. वही, बंध संख्या 129

30. वही, बंध संख्या 130

31. वही, बंध संख्या 131

32. वही, बंध संख्या 132

33. वही, बंध संख्या 133

34. वही, बंध संख्या 134

35. वही, बंध संख्या 135

36. वही, बंध संख्या 154

37. वही, बंध संख्या 137

38. वही, बंध संख्या 138

39. वही, बंध संख्या 140

40. वही, बंध संख्या 142

41. मिश्र बंधु विनोद भाग - I, पृ. 163-66

    भाग - II, पृ. 465, भाग-III, पृ. 1412/1258/1226 तथा 1268

42. प्राच्य विद्या मंदिर, हिन्दी पाण्डुलिपि विभाग, म.स.विश्वविद्यालय, बड़ौदा, बंध संख्या - 143

43. वही, बंध संख्या 144

44. वही, बंध संख्या 145

45. वही, बंध संख्या 146

46. वही, बंध संख्या 147

47. वही, बंध संख्या 148

48. वही, बंध संख्या 149

49. वही, बंध संख्या 150

50. वही, बंध संख्या 151

51. वही, बंध संख्या 152

52. वही, बंध संख्या 152

53. वही, बंध संख्या 153

54. वही, बंध संख्या 154

55. वही, बंध संख्या 172

56. वही, बंध संख्या 173

57. वही, बंध संख्या 206

58. वही, बंध संख्या 201

59. वही, बंध संख्या 202

60. वही, बंध संख्या 203

61. वही, बंध संख्या 260

62. वही, बंध संख्या 208